FORESIGHT

नाम	: SAMPLE_Pù
पुरुष / स्त्री	: पुरुष
जन्म स्थान : देश	: India
प्रांत / झेत्र	: /
शहर	: DELHI
जन्म दिनांक	: जनवरी १, २०००
जन्म दिन (कैलेन्डर / ज्योतिषीय)	: शनिवार / शुक्रवार
जन्म समय	: ५:०:० बजे
विक्रम संवत (चैत्रीय / कार्तिकीय)	: २०५६ / २०५६
बंगाली सन	: १४०६
कोलम वर्ष	: ११७५
फुलशी वर्ष	: 0
ऋतु	: शिशिर
चाँद्र मास (चैत्रीय)	: पौष
चाँद्र मास (कार्तिकीय)	: मार्गशीर्ष
चाँद्र मास (बंगाली सन)	: पौष
चाँद्र मास (कोलम वर्ष)	: धनु
चाँद्र मास (फुलशी वर्ष)	: —
पक्ष	: कृष्ण
तिथी (सूर्योदय समय / जन्म समय)	: ९ / १0
जन्म समय (घटी पल में)	: ५४—घटी २२—पल ४५—विपल
रेखांश / अक्षांश	: ७७:१३ पूर्व / २८:३९ उत्तर
क्षैत्रीय समय	: + ५:३0:0 बजे
स्थानिक समय संस्कार	: — 0:२१:८ बजे
युद्ध / ग्रीष्म समय संस्कार	: 0:0:0 बजे
स्थानिक जन्म समय	: ४:३८:५२ बजे
सूर्योदय / सूर्यास्त (स्टैन्डर्ड समय में)	: ७:१४:५४ बजे / १७:३५:१५ बजे
काल समीकरण	: — 0:१:१८ बजे
सांपातिक काल जन्म समय पर	: ११:१८:३९ बजे
अयनांश (जन्म समय पर)	: २३:५१:११ बजे

अवकडहा चक्र

लग्न	: वृश्चिक
लग्नेश	: मंगल
राशि / पाया	: तुला/लोहा
राशि स्वामी	: शुक्र
सूर्य राशि (पाश्चात्य ज्योतिषीय)	: मकर
नक्षत्र	: स्वाति
नक्षत्र स्वामी	: राहु
चरण	: २
नाम का प्रथम अक्षर	: रे
योग	: सुकर्मा
करण	: विष्ठि
गण	: देव
योनि	: महिष
नाडी	: अंत्य
वर्ण	: शूद्र
वश्य	: मानव
वर्ग	: मृग

घातक

चाँद्र मास	: माघ
तिथि	: ४—९—१४
दिन	: गुरुवार
नक्षत्र	: शतभिषा
योग	: शुक्ल
करण	: तैतिल
प्रहर	: ४
वर्ग	: सिंह
लग्न	: कन्या
सूर्य	: कन्या
चन्द्र	: धनु
मंगल	: तुला
बुध	: कर्क
गुरू	: वृश्चिक
शुक्र	: धनु
शनि	: सिंह
राहु	: मकर

निरयन ग्रह स्पष्ट

ग्रह	राशि	अंश	गति	गतिभेद	उच्च / नीच	अस्त	नक्षत्र	पद	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी*	उपस्वामी
सूर्य	धनु	१५:५९:०५	०१:०१:१७	—	—	—	पूर्वाषाढा	१	गुरू	शुक्र	सूर्य
चन्द्रमा	तुला	१३:११:२६	१२:०७:१६	—	—	—	स्वाति	२	शुक्र	राहु	बुध
मंगल	कुंभ	०३:४२:२२	००:४६:३८	मार्गी	—	—	धनिष्ठा	४	शनि	मंगल	शुक्र
बुध	धनु	०७:१३:३३	०१:३३:२४	मार्गी	—	अस्त	मूल	३	गुरू	केतु	राहु
गुरू	मेष	०१:२३:१०	००:०२:२१	मार्गी	—	—	अश्विनी	१	मंगल	केतु	शुक्र
शुक्र	वृश्चिक	०७:०४:५३	०१:१२:३९	मार्गी	—	—	अनुराधा	२	मंगल	शनि	बुध
शनि	मेष	१६:३३:१९	००:०१:१५	वक्री	नीच	—	भरणी	१	मंगल	शुक्र	चन्द्रमा
राहु	कर्क	११:१३:०२	००:०३:११	—	—	—	पुष्य	३	चन्द्रमा	शनि	चन्द्रमा
केतु	मकर	११:१३:०२	००:०३:११	—	—	—	श्रवण	१	शनि	चन्द्रमा	मंगल
हर्षल	मकर	२०:५५:६०	००:०३:०१	मार्गी	—	—	श्रवण	४	शनि	चन्द्रमा	शुक्र
नेपच्यून	मकर	०९:१९:५७	००:०२:०८	मार्गी	—	—	उत्तराषाढा	४	शनि	सूर्य	शुक्र
प्लूटो	वृश्चिक	१७:२२:२०	००:०२:०७	मार्गी	—	—	ज्येष्ठा	१	मंगल	बुध	बुध
लग्न	वृश्चिक	१४:५५:४२	——	—	—	—	अनुराधा	४	मंगल	शनि	गुरू

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
विषुवांश	१८:४२:४८	१४:२५:४३	२२:००:३३	१८:०४:४६	०१:३५:२४	१५:५६:५६	०२:३५:०७	२१:०९:४९	२०:२१:४३	१६:४४:३४
क्रान्ति	—२३:०४:२२	—०८:५४:४६	—१३:१९:३१	—२४:२२:३६	०८:३५:११	—१८:१८:२२	१२:३७:०४	—१७:०१:३१	—१९:१२:४९	—११:१८:३७
शर	००:००:००	०५:१३:५९	—०१:०४:२७	—००:५६:३७	—०१:१५:४६	०२:०४:४९	—०२:२६:४९	—००:३९:३०	००:१४:०५	१०:५४:१४

तारा चक्र

जन्म	संपत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अति मित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिर
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मधा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी	हस्त	चित्रा

लग्न

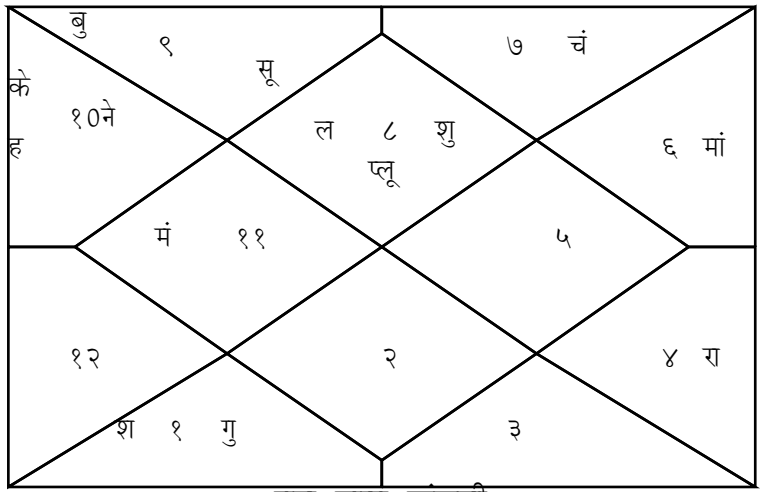

मूल जन्म कुंडली

नवमांश

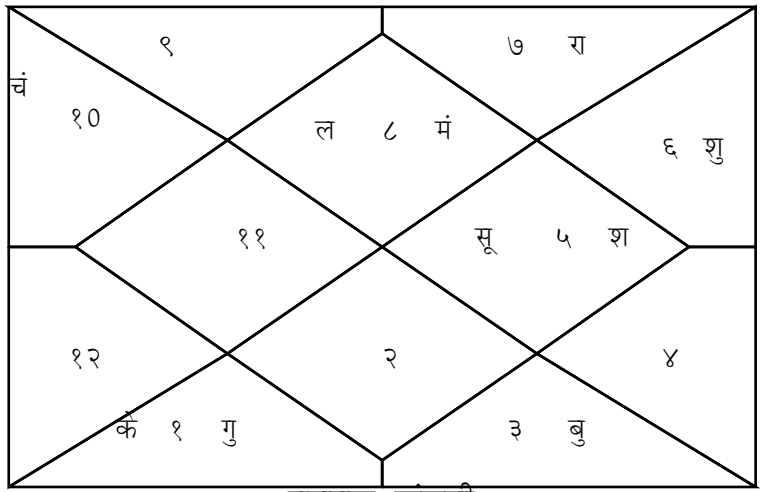

सहायक कुंडली

संधि स्पष्ट

संधि	राशि	अंश	नक्षत्र	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी*	उपस्वामी
१	वृश्चिक	१४:५५:४१	अनुराधा	मंगल	शनि	गुरू
२	धनु	१५:५८:२३	पूर्वाषाढा	गुरू	शुक्र	सूर्य
३	मकर	२०:१३:०३	श्रवण	शनि	चन्द्रमा	केतु
४	कुंभ	२४:५४:१२	पूर्वाभाद्रपद	शनि	गुरू	बुध
५	मीन	२५:५४:४०	रेवती	गुरू	बुध	राहु
६	मेष	२२:०१:५१	भरणी	मंगल	शुक्र	शनि
७	वृषभ	१४:५५:४१	रोहिणी	शुक्र	चन्द्रमा	गुरू
८	मिथुन	१५:५८:२३	आर्द्रा	बुध	राहु	शुक्र
९	कर्क	२०:१३:०३	अश्लेषा	चन्द्रमा	बुध	शुक्र
१०	सिंह	२४:५४:१२	पूर्वाफाल्गुनी	सूर्य	शुक्र	बुध
११	कन्या	२५:५४:४०	चित्रा	बुध	मंगल	राहु
१२	तुला	२२:०१:५१	विशाखा	शुक्र	गुरू	शनि

द्वादश भाव स्पष्ट

भाव	आरम्भ	भाव	मध्य
वृश्चिक	०१:३५:२६	वृश्चिक	१४:५५:४१
धनु	०१:३५:२६	धनु	१८:१५:११
मकर	०४:५४:५७	मकर	२१:३४:४२
कुंभ	०८:१४:२७	कुंभ	२४:५४:१२
मीन	०८:१४:२७	मीन	२१:३४:४२
मेष	०४:५४:५७	मेष	१८:१५:११
वृषभ	०१:३५:२६	वृषभ	१४:५५:४१
मिथुन	०१:३५:२६	मिथुन	१८:१५:११
कर्क	०४:५४:५७	कर्क	२१:३४:४२
सिंह	०८:१४:२७	सिंह	२४:५४:१२
कन्या	०८:१४:२७	कन्या	२१:३४:४२
तुला	०४:५४:५७	तुला	१८:१५:११

संधि कुण्डली

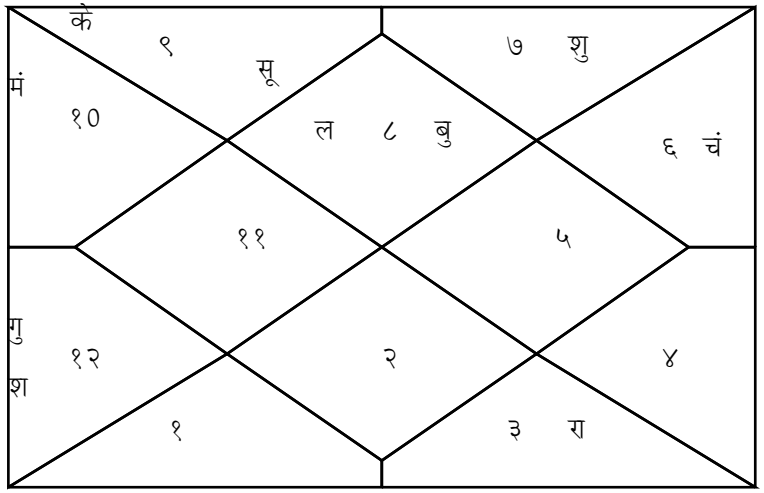

भाव चलित कुण्डली

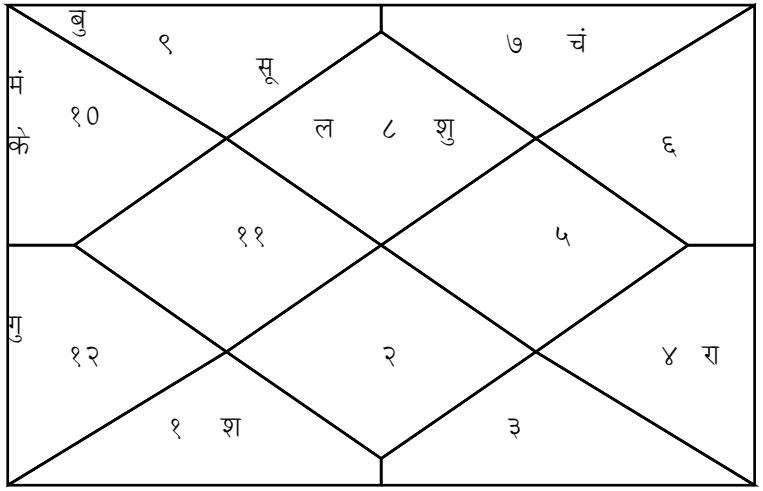

शुभ पाप वर्ग कोष्ठक

	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	लग्न
शुभ वर्ग	५	३	१	३	0	४	४	५	५	३
पाप वर्ग	२	४	६	४	७	३	३	२	२	४
शुभ वर्ग	७	४	४	४	१	५	६	८	७	४
पाप वर्ग	३	६	६	६	९	५	४	२	३	६

ग्रहों की अवस्था

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
युवा	युवा	बाल	कुमार	बाल	वृद्ध	युवा	वृद्ध	वृद्ध

चन्द्र राशि कुण्डली

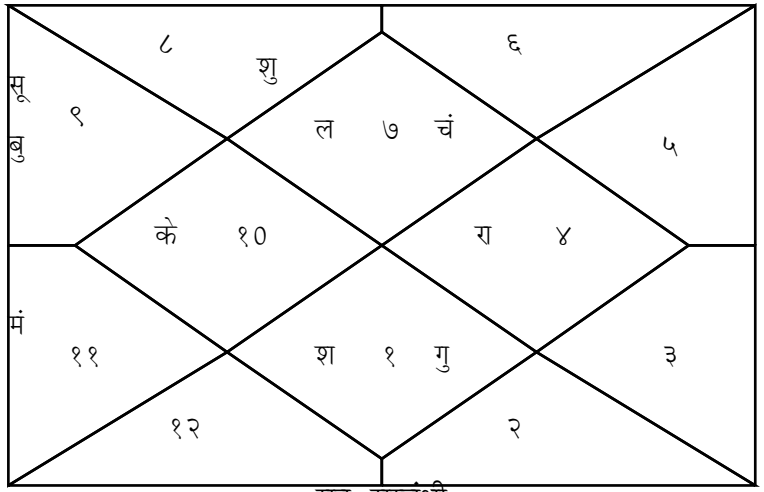

मन सम्बंधी

सूर्य राशि कुण्डली

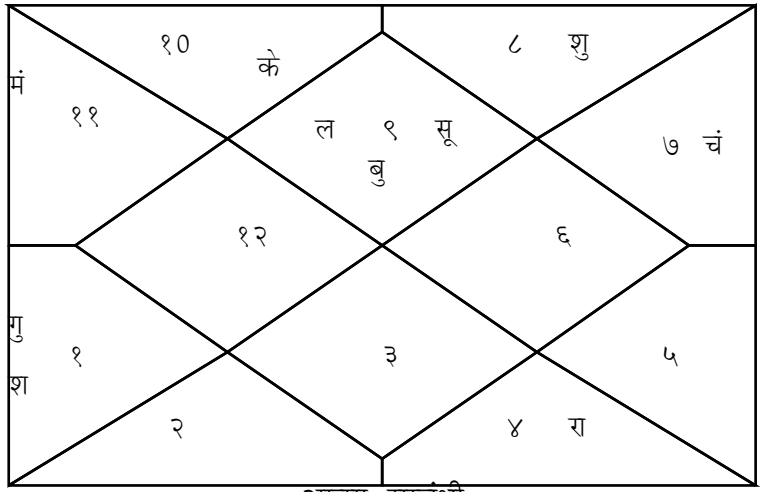

आत्मा सम्बंधी

होरा

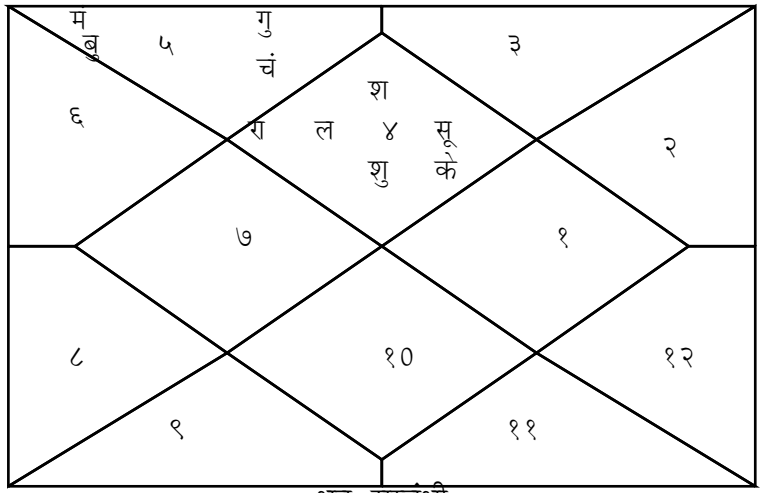

धन सम्बंधी

द्रेष्काण

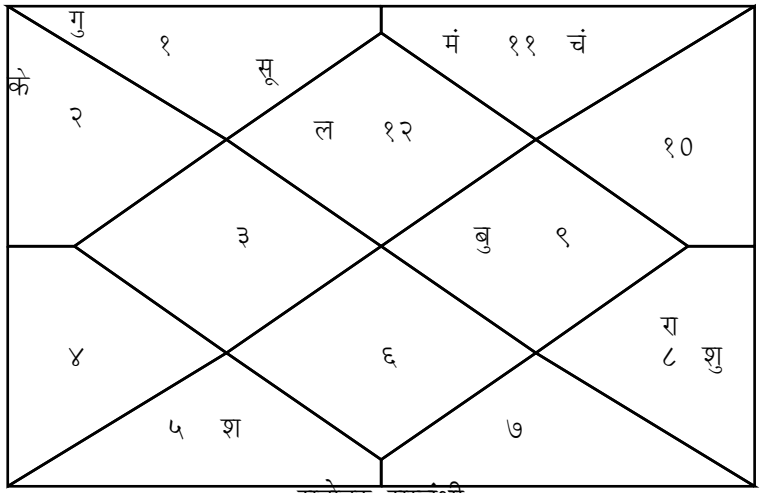

सहोदर सम्बंधी

चतुर्थांश

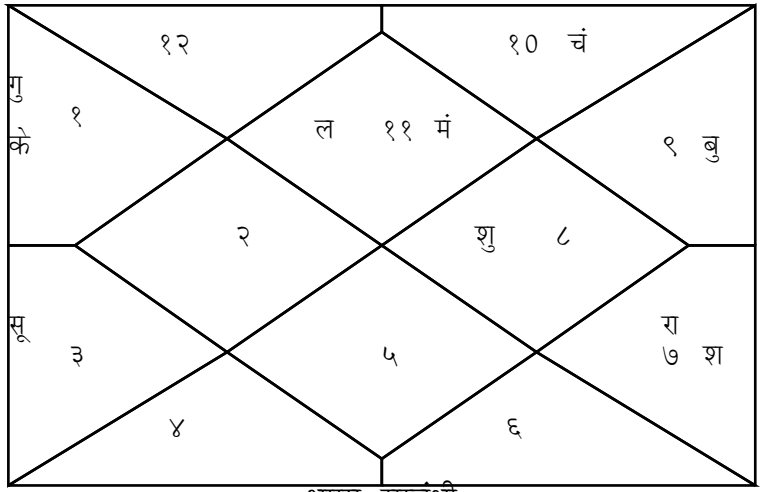

भाग्य सम्बंधी

सप्तमांश

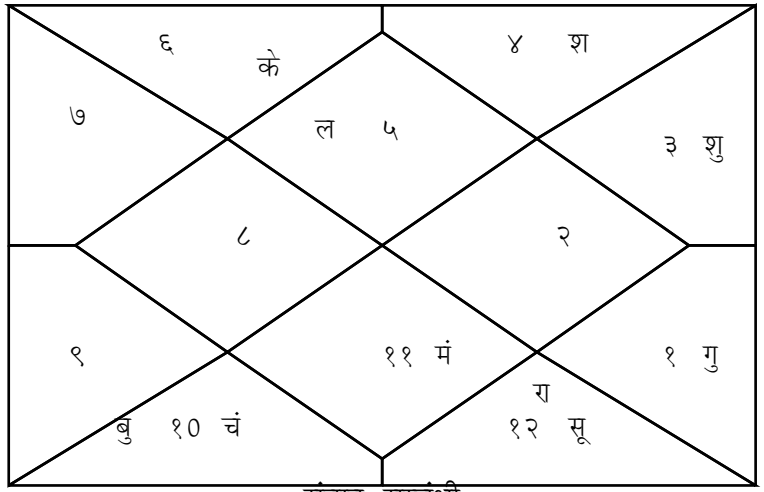

संतान सम्बंधी

दशमांश

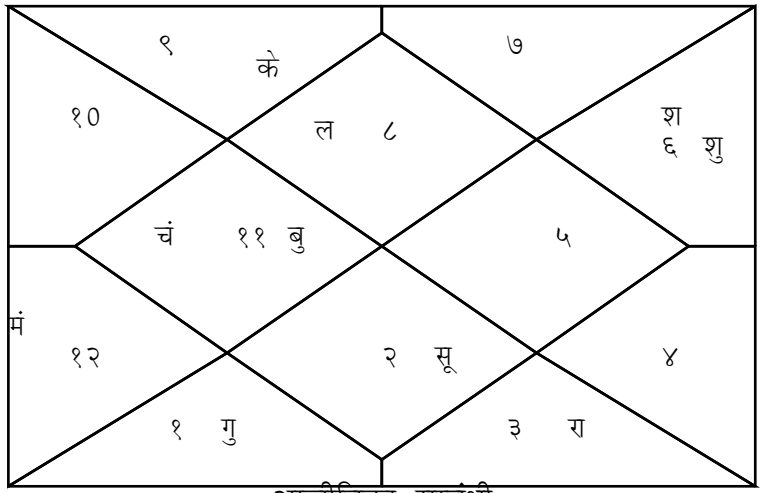

आजीविका सम्बंधी

द्वादशांश

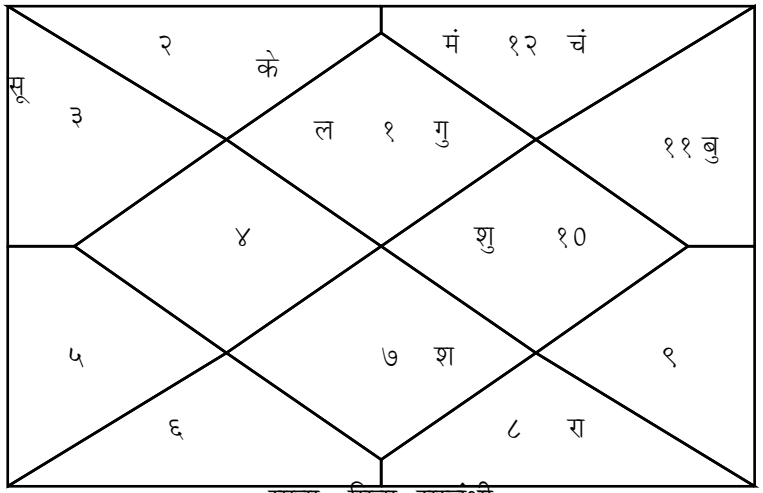

माता–पिता सम्बंधी

षोडशांश

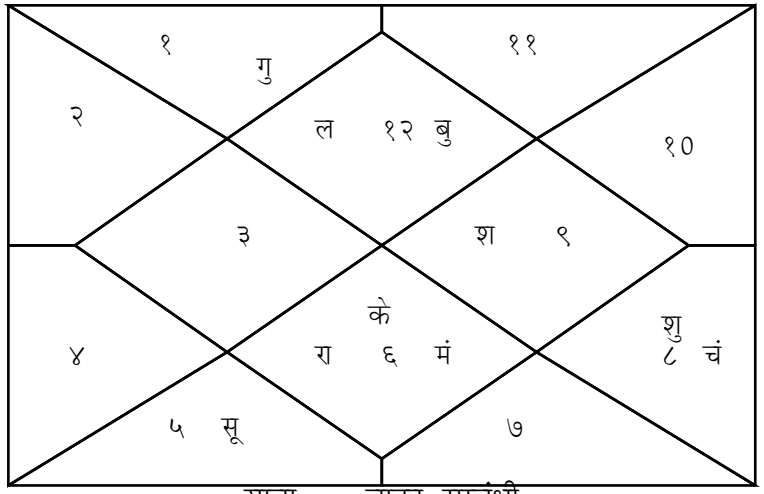

यात्रा – वाहन सम्बंधी

विशांश

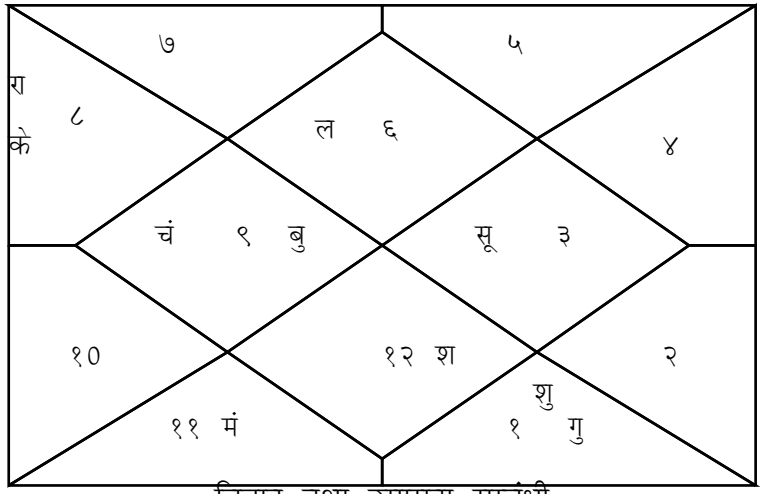

विज्ञान तथा उपासना सम्बंधी

चतुर्विंशांश

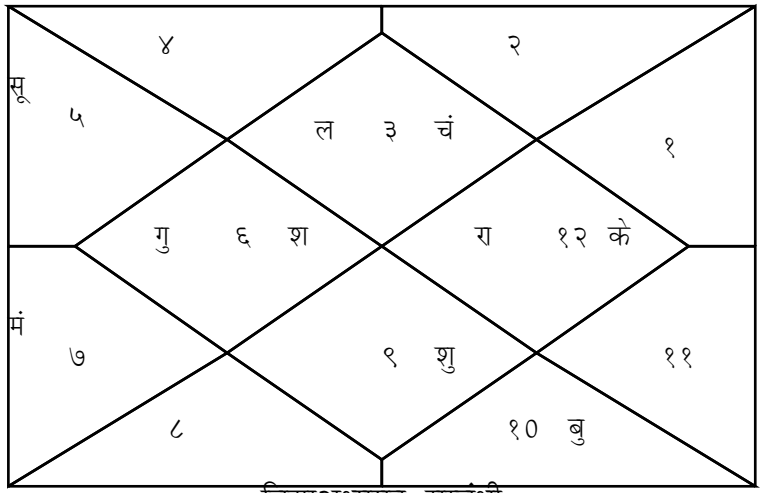

विद्याअध्ययन सम्बंधी

नक्षत्रांश

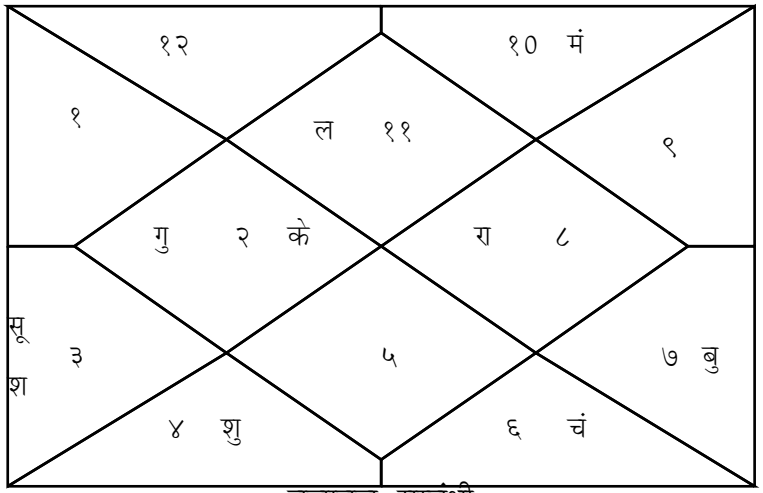

बलाबल सम्बंधी

त्रिशांश

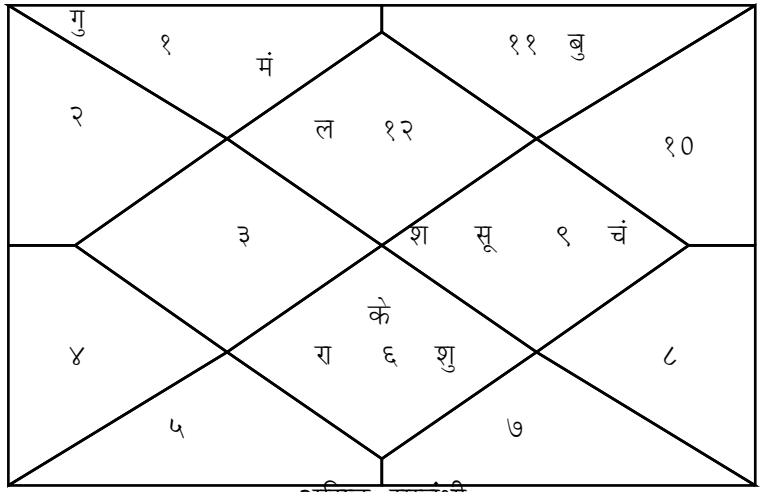

अरिष्ट सम्बंधी

खवेदांश

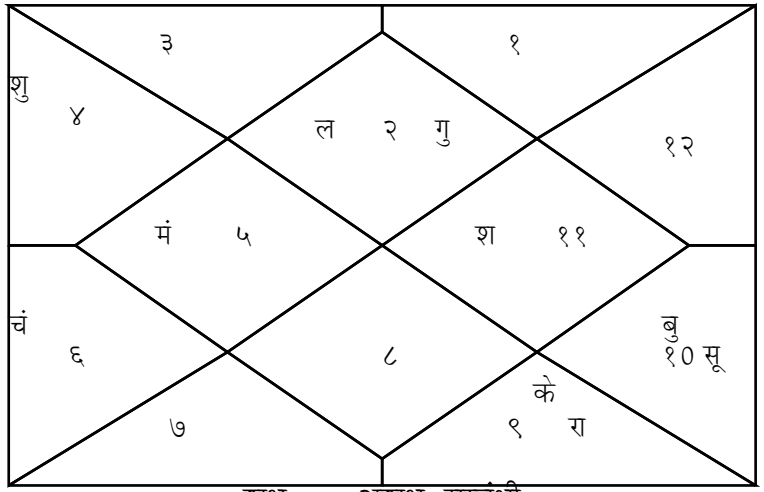

शुभ – अशुभ सम्बंधी

अक्षवेदांश

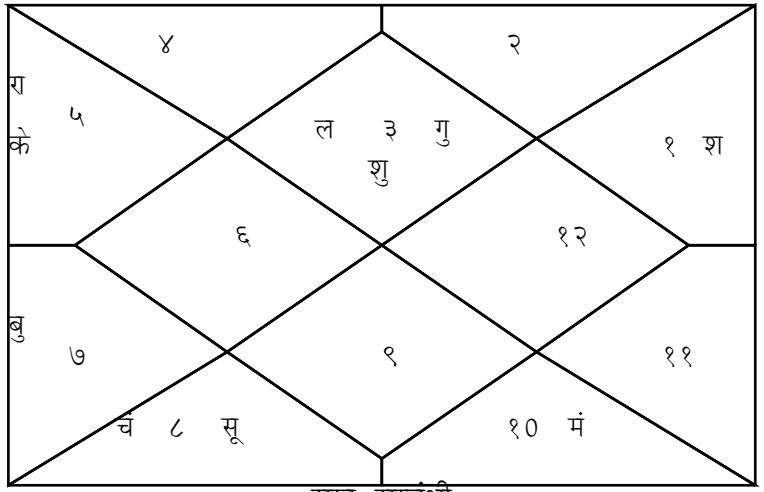

सुख सम्बंधी

षष्यंश

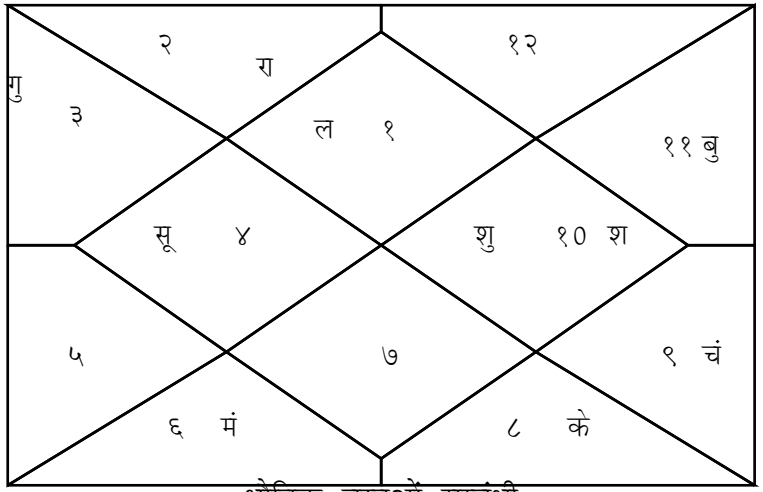

भौतिक वस्तुओं सम्बंधी

षोडश वर्ग तथा ग्रह बल

षोडश वर्ग

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु	लग्न
लग्न	धनु	तुला	कुंभ	धनु	मेष	वृश्चिक	मेष	कर्क	मकर	वृश्चिक
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मेष	कुंभ	कुंभ	धनु	मेष	वृश्चिक	सिंह	वृश्चिक	वृषभ	मीन
चतुर्थांशं	मिथुन	मकर	कुंभ	धनु	मेष	वृश्चिक	तुला	तुला	मेष	कुंभ
सप्तमांश	मीन	मकर	कुंभ	मकर	मेष	मिथुन	कर्क	मीन	कन्या	सिंह
नवमांश	सिंह	मकर	वृश्चिक	मिथुन	मेष	कन्या	सिंह	तुला	मेष	वृश्चिक
दशमांश	वृषभ	कुंभ	मीन	कुंभ	मेष	कन्या	कन्या	मिथुन	धनु	वृश्चिक
द्वादशांश	मिथुन	मीन	मीन	कुंभ	मेष	मकर	तुला	वृश्चिक	वृषभ	मेष
षोडशांश	सिंह	वृश्चिक	कन्या	मीन	मेष	वृश्चिक	धनु	कन्या	कन्या	मीन
विशांश	मिथुन	धनु	कुंभ	धनु	मेष	मेष	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	कन्या
चतुर्विंशांश	सिंह	मिथुन	तुला	मकर	कन्या	धनु	कन्या	मीन	मीन	मिथुन
नक्षत्रांश	मिथुन	कन्या	मकर	तुला	वृषभ	कर्क	मिथुन	वृश्चिक	वृषभ	कुंभ
त्रिशांश	धनु	धनु	मेष	कुंभ	मेष	कन्या	धनु	कन्या	कन्या	मीन
खवेदांश	मकर	कन्या	सिंह	मकर	वृषभ	कर्क	कुंभ	धनु	धनु	वृषभ
अक्षवेदांश	वृश्चिक	वृश्चिक	मकर	तुला	मिथुन	मिथुन	मेष	सिंह	सिंह	मिथुन
षष्यंश	कर्क	धनु	कन्या	कुंभ	मिथुन	मकर	मकर	वृषभ	वृश्चिक	मेष

वर्ग भेद

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	किंशुक	––	किंशुक	––	––	––	––	––	––
	(२)	(0)	(२)	(१)	(0)	(0)	(१)	(१)	(0)
सप्तवर्ग	किंशुक	––	किंशुक	––	––	––	––	––	––
	(२)	(0)	(२)	(१)	(0)	(0)	(१)	(१)	(0)
दशवर्ग	उत्तम	––	पारिजात	––	––	––	पारिजात	उत्तम	––
	(३)	(0)	(२)	(१)	(0)	(0)	(२)	(३)	(१)
षोडषवर्ग	नागपुष्प	––	नागपुष्प	––	––	––	नागपुष्प	कुसुम	कुसुम
	(४)	(0)	(४)	(१)	(0)	(0)	(४)	(३)	(३)

विंशोपक बल

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	१४०६	१००५	१७०१	१००५५	१७०२	१४०९	७०१	८०३५	१७०0५
सप्तवर्ग	१३०९५	१००१	१६०९८	१००२२	१७०२	१५०२	६०८५	९०६	१६०६८
दशवर्ग	१४०४८	९०0३	१४०८	८०२	१४०१५	१३०९	१0०५५	९०१८	१६०५
षोडषवर्ग	१४०९२	९०७८	१४०८७	९०६५	१३०७	१४०0	१0०३५	९०३२	१६०६५

उपग्रह आरुढ़ पद ग्रह अवस्था

उपग्रह	संकेत	राशि	अंश	उच्च / नीच	स्ववर्ग	नक्षत्र	संख्या	पद	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी*
गुलिक	गुलिक	क	१६:२८:२३	—	——	हस्त	१३	२	बुध	चन्द्रमा
काल	काल	तु	०८:५१:१९	—	——	स्वाति	१५	१	शुक्र	राहु
मृत्यु	मृत्यु	वृ	२२:४९:११	—	स्ववर्ग	ज्येष्ठा	१८	२	मंगल	बुध
यमघंटक	यमघंटक	सिं	०१:३१:१२	—	——	मधा	१०	१	सूर्य	केतु
अर्द्धप्रहर	अर्द्धप्रहर	कर्क	०९:३५:५७	—	——	पुष्य	८	२	चन्द्रमा	शनि
धूम	धूम	मे	२९:१९:०५	—	——	कृतिका	३	१	मंगल	सूर्य
व्यतीपात	व्यतीपात	मि	२२:३९:०५	—	स्ववर्ग	पुनर्वसु	७	१	बुध	गुरू
परिवेष	परिवेष	ध	२२:३९:०५	नीच	स्ववर्ग	पूर्वाषाढा	२०	३	गुरू	शुक्र
इन्द्रचाप	इन्द्रचाप	तु	२९:१९:०५	—	——	विशाखा	१६	३	शुक्र	गुरू
उपकेतु	उपकेतु	वृ	१५:५९:०५	—	——	अनुराधा	१७	४	मंगल	शनि
लग्न	ल	८	१४:५५:४२	—	——	१७	१७	४	३	७

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
स्थिर कारक	पितृ	मातृ	भ्रातृ	ज्ञाति	धन	कलत्र	आयुष	ज्ञान	मोक्ष
चर कारक	भ्रातृ	मातृ	ज्ञाति	पितृ	कलत्र	पुत्र	अमात्य	आत्म	——
अवस्था	नृतलिप्स	आगमन	निद्रा	आगमन	कौटुक	निद्रा	प्रकाशन	नृतलिप्स	आगमन
किरण	३०६७	१०१९	५०८१	०००	४०४८	२०१४	००१	कुलः	१७०३९

लग्नारुढ	धन	विक्रम	मातृ	पुत्र	रोग	दारा	आयु	भाग्य	कर्म	लाभ	व्यय
ल	धन	वि	मा	पु	रो	दा	आ	भा	कर्म	ला	व्य

कारकांश लग्नः तुला

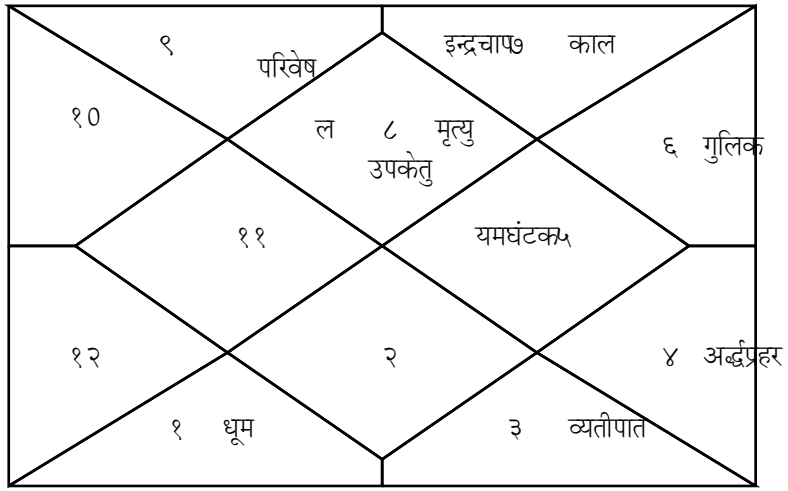

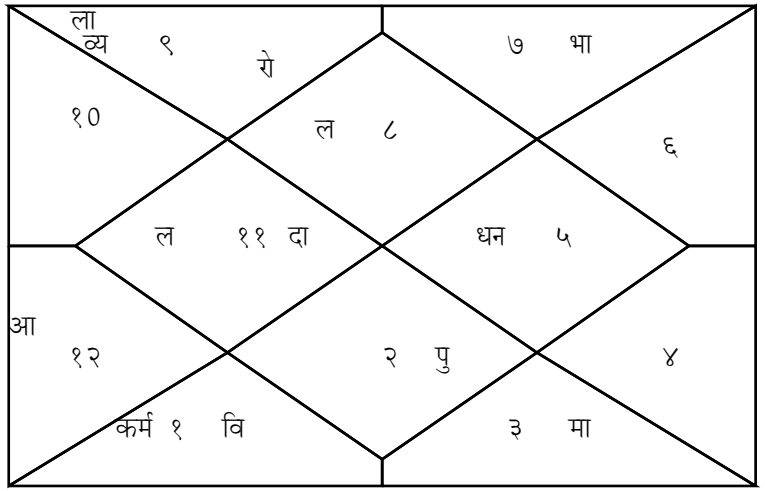

ग्रह सम्बंध षड बल भाव बल

स्थिर सम्बंध

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
सूर्य	––	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चन्द्रमा	मित्र	––	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	––	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	––	सम	मित्र	सम
गुरू	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	––	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	––	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	––

पंचधा मैत्री

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
सूर्य	––	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	अतिशत्रु
चन्द्रमा	अतिमित्र	––	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	––	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र
बुध	सम	सम	मित्र	––	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु
गुरू	सम	सम	अतिमित्र	अतिशत्रु	––	अतिशत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	––	सम
शनि	अतिशत्रु	अतिशत्रु	सम	सम	शत्रु	सम	––

षड बल

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
स्थानबल	२०८	२०३	४०४७	२०२३	४०६	३०१	२०२१
दिग्बल	००३८	००२७	००१२	००८८	००२४	००४	००८४
कालबल	१०५६	२०७१	१०५	२०९	२०४५	२०८	२०१९
चेष्टाबल	००००	००००	००३४	०००७	००६२	००४३	००६९
नैसर्गिकबल	१००	००८६	००२९	००४३	००५७	००७१	००१४
दृकबल	०००४	−००१	−००२७	०००४	−००४७	−०००८	−००४८
कुल	५०७८	६००४	६०४५	६०५५	८००१	७०३६	५०५९

भाव बल

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भावाधीपति बल	६०४५	८००१	५०५९	५०५९	८००१	६०४५	७०३६	६०५५	६०००४	५०७८	६०५५	७०३६
भाव दिग्बल	००००	०००३३	०००८३	०००५	०००८३	०००३३	०००५	०००१७	०००१७	१००	०००६७	०००८३
भाव दृष्टिबल	०००४	०००६८	−०००९	०००५२	०००४१	−०००६	०००१९	०००९२	०००७६	०००५८	०००५	०००५२
कुल	६०८५	९०२	६०३३	६०६१	९०२५	६०७२	८००५	७०६४	६०९७	७०३६	७०७२	८०७१

इष्ट तथा कष्ट फल

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
इष्ट	८०४९	११०७६	३४०२४	११०८३	३२०६	१८०५९	६०८९
कष्ट	४६०४३	४५०६७	८०७	३९०७	२६०८५	३९०९१	३३०१२

प्रस्तारअष्टकवर्ग : सूर्य

	ध	म	कु	मी	मे	वृष	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	कुल
सू	0	0		0			0	0	0	0	0		८
चं	0			0				0	0				४
मं	0		0	0		0			0	0	0	0	८
बु			0		0	0			0	0	0	0	७
गु	0		0						0	0			४
शु					0	0					0		३
श	0	0	0		0	0		0			0	0	८
लग्न		0	0		0				0	0	0		६
कुल	५	३	५	३	४	४	१	३	६	५	६	३	४८

प्रस्तारअष्टकवर्ग : चन्द्रमा

	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे	वृष	मि	कर्क	सिं	क	कुल
सू	0				0			0	0	0		0	६
चं	0		0			0	0			0	0		६
मं	0	0	0			0	0		0	0			७
बु	0		0		0	0	0		0	0		0	८
गु	0	0		0	0	0	0			0			७
शु				0	0	0		0		0	0	0	७
श					0				0		0	0	४
लग्न				0			0				0	0	४
कुल	५	२	३	३	५	५	५	२	४	६	४	५	४९

प्रस्तारअष्टकवर्ग : मंगल

	कु	मी	मे	वृष	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुल
सू	0		0	0				0	0				५
चं		0					0				0		३
मं	0	0		0			0	0		0	0		७
बु	0		0	0					0				४
गु	0	0						0				0	४
शु			0		0			0	0				४
श	0		0			0			0	0	0	0	७
लग्न			0				0	0		0		0	५
कुल	५	३	५	३	१	१	३	५	४	३	३	३	३९

प्रस्तारअष्टकवर्ग : बुध

	ध	म	कु	मी	मे	वृष	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	कुल
सू					0	0			0		0	0	५
चं		0		0		0		0	0			0	६
मं	0		0	0		0			0	0	0	0	८
बु	0		0		0	0			0	0	0	0	८
गु			0	0						0		0	४
शु	0	0	0	0			0	0		0		0	८
श	0	0	0		0	0		0			0	0	८
लग्न	0		0		0		0	0				0	७
कुल	५	३	६	४	४	५	२	३	५	५	४	८	५४

प्रस्तारअष्टकवर्ग : गुरू

	मे	वृष	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	कुल
सू			0	0	0	0	0		0	0	0	0	९
चं	0		0		0			0			0		५
मं		0			0	0		0	0		0	0	७
बु	0	0			0	0	0		0	0		0	८
गु	0	0	0	0			0	0		0	0		८
शु	0			0	0	0			0			0	६
श			0		0	0						0	४
लग्न	0	0		0	0	0		0	0		0	0	९
कुल	५	४	४	४	७	६	३	४	५	३	५	६	५६

प्रस्तारअष्टकवर्ग : शुक्र

	वृ	ध	म	कु	मी	मे	वृष	मि	कर्क	सिं	क	तु	कुल
सू	0								0			0	३
चं	0	0	0	0			0	0		0	0	0	९
मं		0	0			0		0	0			0	६
बु				0		0	0			0		0	५
गु		0	0	0						0			५
शु		0	0	0	0			0	0	0	0		९
श		0	0	0				0	0	0			७
लग्न	0	0	0	0	0			0	0		0		८
कुल	६	६	६	६	२	२	२	५	५	५	३	४	५२

प्रस्तारअष्टकवर्ग : शनि

	मे	वृष	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	कुल
सू			0	0		0	0		0	0		0	७
चं					0				0			0	३
मं	0		0	0				0	0	0			६
बु		0		0	0	0	0	0					६
गु					0	0					0	0	४
शु	0					0	0						३
श			0		0	0					0		४
लग्न	0				0	0		0		0	0		६
कुल	३	१	३	३	५	६	३	३	३	३	३	३	३९

अष्टक वर्ग कोष्ठक

भिन्नाष्टक वर्ग

	मे	वृष	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
सू	४	४	१	३	६	५	६	३	५	३	५	३
चं	५	२	४	६	४	५	५	२	३	३	५	५
मं	५	३	१	१	३	५	४	३	३	३	५	३
बु	४	५	२	३	५	५	४	८	५	३	६	४
गु	५	४	४	४	७	६	३	४	५	३	५	६
शु	२	२	५	५	५	३	४	६	६	६	६	२
श	३	१	३	३	५	६	३	३	३	३	३	३

भिन्नाष्टक वर्ग शोधन पश्चात

	मे	वृष	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
सू	0	0	0	0	२	२	५	0	१	0	४	0
चं	२	0	0	४	१	३	१	0	0	0	१	३
मं	२	0	0	0	0	२	३	२	0	0	४	२
बु	0	0	0	0	१	२	२	५	१	0	४	0
गु	0	१	१	0	२	१	0	0	0	0	२	२
शु	0	0	0	३	३	0	0	४	४	२	२	0
श	0	0	0	0	२	५	0	0	0	२	0	0

सर्वाष्टक वर्ग

	मे	वृष	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
कुल बिन्दु	२८	२१	२०	२५	३५	३५	२९	२९	३०	२४	३५	२६
कुल रेखाएं	२८	३५	३६	३१	२१	२१	२७	२७	२६	३२	२१	३०

सर्वाष्टक वर्ग शोधन पश्चात

	मे	वृष	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
कुल बिन्दु	0	९	३	0	७	३	0	४	२	0	६	0
कुल रेखाएं	२	0	0	४	७	१	३	0	0	0	९	३

पिण्ड

	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
ग्रह पिण्ड	६७	४३	९१	८७	१६	८४	0
राशि पिण्ड	११८	१०९	१२९	१२७	८९	१४२	५५
शोध्य पिण्ड	१८५	१५२	२२०	२१४	१०५	२२६	५५

१) बिंदु शुभ का द्योतक है और रेखा अशुभ की द्योतक है।

२) किसी भी ग्रह द्वारा दिए गए अधिकतम बिंदु आठ होते हैं। एक राशिमें बिंदुओं और रेखाओं की संख्या अधिकतम ५६ होती है। एक कुंडली में बिंदुओं की कुल संख्या सदैव ३३७ होती है।

३) किसी भी ग्रह द्वारा दिए गए बिंदु राशि में उसकी स्थिति पर आधारित होते हैं।

विंशोतरी दशा

भोग्य दशा जन्म समय पर: राहु ९ वर्ष २ मास ९ दिन

ग्रहों की महादशा तथा अंतर्दशा

रा–१८ वर्ष		गु–१६ वर्ष		श–१९ वर्ष		बु–१७ वर्ष		के–७ वर्ष	
०१/०१/२०००		११/०३/२००९		११/०३/२०२५		११/०३/२०४४		११/०३/२०६१	
११/०३/२००९		११/०३/२०२५		११/०३/२०४४		११/०३/२०६१		११/०३/२०६८	
रा	००/००/००	गु	११/०३/०९	श	११/०३/२५	बु	११/०३/४४	के	११/०३/६१
गु	००/००/००	श	२९/०४/११	बु	१४/०३/२८	के	०७/०८/४६	शु	०७/०८/६१
श	००/००/००	बु	१०/११/१३	के	२२/११/३०	शु	०५/०८/४७	सू	०७/१०/६२
बु	०१/०१/००	के	१६/०२/१६	शु	०१/०१/३२	सू	०४/०६/५०	चं	१२/०२/६३
के	१०/०९/०१	शु	२२/०१/१७	सू	०२/०३/३५	चं	११/०४/५१	मं	१३/०९/६३
शु	२८/०९/०२	सू	२२/०९/१९	चं	१२/०२/३६	मं	०९/०९/५२	रा	०९/०२/६४
सू	२८/०९/०५	चं	११/०७/२०	मं	१३/०९/३७	रा	०७/०९/५३	गु	२७/०२/६५
चं	२३/०८/०६	मं	१०/११/२१	रा	२३/१०/३८	गु	२६/०३/५६	श	०३/०२/६६
मं	२२/०२/०८	रा	१७/१०/२२	गु	२८/०८/४१	श	०२/०७/५८	बु	१४/०३/६७

शु–२० वर्ष		सू–६ वर्ष		चं–१० वर्ष		मं–७ वर्ष		रा–१८ वर्ष	
११/०३/२०६८		१०/०३/२०८८		११/०३/२०९४		११/०३/२१०४		१३/०३/२१११	
१०/०३/२०८८		११/०३/२०९४		११/०३/२१०४		१३/०३/२१११		०२/०१/२१२०	
शु	११/०३/६८	सू	१०/०३/८८	चं	११/०३/९४	मं	११/०३/०४	रा	१३/०३/११
सू	११/०७/७१	चं	२८/०६/८८	मं	०९/०१/९५	रा	०७/०८/०४	गु	२३/११/१३
चं	१०/०७/७२	मं	२८/१२/८८	रा	१०/०८/९५	गु	२७/०८/०५	श	१८/०४/१६
मं	११/०३/७४	रा	०४/०५/८९	गु	०८/०२/९७	श	०३/०८/०६	बु	०२/०१/२०
रा	११/०५/७५	गु	२९/०३/९०	श	१०/०६/९८	बु	१२/०९/०७	के	००/००/००
गु	११/०५/७८	श	१५/०१/९१	बु	१०/०१/००	के	०८/०९/०८	शु	००/००/००
श	०९/०१/८१	बु	२८/१२/९१	के	११/०६/०१	शु	०४/०२/०९	सू	००/००/००
बु	१०/०३/८४	के	०३/११/९२	शु	१०/०१/०२	सू	०६/०४/१०	चं	००/००/००
के	०९/०१/८७	शु	११/०३/९३	सू	११/०९/०३	चं	१२/०८/१०	मं	००/००/००

र–बु		र–के		र–शु		र–सू		र–चं		र–मं		गु–गु		गु–श		गु–बु	
०१/०१/२०००		१०/०९/२००१		२८/०९/२००२		२८/०९/२००५		२३/०८/२००६		२२/०२/२००८		११/०३/२००९		२९/०४/२०११		१०/११/२०१३	
१०/०९/२००१		२८/०९/२००२		२८/०९/२००५		२३/०८/२००६		२२/०२/२००८		११/०३/२००९		२९/०४/२०११		१०/११/२०१३		१६/०२/२०१६	
बु	००/००/००	के	१०/०९/०१	शु	२८/०९/०२	सू	२८/०९/०५	चं	२३/०८/०६	मं	२२/०२/०८	गु	११/०३/०९	श	२९/०४/११	बु	१०/११/१३
के	००/००/००	शु	०२/१०/०१	सू	३०/०३/०३	चं	१५/१०/०५	मं	०८/१०/०६	रा	१५/०३/०८	श	२३/०६/०९	बु	२३/०९/११	के	०७/०३/१४
शु	०१/०१/००	सू	०५/१२/०१	चं	२४/०५/०३	मं	११/११/०५	रा	०९/११/०६	गु	१२/०५/०८	बु	२५/१०/०९	के	०१/०२/१२	शु	२४/०४/१४
सू	२९/०१/००	चं	२४/१२/०१	मं	२३/०८/०३	रा	३०/११/०५	गु	३०/०१/०७	श	०२/०७/०८	के	१२/०२/१०	शु	२६/०३/१२	सू	०९/०९/१४
चं	१६/०३/००	मं	२५/०१/०२	रा	२६/१०/०३	गु	१८/०१/०६	श	१३/०४/०७	बु	०१/०९/०८	शु	२९/०३/१०	सू	२७/०८/१२	चं	२१/१०/१४
मं	०१/०६/००	रा	१७/०२/०२	गु	०७/०४/०४	श	०३/०३/०६	बु	०८/०७/०७	के	२५/१०/०८	सू	०६/०८/१०	चं	१२/१०/१२	मं	२९/१२/१४
रा	२६/०७/००	गु	१५/०४/०२	श	०१/०९/०४	बु	२४/०४/०६	के	२४/०९/०७	शु	१६/११/०८	चं	१४/०९/१०	मं	२९/१२/१२	रा	१५/०२/१५
गु	१२/१२/००	श	०५/०६/०२	बु	२१/०२/०५	के	१०/०६/०६	शु	२६/१०/०७	सू	१९/०१/०९	मं	१८/११/१०	रा	२१/०२/१३	गु	१९/०६/१५
श	१५/०४/०१	बु	०५/०८/०२	के	२६/०७/०५	शु	२९/०६/०६	सू	२५/०१/०८	चं	०७/०२/०९	रा	०३/०१/११	गु	०९/०७/१३	श	०८/१०/१५

गु–के		गु–शु		गु–सू		गु–चं		गु–मं		गु–रा		श–श		श–बु		श–के	
१६/०२/२०१६		२२/०१/२०१७		२२/०९/२०१९		११/०७/२०२०		१०/११/२०२१		१७/१०/२०२२		११/०३/२०२५		१४/०३/२०२८		२२/११/२०३०	
२२/०१/२०१७		२२/०९/२०१९		११/०७/२०२०		१०/११/२०२१		१७/१०/२०२२		११/०३/२०२५		१४/०३/२०२८		२२/११/२०३०		०१/०१/२०३२	
के	१६/०२/१६	शु	२२/०१/१७	सू	२२/०९/१९	चं	११/०७/२०	मं	१०/११/२१	रा	१७/१०/२२	श	११/०३/२५	बु	१४/०३/२८	के	२२/११/३०
शु	०६/०३/१६	सू	०३/०७/१७	चं	०७/१०/१९	मं	२०/०८/२०	रा	३०/११/२१	गु	२५/०२/२३	बु	०१/०९/२५	के	३१/०७/२८	शु	१६/१२/३०
सू	०२/०५/१६	चं	२१/०८/१७	मं	३१/१०/१९	रा	१८/०९/२०	गु	२०/०१/२२	श	२२/०६/२३	के	०४/०२/२६	शु	२७/०९/२८	सू	२१/०२/३१
चं	१९/०५/१६	मं	१०/११/१७	रा	१७/११/१९	गु	३०/११/२०	श	०६/०३/२२	बु	०८/११/२३	शु	०९/०४/२६	सू	०९/०३/२९	चं	१३/०३/३१
मं	१७/०६/१६	रा	०६/०१/१८	गु	३१/१२/१९	श	०३/०२/२१	बु	२९/०४/२२	के	११/०३/२४	सू	०९/१०/२६	चं	२८/०४/२९	मं	१६/०४/३१
रा	०७/०७/१६	गु	०१/०६/१८	श	०८/०२/२०	बु	२१/०४/२१	के	१६/०६/२२	शु	०१/०५/२४	चं	०३/१२/२६	मं	१८/०७/२९	रा	१०/०५/३१
गु	२७/०८/१६	श	०८/१०/१८	बु	२६/०३/२०	के	२९/०६/२१	शु	०६/०७/२२	सू	२४/०९/२४	मं	०५/०३/२७	रा	१४/०९/२९	गु	०९/०७/३१
श	११/१०/१६	बु	१२/०३/१९	के	०६/०५/२०	शु	२७/०७/२१	सू	०१/०९/२२	चं	०७/११/२४	रा	०८/०५/२७	गु	०८/०२/३०	श	०१/०९/३१
बु	०४/१२/१६	के	२८/०७/१९	शु	२३/०५/२०	सू	१६/१०/२१	चं	१८/०९/२२	मं	१९/०१/२५	गु	१९/१०/२७	श	१९/०६/३०	बु	०४/११/३१

श–शु		श–सू		श–चं		श–मं		श–रा		श–गु		बु–बु		बु–के		बु–शु	
०१/०१/२०३२		०२/०३/२०३५		१२/०२/२०३६		१३/०९/२०३७		२३/१०/२०३८		२८/०८/२०४१		११/०३/२०४४		०७/०८/२०४६		०५/०८/२०४७	
०२/०३/२०३५		१२/०२/२०३६		१३/०९/२०३७		२३/१०/२०३८		२८/०८/२०४१		११/०३/२०४४		०७/०८/२०४६		०५/०८/२०४७		०४/०६/२०५०	
शु	०१/०१/३२	सू	०२/०३/३५	चं	१२/०२/३६	मं	१३/०९/३७	रा	२३/१०/३८	गु	२८/०८/४१	बु	११/०३/४४	के	०७/०८/४६	शु	०५/०८/४७
सू	१२/०७/३२	चं	२०/०३/३५	मं	०१/०४/३६	रा	०६/१०/३७	गु	२८/०३/३९	श	३०/१२/४१	के	१३/०७/४४	शु	२९/०८/४६	सू	२४/०१/४८
चं	०७/०९/३२	मं	१८/०४/३५	रा	०४/०५/३६	गु	०६/१२/३७	श	१३/०८/३९	बु	२५/०५/४२	शु	०३/०९/४४	सू	२८/१०/४६	चं	१६/०३/४८
मं	१३/१२/३२	रा	०८/०५/३५	गु	३०/०७/३६	श	२९/०१/३८	बु	२५/०१/४०	के	०३/१०/४२	सू	२७/०१/४५	चं	१५/११/४६	मं	१०/०६/४८
रा	१८/०२/३३	गु	२९/०६/३५	श	१५/१०/३६	बु	०३/०४/३८	के	२१/०६/४०	शु	२६/११/४२	चं	१२/०३/४५	मं	१५/१२/४६	रा	०९/०८/४८
गु	११/०८/३३	श	१४/०८/३५	बु	१५/०१/३७	के	३०/०५/३८	शु	२०/०८/४०	सू	३०/०४/४३	मं	२५/०५/४५	रा	०५/०१/४७	गु	१२/०१/४९
श	१२/०१/३४	बु	०८/१०/३५	के	०७/०४/३७	शु	२३/०६/३८	सू	१०/०२/४१	चं	१५/०६/४३	रा	१५/०७/४५	गु	०१/०३/४७	श	३०/०५/४९
बु	१४/०७/३४	के	२६/११/३५	शु	१०/०५/३७	सू	३०/०८/३८	चं	०३/०४/४१	मं	३१/०८/४३	गु	२४/११/४५	श	१८/०४/४७	बु	०९/११/४९
के	२५/१२/३४	शु	१७/१२/३५	सू	१५/०८/३७	चं	१९/०९/३८	मं	२९/०६/४१	रा	२४/१०/४३	श	२१/०३/४६	बु	१४/०६/४७	के	०५/०४/५०

बु–सू	बु–चं	बु–मं	बु–रा	बु–गु	बु–श	के–के	के–शु	के–सू
०४/०६/२०५०	११/०४/२०५१	०९/०९/२०५२	०७/०९/२०५३	२६/०३/२०५६	०२/०७/२०५८	११/०३/२०६१	०७/०८/२०६१	०७/१०/२०६२
११/०४/२०५१	०९/०९/२०५२	०७/०९/२०५३	२६/०३/२०५६	०२/०७/२०५८	११/०३/२०६१	०७/०८/२०६१	०७/१०/२०६२	१२/०२/२०६३

सू	०४/०६/५०	चं	११/०४/५१	मं	०९/०९/५२	रा	०७/०९/५३	गु	२६/०३/५६	श	०२/०७/५८	के	११/०३/६१	शु	०७/०८/६१	सू	०७/१०/६२
चं	२०/०६/५०	मं	२४/०५/५१	रा	३०/०९/५२	गु	२४/०१/५४	श	१४/०७/५६	बु	०४/१२/५८	शु	२०/०३/६१	सू	१७/१०/६१	चं	१४/१०/६२
मं	१६/०७/५०	रा	२३/०६/५१	गु	२४/११/५२	श	२८/०५/५४	बु	२२/११/५६	के	२३/०४/५९	सू	१३/०४/६१	चं	०७/११/६१	मं	२४/१०/६२
रा	०३/०८/५०	गु	०९/०९/५१	श	११/०१/५३	बु	२३/१०/५४	के	२०/०३/५७	शु	१९/०६/५९	चं	२१/०४/६१	मं	१३/१२/६१	रा	०१/११/६२
गु	१९/०९/५०	श	१७/११/५१	बु	०९/०३/५३	के	०४/०३/५५	शु	०७/०५/५७	सू	३०/११/५९	मं	०३/०५/६१	रा	०७/०१/६२	गु	२०/११/६२
श	३०/१०/५०	बु	०७/०२/५२	के	३०/०४/५३	शु	२७/०४/५५	सू	२२/०९/५७	चं	१८/०१/६०	रा	१२/०५/६१	गु	१२/०३/६२	श	०७/१२/६२
बु	१८/१२/५०	के	२०/०४/५२	शु	२१/०५/५३	सू	२९/०९/५५	चं	०२/११/५७	मं	०९/०४/६०	गु	०३/०६/६१	श	०७/०५/६२	बु	२७/१२/६२
के	३१/०१/५१	शु	२०/०५/५२	सू	२०/०७/५३	चं	१५/११/५५	मं	१०/०१/५८	रा	०५/०६/६०	श	२३/०६/६१	बु	१४/०७/६२	के	१४/०१/६३
शु	१८/०२/५१	सू	१४/०८/५२	चं	०७/०८/५३	मं	०१/०२/५६	रा	२८/०२/५८	गु	३१/१०/६०	बु	१७/०७/६१	के	१२/०९/६२	शु	२२/०१/६३

के–चं	के–मं	के–रा	के–गु	के–श	के–बु	शु–शु	शु–सू	शु–चं
१२/०२/२०६३	१३/०९/२०६३	०९/०२/२०६४	२७/०२/२०६५	०३/०२/२०६६	१४/०३/२०६७	११/०३/२०६८	११/०७/२०७१	१०/०७/२०७२
१३/०९/२०६३	०९/०२/२०६४	२७/०२/२०६५	०३/०२/२०६६	१४/०३/२०६७	११/०३/२०६८	११/०७/२०७१	१०/०७/२०७२	११/०३/२०७४

चं	१२/०२/६३	मं	१३/०९/६३	रा	०९/०२/६४	गु	२७/०२/६५	श	०३/०२/६६	बु	१४/०३/६७	शु	११/०३/६८	सू	११/०७/७१	चं	१०/०७/७२
मं	०२/०३/६३	रा	२२/०९/६३	गु	०७/०४/६४	श	१३/०४/६५	बु	०८/०४/६६	के	०५/०५/६७	सू	२९/०९/६८	चं	२९/०७/७१	मं	३०/०८/७२
रा	१४/०३/६३	गु	१४/१०/६३	श	२८/०५/६४	बु	०६/०६/६५	के	०४/०६/६६	शु	२६/०५/६७	चं	२९/११/६८	मं	२९/०८/७१	रा	०५/१०/७२
गु	१५/०४/६३	श	०३/११/६३	बु	२८/०७/६४	के	२४/०७/६५	शु	२८/०६/६६	सू	२५/०७/६७	मं	११/०३/६९	रा	१९/०९/७१	गु	०४/०१/७३
श	१४/०५/६३	बु	२७/११/६३	के	२०/०९/६४	शु	१३/०८/६५	सू	०३/०९/६६	चं	१२/०८/६७	रा	२१/०५/६९	गु	१३/११/७१	श	२६/०३/७३
बु	१६/०६/६३	के	१८/१२/६३	शु	१२/१०/६४	सू	०९/१०/६५	चं	२३/०९/६६	मं	११/०९/६७	गु	१९/११/६९	श	०१/०१/७२	बु	३०/०६/७३
के	१६/०७/६३	शु	२६/१२/६३	सू	१५/१२/६४	चं	२६/१०/६५	मं	२७/१०/६६	रा	०३/१०/६७	श	०१/०५/७०	बु	२७/०२/७२	के	२५/०९/७३
शु	२९/०७/६३	सू	२०/०१/६४	चं	०३/०१/६५	मं	२४/११/६५	रा	२०/११/६६	गु	२६/११/६७	बु	१०/११/७०	के	१९/०४/७२	शु	३०/१०/७३
सू	०२/०९/६३	चं	२८/०१/६४	मं	०४/०२/६५	रा	१३/१२/६५	गु	१९/०१/६७	श	१३/०१/६८	के	०१/०५/७१	शु	१०/०५/७२	सू	०९/०२/७४

शु–मं	शु–रा	शु–गु	शु–श	शु–बु	शु–के	सू–सू	सू–चं	सू–मं
११/०३/२०७४	११/०५/२०७५	११/०५/२०७८	०९/०१/२०८१	१०/०३/२०८४	०९/०१/२०८७	१०/०३/२०८८	२८/०६/२०८८	२८/१२/२०८८
११/०५/२०७५	११/०५/२०७८	०९/०१/२०८१	१०/०३/२०८४	०९/०१/२०८७	१०/०३/२०८८	२८/०६/२०८८	२८/१२/२०८८	०४/०५/२०८९

मं	११/०३/७४	रा	११/०५/७५	गु	११/०५/७८	श	०९/०१/८१	बु	१०/०३/८४	के	०९/०१/८७	सू	१०/०३/८८	चं	२८/०६/८८	मं	२८/१२/८८
रा	०५/०४/७४	गु	२३/१०/७५	श	१८/०९/७८	बु	११/०७/८१	के	०४/०८/८४	शु	०३/०२/८७	चं	१६/०३/८८	मं	१३/०७/८८	रा	०४/०१/८९
गु	०८/०६/७४	श	१७/०३/७६	बु	१९/०२/७९	के	२२/१२/८१	शु	०३/१०/८४	सू	१५/०४/८७	मं	२५/०३/८८	रा	२४/०७/८८	गु	२३/०१/८९
श	०४/०८/७४	बु	०६/०९/७६	के	०७/०७/७९	शु	२७/०२/८२	सू	२५/०३/८५	चं	०६/०५/८७	रा	३१/०३/८८	गु	२०/०८/८८	श	०९/०२/८९
बु	१०/१०/७४	के	०८/०२/७७	शु	०२/०९/७९	सू	०८/०९/८२	चं	१६/०५/८५	मं	११/०६/८७	गु	१७/०४/८८	श	१४/०९/८८	बु	०२/०३/८९
के	०९/१२/७४	शु	१३/०४/७७	सू	११/०२/८०	चं	०५/११/८२	मं	१०/०८/८५	रा	०६/०७/८७	श	०१/०५/८८	बु	१३/१०/८८	के	२०/०३/८९
शु	०३/०१/७५	सू	१३/१०/७७	चं	३१/०३/८०	मं	०९/०२/८३	रा	०९/१०/८५	गु	०८/०९/८७	बु	१९/०५/८८	के	०७/११/८८	शु	२७/०३/८९
सू	१५/०३/७५	चं	०७/१२/७७	मं	२०/०६/८०	रा	१८/०४/८३	गु	१३/०३/८६	श	०४/११/८७	के	०३/०६/८८	शु	१८/११/८८	सू	१७/०४/८९
चं	०६/०४/७५	मं	०८/०३/७८	रा	१६/०८/८०	गु	०८/१०/८३	श	२९/०७/८६	बु	१०/०१/८८	शु	१०/०६/८८	सू	१८/१२/८८	चं	२४/०४/८९

सू–रा	सू–गु	सू–श	सू–बु	सू–के	सू–शु	चं–चं	चं–मं	चं–रा
०४/०५/२०८९	२९/०३/२०९०	१५/०१/२०९१	२८/१२/२०९१	०३/११/२०९२	११/०३/२०९३	११/०३/२०९४	०९/०१/२०९५	१०/०८/२०९५
२९/०३/२०९०	१५/०१/२०९१	२८/१२/२०९१	०३/११/२०९२	११/०३/२०९३	११/०३/२०९४	०९/०१/२०९५	१०/०८/२०९५	०८/०२/२०९७

रा	०४/०५/८९	गु	२९/०३/९०	श	१५/०१/९१	बु	२८/१२/९१	के	०३/११/९२	शु	११/०३/९३	चं	११/०३/९४	मं	०९/०१/९५	रा	१०/०८/९५
गु	२३/०६/८९	श	०७/०५/९०	बु	११/०३/९१	के	१०/०२/९२	शु	१०/११/९२	सू	११/०५/९३	मं	०५/०४/९४	रा	२२/०१/९५	गु	३१/१०/९५
श	०६/०८/८९	बु	२२/०६/९०	के	२९/०४/९१	शु	२८/०२/९२	सू	०२/१२/९२	चं	२९/०५/९३	रा	२३/०४/९४	गु	२३/०२/९५	श	१३/०१/९६
बु	२७/०९/८९	के	०३/०८/९०	शु	२०/०५/९१	सू	२०/०४/९२	चं	०८/१२/९२	मं	२८/०६/९३	गु	०८/०६/९४	श	२३/०३/९५	बु	०८/०४/९६
के	१२/११/८९	शु	२०/०८/९०	सू	१७/०७/९१	चं	०६/०५/९२	मं	१९/१२/९२	रा	२०/०७/९३	श	१८/०७/९४	बु	२६/०४/९५	के	२५/०६/९६
शु	०१/१२/८९	सू	०८/१०/९०	चं	०३/०८/९१	मं	०१/०६/९२	रा	२६/१२/९२	गु	१२/०९/९३	श	०४/०९/९४	के	२६/०५/९५	शु	२७/०७/९६
सू	२५/०१/९०	चं	२२/१०/९०	मं	०१/०९/९१	रा	१९/०६/९२	गु	१४/०१/९३	श	३१/१०/९३	के	१८/१०/९४	शु	०७/०६/९५	सू	२६/१०/९६
चं	११/०२/९०	मं	१५/११/९०	रा	२१/०९/९१	गु	०४/०८/९२	श	३१/०१/९३	बु	२८/१२/९३	शु	०४/११/९४	सू	१३/०७/९५	चं	२३/११/९६
मं	१०/०३/९०	रा	०३/१२/९०	गु	१२/११/९१	श	१५/०९/९२	बु	२१/०२/९३	के	१८/०२/९४	सू	२५/१२/९४	चं	२४/०७/९५	मं	०७/०१/९७

चं–गु	चं–श	चं–बु	चं–के	चं–शु	चं–सू	मं–मं	मं–रा	मं–गु
०८/०२/२०९७	१०/०६/२०९८	१०/०१/२१००	११/०६/२१०१	१०/०१/२१०२	११/०९/२१०३	११/०३/२१०४	०७/०८/२१०४	२७/०८/२१०५
१०/०६/२०९८	१०/०१/२१००	११/०६/२१०१	१०/०१/२१०२	११/०९/२१०३	११/०३/२१०४	०७/०८/२१०४	२७/०८/२१०५	०३/०८/२१०६

गु	०८/०२/९७	श	१०/०६/९८	बु	१०/०१/००	के	११/०६/०१	शु	१०/०१/०२	सू	११/०९/०३	मं	११/०३/०४	रा	०७/०८/०४	गु	२७/०८/०५
श	१४/०४/९७	बु	१०/०९/९८	के	२५/०३/००	शु	२३/०६/०१	सू	२१/०४/०२	चं	२०/०९/०३	रा	२०/०३/०४	गु	०४/१०/०४	श	११/१०/०५
बु	३०/०६/९७	के	०१/१२/९८	शु	२४/०४/००	सू	२९/०७/०१	चं	२२/०५/०२	मं	०५/१०/०३	गु	११/०४/०४	श	२४/११/०४	बु	०४/१२/०५
के	०७/०९/९७	शु	०३/०१/९९	सू	१९/०७/००	चं	०८/०८/०१	मं	१२/०७/०२	रा	१६/१०/०३	श	०१/०५/०४	बु	२५/०१/०५	के	२२/०१/०६
शु	०६/१०/९७	सू	१०/०४/९९	चं	१४/०८/००	मं	२६/०८/०१	रा	१६/०८/०२	गु	१२/११/०३	बु	२५/०५/०४	के	२०/०३/०५	शु	११/०२/०६
सू	२६/१२/९७	चं	०९/०५/९९	मं	२६/०९/००	रा	०८/०९/०१	गु	१५/११/०२	श	०६/१२/०३	के	१५/०६/०४	शु	१२/०४/०५	सू	०८/०४/०६
चं	१९/०१/९८	मं	२६/०६/९९	रा	२६/१०/००	गु	१०/१०/०१	श	०५/०२/०३	बु	०४/०१/०४	शु	२४/०६/०४	सू	१४/०६/०५	चं	२५/०४/०६
मं	०१/०३/९८	रा	३०/०७/९९	गु	११/०१/०१	श	०७/११/०१	बु	१२/०५/०३	के	३०/०१/०४	सू	१९/०७/०४	चं	०४/०७/०५	मं	२४/०५/०६
रा	२९/०३/९८	गु	२४/१०/९९	श	२१/०३/०१	बु	११/१२/०१	के	०६/०८/०३	शु	१०/०२/०४	चं	२६/०७/०४	मं	०५/०८/०५	रा	१३/०६/०६

मं–श	मं–बु	मं–के	मं–शु	मं–सू	मं–चं	रा–रा	रा–गु	रा–श
०३/०८/२१०६	१२/०९/२१०७	०८/०९/२१०८	०४/०२/२१०९	०६/०४/२११०	१२/०८/२११०	१३/०३/२१११	२३/११/२११३	१८/०४/२११६
१२/०९/२१०७	०८/०९/२१०८	०४/०२/२१०९	०६/०४/२११०	१२/०८/२११०	१३/०३/२१११	२३/११/२११३	१८/०४/२११६	२३/०२/२११९

श	०३/०८/०६	बु	१२/०९/०७	के	०८/०९/०८	शु	०४/०२/०९	सू	०६/०४/१०	चं	१२/०८/१०	रा	१३/०३/११	गु	२३/११/१३	श	१८/०४/१६
बु	०६/१०/०६	के	०२/११/०७	शु	१७/०९/०८	सू	१६/०४/०९	चं	१२/०४/१०	मं	३०/०८/१०	गु	०८/०८/११	श	२०/०३/१४	बु	३०/०९/१६
के	०२/१२/०६	शु	२३/११/०७	सू	११/१०/०८	चं	०७/०५/०९	मं	२३/०४/१०	रा	११/०९/१०	श	१७/१२/११	बु	०६/०८/१४	के	२४/०२/१७
शु	२६/१२/०६	सू	२२/०१/०८	चं	१९/१०/०८	मं	१२/०६/०९	रा	०१/०५/१०	गु	१३/१०/१०	बु	२२/०५/१२	के	०८/१२/१४	शु	२६/०४/१७
सू	०३/०३/०७	चं	१०/०२/०८	मं	३१/१०/०८	रा	०७/०७/०९	गु	२०/०५/१०	श	१०/११/१०	के	०८/१०/१२	शु	२८/०१/१५	सू	१६/१०/१७
चं	२४/०३/०७	मं	११/०३/०८	रा	०९/११/०८	गु	०९/०९/०९	श	०६/०६/१०	बु	१४/१२/१०	शु	०५/१२/१२	सू	२३/०६/१५	चं	०७/१२/१७
मं	२६/०४/०७	रा	०१/०४/०८	गु	०१/१२/०८	श	०४/११/०९	बु	२६/०६/१०	के	१३/०१/११	सू	१८/०५/१३	चं	०६/०८/१५	मं	०४/०३/१८
रा	२०/०५/०७	गु	२५/०५/०८	श	२१/१२/०८	बु	११/०१/१०	के	१४/०७/१०	शु	२६/०१/११	चं	०६/०७/१३	मं	१८/१०/१५	रा	०४/०५/१८
गु	२०/०७/०७	श	१३/०७/०८	बु	१४/०१/०९	के	१२/०३/१०	शु	२२/०७/१०	सू	०२/०३/११	मं	२७/०९/१३	रा	०८/१२/१५	गु	०७/१०/१८

कृतिकादि अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा जन्म समय पर: मंगल ३ वर्ष ० मास ७ दिन

ग्रहों की अंतर्दशायें

मं–८ वर्ष	बु–१७ वर्ष	श–१० वर्ष	गु–१९ वर्ष	रा–१२ वर्ष	शु–२१ वर्ष	सू–६ वर्ष	चं–१५ वर्ष	मं–८ वर्ष
०१/०१/२०००	०८/०१/२००३	०८/०१/२०२०	०८/०१/२०३०	०७/०१/२०४९	०७/०१/२०६१	०७/०१/२०८२	०८/०१/२०८८	०८/०१/२१०३
०८/०१/२००३	०८/०१/२०२०	०८/०१/२०३०	०७/०१/२०४९	०७/०१/२०६१	०७/०१/२०८२	०८/०१/२०८८	०८/०१/२१०३	०२/०१/२१०८

मं	00/00/00	बु	०८/०१/०३	श	०८/०१/२०	गु	०८/०१/३०	रा	०७/०१/४९	शु	०७/०१/६१	सू	०७/०१/८२	चं	०८/०१/८८	मं	०८/०१/०३
बु	00/00/00	श	१२/०९/०५	गु	१२/१२/२०	रा	१३/०५/३३	शु	०९/०५/५०	सू	०७/०२/६५	चं	०९/०५/८२	मं	०७/०२/९०	बु	१३/०८/०३
श	00/00/00	गु	१०/०४/०७	रा	१५/०९/२२	शु	२३/०६/३५	सू	०८/०९/५२	चं	०९/०४/६६	मं	१०/०३/८३	बु	२०/०३/९१	श	१५/११/०४
गु	00/00/00	रा	०६/०४/१०	शु	२६/१०/२३	सू	०३/०३/३९	चं	०९/०५/५३	मं	०९/०३/६९	बु	१९/०८/८३	श	२९/०७/९३	गु	१३/०८/०५
रा	00/00/00	शु	२५/०२/१२	सू	०५/१०/२५	चं	२३/०३/४०	मं	०८/०१/५५	बु	२८/०९/७०	श	२९/०७/८४	गु	१८/१२/९४	रा	०९/०१/०७
शु	०१/०१/00	सू	१६/०६/१५	चं	२६/०४/२६	मं	११/११/४२	बु	२९/११/५५	श	१८/०१/७४	गु	१७/०२/८५	रा	०८/०८/९७	शु	०२/०१/०८
सू	१९/०६/०१	चं	२६/०५/१६	मं	१५/०९/२७	बु	०८/०४/४४	श	१८/१०/५७	गु	२९/१२/७५	रा	०९/०३/८६	शु	०९/०४/९९	सू	00/00/00
चं	२८/११/०१	मं	०५/१०/१८	बु	१२/०६/२८	श	०६/०४/४७	गु	२८/११/५८	रा	०८/०९/७९	शु	०८/११/८६	सू	१०/०३/०२	चं	00/00/00

प्रत्यंतर दशा

बु–गु	बु–रा	बु–शु	बु–सू	बु–चं	बु–मं	श–श	श–गु	श–रा
१०/०४/२००७	०६/०४/२०१०	२५/०२/२०१२	१६/०६/२०१५	२६/०५/२०१६	०५/१०/२०१८	०८/०१/२०२०	१२/१२/२०२०	१५/०९/२०२२
०६/०४/२०१०	२५/०२/२०१२	१६/०६/२०१५	२६/०५/२०१६	०५/१०/२०१८	०८/०१/२०२०	१२/१२/२०२०	१५/०९/२०२२	२६/१०/२०२३

गु	१०/०४/०७	रा	०६/०४/१०	शु	२५/०२/१२	सू	१६/०६/१५	चं	२६/०५/१६	मं	०५/१०/१८	श	०८/०१/२०	गु	१२/१२/२०	रा	१५/०९/२२
रा	१९/१०/०७	शु	२२/०६/१०	सू	१७/१०/१२	चं	०५/०७/१५	मं	२३/०९/१६	बु	०८/११/१८	गु	०९/०२/२०	रा	०४/०४/२१	शु	३०/१०/२२
शु	१७/०२/०८	सू	०३/११/१०	चं	२३/१२/१२	मं	२२/०८/१५	बु	२६/११/१६	श	२०/०१/१९	रा	०८/०४/२०	शु	१४/०६/२१	सू	१७/०१/२३
सू	१६/०९/०८	चं	११/१२/१०	मं	०८/०६/१३	बु	१७/०९/१५	श	१०/०४/१७	गु	०३/०३/१९	शु	१६/०५/२०	सू	१७/१०/२१	चं	०९/०२/२३
चं	१६/११/०८	मं	१७/०३/११	बु	०६/०९/१३	श	१०/११/१५	गु	२९/०६/१७	रा	२३/०५/१९	सू	२१/०७/२०	चं	२२/११/२१	मं	०६/०४/२३
मं	१७/०४/०९	बु	०७/०५/११	श	१५/०३/१४	गु	१२/१२/१५	रा	२८/११/१७	शु	१४/०७/१९	सू	०८/०८/२०	मं	१९/०२/२२	बु	०६/०५/२३
बु	०७/०७/०९	श	२४/०८/११	गु	०५/०७/१४	रा	११/०२/१६	शु	०४/०३/१८	सू	११/१०/१९	चं	२४/०९/२०	बु	०७/०४/२२	श	०९/०७/२३
श	२६/१२/०९	गु	२६/१०/११	रा	०२/०२/१५	शु	२०/०३/१६	सू	१९/०८/१८	चं	०५/११/१९	बु	१९/१०/२०	श	१८/०७/२२	गु	१६/०८/२३

योगिनी दशा

भोग्य योगिनी दशा जन्म समय पर: पिंगला १ वर्ष 0 मास ७ दिन

पिंगला–२ वर्ष	धान्या–३ वर्ष	भ्रामरी–४ वर्ष	भद्रिका–५ वर्ष	उल्का–६ वर्ष	सिद्धा–७ वर्ष	संकटा–८ वर्ष	मंगला–१ वर्ष
०१/०१/२०००	०८/०१/२००१	०८/०१/२००४	०८/०१/२००८	०८/०१/२०१३	०८/०१/२०१९	०८/०१/२०२६	०८/०१/२०३४
०८/०१/२००१	०८/०१/२००४	०८/०१/२००८	०८/०१/२०१३	०८/०१/२०१९	०८/०१/२०२६	०८/०१/२०३४	०८/०१/२०३५

पिंगला	00/00/00	धान्या	०८/०१/०१	भ्रामरी	०८/०१/०४	भद्रिका	०८/०१/०८	उल्का	०८/०१/१३	सिद्धा	०८/०१/१९	संकटा	०८/०१/२६	मंगला	०८/०१/३४
धान्या	00/00/00	भ्रामरी	०९/०४/०१	भद्रिका	१९/०६/०४	उल्का	१८/०९/०८	सिद्धा	०८/०१/१४	संकटा	१९/०५/२०	मंगला	१९/१०/२७	पिंगला	१८/०१/३४
भ्रामरी	00/00/00	भद्रिका	०९/०८/०१	उल्का	०८/०१/०५	सिद्धा	१९/०७/०९	संकटा	१०/०३/१५	मंगला	०८/१२/२१	पिंगला	०८/०१/२८	धान्या	०७/०२/३४
भद्रिका	00/00/00	उल्का	०८/०१/०२	सिद्धा	०८/०९/०५	संकटा	१०/०७/१०	मंगला	०९/०७/१६	पिंगला	१७/०२/२२	धान्या	१९/०६/२८	भ्रामरी	१०/०३/३४
उल्का	०१/०१/00	सिद्धा	१०/०७/०२	संकटा	१९/०६/०६	मंगला	१९/०८/११	पिंगला	०८/०९/१६	धान्या	०९/०७/२२	भ्रामरी	१७/०२/२९	भद्रिका	१९/०४/३४
सिद्धा	१८/०२/00	संकटा	०८/०२/०३	मंगला	१०/०५/०७	पिंगला	०९/१०/११	धान्या	०८/०१/१७	भ्रामरी	०८/०२/२३	भद्रिका	०८/०१/३०	उल्का	०९/०६/३४
संकटा	०९/०७/00	मंगला	०९/१०/०३	पिंगला	२०/०६/०७	धान्या	१९/०१/१२	भ्रामरी	०९/०७/१७	भद्रिका	१९/११/२३	उल्का	१८/०२/३१	सिद्धा	०९/०८/३४
मंगला	१८/१२/00	पिंगला	०९/११/०३	धान्या	०९/०९/०७	भ्रामरी	१९/०६/१२	भद्रिका	१०/०३/१८	उल्का	०८/११/२४	सिद्धा	१९/०६/३२	संकटा	१९/१०/३४

काल चक्र दशा

काल चक्र की प्रथम दशा

दशा के कुल वर्ष	: ८५ वर्ष
काल चक्र	: ३ वर्ष ७ मास २० दिन
भोग्य मिथुन–बुध	: ३ वर्ष ७ मास २० दिन
नक्षत्र तथा चरण	: स्वाति २
देह	: मकर
जीव	: मिथुन

काल चक्र की द्वितीय दशा

दशा के कुल वर्ष	: ८३ वर्ष
देह	: वृषभ
जीव	: मिथुन

राशिकी अंतर्दशा

मि–९ वर्ष	वृष–१६ वर्ष	मे–७ वर्ष	मी–१० वर्ष	कु–४ वर्ष	म–४ वर्ष	ध–१० वर्ष	मे–७ वर्ष	वृष–१६ वर्ष
०१/०१/२०००	२२/०८/२००३	२२/०८/२०१९	२२/०८/२०२६	२१/०८/२०३६	२१/०८/२०४०	२१/०८/२०४४	२२/०८/२०५४	२१/०८/२०६१
२२/०८/२००३	२२/०८/२०१९	२२/०८/२०२६	२१/०८/२०३६	२१/०८/२०४०	२१/०८/२०४४	२२/०८/२०५४	२१/०८/२०६१	२१/०८/२०७७

मि	00/00/00	वृष	२२/०८/०३	मे	२२/०८/१९	मी	२२/०८/२६	कु	२१/०८/३६	म	२१/०८/४०	ध	२१/०८/४४	मे	२२/०८/५४	वृष	२१/०८/६१
म	00/00/00	मे	२२/०९/०६	मी	२५/०३/२०	कु	०५/११/२७	म	३१/१०/३६	ध	३१/१०/४०	मे	०४/११/४५	वृष	२५/०३/५५	मि	२१/०९/६४
कु	00/00/00	मी	२८/०१/०८	कु	२७/०१/२१	म	२९/०४/२८	ध	०९/०१/३७	मे	२५/०४/४१	वृष	०८/०९/४६	मि	३०/०७/५६	वृष	१७/०६/६६
मी	00/00/00	कु	०१/०१/१०	म	३०/०५/२१	ध	२२/१०/२८	मे	०४/०७/३७	वृष	२६/०८/४१	मि	१२/०८/४८	वृष	०३/०५/५७	मे	१७/०७/६९
वृ	00/00/00	म	०९/१०/१०	ध	३०/०९/२१	मे	०५/०१/३०	वृष	०४/११/३७	मि	०४/०६/४२	वृष	१२/०९/४९	मे	०८/०९/५८	मी	२२/११/७०
तु	00/00/00	ध	१८/०७/११	मे	०४/०८/२२	वृष	०९/११/३०	मि	१३/०८/३८	वृष	०९/११/४२	मे	१८/०८/५१	मी	१२/०४/५९	कु	२६/१०/७२
क	०१/०१/00	मे	२१/०६/१३	वृष	०८/०३/२३	मि	१३/१०/३२	वृष	१८/०१/३९	मे	१८/०८/४३	मी	२१/०६/५२	कु	१४/०२/६०	म	०४/०८/७३
कर्क	२०/११/00	वृष	२७/१०/१४	मि	१३/०७/२४	वृष	१३/११/३३	मे	२७/१०/३९	मी	१९/१२/४३	कु	०४/०९/५३	म	१६/०६/६०	ध	१२/०५/७४
सिं	१०/०२/०३	मि	२६/११/१७	वृष	१६/०४/२५	मे	१८/१०/३५	मी	२७/०२/४०	कु	१२/०६/४४	म	२७/०२/५४	ध	१७/१०/६०	मे	१५/०४/७६

मंगली विचार

SAMPLE_P3 मंगली है क्योंकि मंगल लग्न से चतुर्थ स्थान में, शुक्र से चतुर्थ स्थान में है।

मंगली दोष लग्न से दूर नहीं होता इस से

विवाहोपरांत पारिवारिक जीवन संघर्षपूर्ण और तनावपूर्ण हो सकता है। जीवनसाथी से मतभेद के कारण वैवाहिक जीवन में सुख की कमी हो सकती है। सास से आपके संबंध मधुर न होने की संभावना है। मंगली दोष शुक्र से दूर नहीं होता इस से कारण विवाहित जीवन में बाधाएं आ सकती हैं। ११ ११ ५

उपयुक्त रत्न

नीलम– शनि का रत्न नीलम है। शनि द्वारा उत्पन्न दोष को दूर करने के लिए तथा उसे बलवान बनाने के लिए आपको नीलम धारण करना चाहिए। नीलम के धारण करने से आपको गृह–भूमि तथा वाहन की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपको मानसिक शांति प्रदान करेगा। संभव है कि इस रत्न के पहनने से आपमें शक्ति, स्फूर्ति और साहस की वृद्धि हो तथा आप कोई नया उद्योग भी प्रारम्भ कर सकें। सवा चार रत्ती का नीलम लेकर, उसे पंच धातु अथवा स्टील की अगूंठी में जड़वाकर, शुक्लपक्ष के किसी शनिवार को सूर्योदय के समय स्वच्छ जल अथवा कच्चे दूध से धोकर अगरबत्ती की धूप दिखाकर, ईश्वर का स्मरण करते हुए मध्यमा में पहनना चाहिए। नीलम पहनने से श्वास संबंधी रोग तथा पैरों के कष्ट दूर हो सकते हैं। नीलम के बदले आप जिरकान, कटैला, नीला तामड़ा और लाजवर्त भी पहन सकते हैं।

साढ़ेसातीशनि के साढ़ेसात वर्ष

आपकी दूसरी साढ़ेसाती २२ अक्तूबर २०३८ से शुरु होकर ७ दिसम्बर २०४६ को समाप्त होगी। इस अवधि में आपके लिए लाभप्रद परिवर्तन होंगे। आपको कोयला अथवा लोहे का व्यापार लाभप्रद रहेगा। इस समय आप प्रगति पथ पर बढ़ते चले जाएंगे। आपकी ढैय्या २५ सितम्बर २०४१ से शुरु होकर १२ दिसम्बर २०४३ को समाप्त होगी। आप परदेश वास कर सकते हैं। आपको बार–बार यात्रा करनी पड़ेगी। आपको इस समय में मिश्रित फल प्राप्त होगा। आप स्वजनों से दूर परदेश में रहेंगे। आपको शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपका जीवनसाथी अस्वस्थ हो सकता है। आपकी धन हानि हो सकती है।

आपकी तीसरी साढ़ेसाती ३० अगस्त २०६८ से शुरु होकर ११ अक्तूबर २०७६ को समाप्त होगी। मान–सम्मान, उद्योग–धंधे और द्रव्य प्राप्ति के लिए यह अनुकूल समय है। आपका यश बढ़ेगा और सभी इष्ट कार्य संपन्न हो जाएंगे। संतान की ओर से कुछ चिंता हो सकती है। आपकी ढैय्या ४ नवम्बर २०७० से शुरु होकर २३ अक्तूबर २०७३ को समाप्त होगी। आप अपने जीवन में संघर्ष तो करेंगे परंतु संघर्ष के बाद आपको सफलता प्राप्त हो जाएगी। आपको परदेश में रहना पड़ सकता है तथा बहुत अधिक यात्राएं करनी पड़ सकती है। आप स्थानांतरण के कारण परदेश में रह सकते हैं। आपके कार्यों में रुकावट पड़ सकती है। आपका पुत्र कुसंगति में पड़ सकता है।

चन्द्रमा पर से शनि का गोचर भ्रमण होने के समय आप निराश हो सकते हैं। अधिक परिश्रम करने पर भी आपको वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हो पाएंगे। इस अवधि में घोड़ेकी नाल से बनी लोहे की अंगूठी या नाव के लोहे से बनी अगूंठी मध्यमा अगुंली में आपके लिए पहनना उचित होगा। आपको हनुमान मंदिर या शनिदेव के मंदिर में जाना चाहिए। दान में सरसों का तेल तथा काले उड़द देना चाहिए। शनि भगवान की उपासना मंत्रों द्वारा कीजिए तथा शनिवार का व्रत रखना आपके लिए उपयोगी होगा।

योग कारक एवं मारक

सूर्य, चन्द्रमा और गुरु आपके लिए योग कारक है। जब भी योगकारक ग्रहों की दशा या अर्न्तदशा आएगी आप सदैव प्रसन्नचित्त रहेंगे तथा सभी क्षेत्रों में सफलता पाएंगे।

बुध और शुक्र आपके लिए मारक है। जब भी मारक ग्रहों की दशा या अर्न्तदशा आएगी उस समय आप परेशान हो सकते हैं ऐसे समय आपको सावधानी से काम करना चाहिए तथा अनावश्यक जोखिम नहीं लेना चाहिए।

सामान्य गुणों का विवेचन

आपके जन्म के समय, उस स्थान पर वृश्चिक राशि का १५ अंश पुर्व क्षितिज पर उदय हो रहा था। लग्न स्वामी मंगल, द्रेष्काण स्वामी गुरू,नक्षत्र स्वामी शनि तथा नवमांश स्वामी मंगल औरअंश स्वामी गुरू के नक्षत्रीय प्रभाव से आपके व्यक्तित्व कानिर्माण होता है।

आपकी जन्म पत्रिका में ग्रहों के संयुक्त प्रभाव सेयह विदित होता है कि आप चतुर, मननशील तथा उत्तमप्रशासकीय योग्यता सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप विचारशीलतथा साधन सम्पन्न हैं। आपको शक्ति और अधिकार सहजही प्राप्त हो जाते हैं। आपमें दृढ़ संकल्प शक्ति तथासाहस है। आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सतत तथाव्यवस्थित रूप से प्रयास करते हैं। आप अपनी उदारतातथा सहृदयता के कारण, अपने सुखों में दूसरों को भीशामिल करते हैं। आप किंचित अशान्त रहने वाले किन्तुसाहसी व्यक्ति हैं। आप उच्च आध्यात्मिक व्यक्ति हैं तथास्वप्नों से भी आपको प्रेरणा मिलती है।

वृश्चिक राशि के प्रभाव से आप अत्यधिक भावप्रवणहैं। भावनाओं को नियंत्रित करने पर आप अत्यंतशक्तिसम्पन्न हो सकते हैं और इच्छानुसार कोई भी कार्यहाथ में ले सकते हैं। आप कभी निष्क्रिय नहीं रहते औरविघ्न–बाधाओं से संघर्ष करने में आपको आनंद आता है।आप कभी हताश नहीं होते और अंत तक संघर्ष करते हैं।भावनाओं पर नियंत्रण न कर पाने के कारण आपईर्ष्याग्रस्त हो सकते हैं। आप सदा विषयासक्त रहेंगे। आपशीघ्र क्रोधित हो जाते हैं। प्रायः आप अपने काम दूसरें परन छोड़ कर स्वयं करना चाहते हैं और जो भी काम लेतेहैं उसमें अत्यधिक लिप्त हो जाते हैं। फलस्वरूप आपकोसामर्थ्य से अधिक काम करना पड़ता है। आपमें असीमशक्ति और धैर्य है और संकट के समय में दृढ़ रहते हैं।आप लंबे समय तक काम के तनाव और बोझ को सहनकर सकते हैं।

यद्यपि आप स्वयं दुर्बल नहीं हैं और दूसरों मेंभी दुर्बलता नापसन्द करते हैं किन्तु आप प्रायः दूसरों कीउदारतापूर्वक सहायता करते हैं। आप दूसरों की सदेच्छापर सहज ही विश्वास नहीं करते और उन्हें संदेह कीदृष्टि से देखते हैं। आप अपना मन्तव्य और गहनभावनाओं को प्रगट नहीं करते और किसी को विश्वास मेंनहीं लेते। किसी से संघर्ष होने पर आप किसी प्रकार कीरियायत नहीं करते और न उसकी अपेक्षा करते हैं।आपकी बोलने और कार्य करने की गति तीव्र होती हैजिससे आपका व्यवहार उत्तेजनात्मक लगता है। आपकीवाणी कटु और व्यंग्यात्मक होती है और आप सहसाक्रोधावेगपूर्ण हो जाते हैं। फलतः आपसे शत्रुता मोल लेनाभारी पड़ता है तथापि आपकी मित्रता सच्ची होती है।

आप उपक्रमशील और श्रेष्ठ निर्णय बुद्धि सम्पन्नहैं। आप रहस्य और गूढ़ विषयों के अनुसंधान में रुचिलेते हैं। यद्यपि आपकी बुद्धि तीक्ष्ण है किन्तु आपके विचारनिश्चित होते हैं। आप व्यक्तिगत जीवन में अपने लिए जीतेहैं। आपमें दूसरों में गलती खोजने की प्रवृत्ति है। आपबदले की भावना रखते हैं और समझौता नहीं करनाचाहते। विषयासक्ति आपकी विशेष कमजोरी है।

कुम्भ में मंगल इस बात का सूचक है कि जीवनके संबंध में आपके सिद्धान्त उच्च और दृष्टिकोण आधुनिकहै। आप क्रियाशील होने की अपेक्षा विचारशील अधिक हैं।चुनौतियों का सामना धैर्य के साथ करने वाले अच्छे नेताके सभी गुण आपमें हैं। प्रभारी पद पर भलीभांति कामकरना और तर्क आश्रित परम्पराओं का ही पालन करनाआपकी विशेषता है।

वाद–विवाद में तीक्ष्णबुद्धि, सुनिश्चित विचार औरदूसरों से सरलता से प्रभावित न होने के गुण आपमें हैं।अपने अचानक परिवर्तनों से आप दूसरों को आश्चर्य मेंडाल देते हैं।

आप अत्यन्त स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति हैं। अपनेरुखे व्यवहार से अपने समर्थकों को खो देना, क्रोध मेंउग्र हो जाना आपकी प्रवृत्ति है।

चतुर्थ भाव में मंगल माता, शिक्षा और घरेलूमामलों के लिये अनुकूल नहीं है। माता–पिता से मनमुटावया उनमें से किसी एक से अपेक्षाकृत शीघ्र वियोग होसकता है। भाई–बहनों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध न रहनेतथा जीवन–साथी से मतभेदों के कारण विवाहित जीवनदुखी हो सकता है। इस कारण संबंध विच्छेद भी हो सकत है। जीवन का अंतिम चरण विशेष कष्टपूर्ण होसकता है। खराब पाचन शक्ति, अम्ल आदि के कारण आपअस्वस्थ रहेंगे।

किसी बड़े भाई या बहन के कारण आप अत्यन्तशोकाकुल और प्रभावित होंगे। पारिवारिक सम्पत्ति के कारणमुकदमेबाजी की संभावना है।

धनु राशि में द्वितीय भाव में सूर्य होने से आपस्वभाव से मिलनसार, उत्साही और उच्च आदर्शों केसमर्थक हैं। अपनी सहनशीलता के कारण आप दूसरों केसाथ मिलकर कार्य कर सकते हैं। तथापि, आपकीस्पष्टवादिता कभी–कभी दूसरों को आहत कर सकती है।

यह स्थिति अधिकार प्राप्त और प्रभावशाली व्यक्तियोंद्वारा आपके प्रयत्नों को प्रशंसित और पुरस्कृत करायेगीऔर आपको लाभ दिलायेगी। अधिकार के सही प्रयोग द्वाराऔर उच्च पदों पर कार्य करके आप धन कमाएंगे।

द्वितीय भाव में धनु राशि आपको पर्याप्त धनदिलाएगी और कभी–कभी विशेष भाग्योदय भी होगा। आपअपनी अनेक गतिविधियों के संयोग से धन कमा सकेंगेकिन्तु कभी–कभी असावधानी के कारण हानि भी हो सकतीहै। आपकी आय और व्यय में उतार–चढ़ाव आते रहेंगे।आपकी अति उदार प्रवृत्ति और मुकदमेबाजी के कारण भीआपको हानि हो सकती है।

आपके परिवार में कुछ गम्भीर समस्याएं उत्पन्नहोने और अप्रिय घटनाएं होने की संभावना है तथा साथही संतान से भी आपको सीमित सुख मिलने की संभावनाहै। बुरी आदतों अथवा व्यसनों से आपके धन औरस्वास्थ्य की हानि हो सकती है। असमय ही आपको दृष्टिदोष होने की आशंका हैं।

शांति आपके जीवन का मुख्य लक्ष्य है। आपजीवन में उच्च आदर्शों को अपनाते हैं और भावुकता कोमहत्त्व नहीं देते हैं। आप विचारों के आदान–प्रदान मेंरुचि लेते हैं तथा आप उत्तम श्रोता ही नहीं बल्किपक्ष–समर्थक भी होंगे। यह आपके विचारों को वास्तविकतामें परिवर्तित करने में सहायक होगा। समानता आपकामुख्य गुण है तथा अपने अहं के लिए दूसरों को हानिपहुंचाने का प्रयत्न नहीं करते।

आप अपने चुने हुए कार्य में सफल होंगे। अपनीशिक्षा तथा कार्यकुशलता से आप अपने सहयोगियों में प्रियहोंगे। आप वर्तमान का आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं औरउस आनन्द में वृद्धि की दृष्टि से अतीत तथा भविष्य कोभी सम्बद्ध करते हैं।

आपको बचपन में बहुत प्रेम तथा स्नेह प्राप्त होगाऔर इसी कारण जीवन–पर्यन्त आप माता–पिता से सहायतातथा सहानुभूति प्राप्त करेंगे। आपकी संतान भी आपसेप्रसन्नता प्राप्त करेगी। पुरुषों–महिलाओं तथा किसी भीआयु वर्ग के लोगों से आपके संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे। आपअपने जन्म स्थान पर कार्य करने में अधिक सफल होसकते हैं किन्तु बाहर भी आप अपने आस–पास केवातावरण को घर जैसा ही बनाने में सक्षम हैं।

आपमें उत्तरदायित्व की भावना है तथा आप प्रायःबिना अधिक प्रयास के ही सफलता प्राप्त कर लेते हैं।अपने भावनात्मक, सामाजिक तथा शारीरिक हितों के प्रतिआपमें आत्मविश्वास है। यद्यपि आप अत्यधिक महत्त्वाकांक्षीनहीं हैं किन्तु अपने आत्मविश्वास से आप उच्च सफलताप्राप्त कर लेते हैं। आप उचित समय पर उचित कार्यकरते हैं और दूसरे इसे आपका भाग्य मानते हैं। आपकीअच्छी आदतों के कारण आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

आप एक संवेदनशील और विचारशील व्यक्ति हैं।आपकी स्मरणशक्ति तथा सीखने की क्षमता असाधारण है।आप एक समझदार व्यक्ति हैं तथा जीवन की किसी भीस्थिति में समझौता कर लेते हैं। आपकी उदारता के कारणआपके बहुत से मित्र होंगे। आप अच्छी तरह बातचीतकरते हैं तथा अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए बहुतअधिक अध्ययन करते हैं। आपका मैत्रीपूर्ण स्वभाव तथारचनात्मक दृष्टिकोण चारों ओर प्रसन्नता का वातावरणनिर्माण करता है। निष्ठाहीनता तथा बेईमानी की आपकोअनुभूति हो जाती है।

आपके जनसंपर्क शीघ्र ही बन जाते हैं। जनता सेसंबंधित व्यवसायों में आप अत्यंत सफल होंगे। अन्यव्यक्तियों के साथ व्यवहार में चतुरता बरतने के कारणअन्य व्यक्ति आपके साहचर्य में सहजता का अनुभव करतेहैं। आप किसी भी कार्य के विस्तार पर पूर्ण ध्यान देते हैंजिससे आपके कार्य में पूर्णता आ जाती है।

आप चतुर, प्रसन्न एवं विजयी व्यक्तियों सेभावनात्मक संबंध स्थापित कर लेते हैं और इन संबंधोंको बनाए रखने का प्रयत्न करते हैं। आप अपनेजीवन–साथी के साथ कार्य करके वर्तमान और भविष्य कासुखद संयोग उपस्थित करते हैं। आपको उन अभिरूचियोंसे आनन्द प्राप्त होता है जिनमें आपके प्रिय संलग्न हों।आप साथ–साथ कार्य करने में आनन्द प्राप्त करते हैं औरसभी वस्तुओं का उपभोग बांट कर करने के लिए तैयाररहते हैं। आप अपने परिवेश को समृद्ध बनाने में सदैवयोगदान देते हैं।

आप अपने अतीत और अपने माता–पिता कीपरिस्थितियों से अभिभूत हैं। इनसे छुटकारा पाइए औरभविष्य की ओर देखिए। आपका जीवन एकाकी है किन्तुअपने एकाकीपन से दूर भागने के अपने प्रयास मेंकभी–कभी आप दूसरों पर बलपूर्वक छा जाते हैं और यहस्थिति उन्हें आपसे अलग कर देती है।

आप घनिष्ठ किन्तु अस्थायी संबंध बना सकते हैंजोकि शारीरिक चेष्टाओं पर आधारित होंगे, क्योंकि आपसोचते हैं कि भावनात्मक जिम्मेदारी एक बोझ है। अपनादृष्टिकोण निराशाजनक मत रखिए। दीन–दरिद्रों की बातसोचिए और आपको पता चल जाएगा कि आप कितनेभाग्यशाली हैं।

गूढ़–विद्या के क्षेत्र में सतही रुचि न लें क्योंकिआप और अधिक भ्रम में पड़ेंगे।

आप कभी–कभी निराशावादी तथा तनावग्रस्तअनुभव करते हैं। आपमें लोगों तथा घटनाओं के बारे मेंभयभीत रहने की प्रवृत्ति है। जीवन के प्रति आप गंभीरदृष्टिकोण रखते हैं। वृद्ध व्यक्तियों के साथ आपके उत्तमसंबंध होंगे और जब कभी वृद्ध व्यक्ति आपको स्वीकारनहीं करते तो आप एकाकीपन अनुभव करते हैं।

बचपन की कर्त्तव्यनिष्ठा तथा सरल स्वभाव कीभावना से आप अपने लिए उत्तम चरित्र के जीवन–साथीका चुनाव करेंगे। आत्मानुशासन के होते हुए भी आपअसंयमी स्वभाव के व्यक्ति के साथ भी प्रसन्नता अनुभवकरेंगे। आप अपने बच्चों के प्रति उदार रहेंगे।

आप एक जिज्ञासु व्यक्ति हैं और कभी चुपचापनहीं बैठते। आपकी जिज्ञासा अनंत है और किसी भी कार्यको प्रारंभ करने से पूर्व आप उस पर पूर्ण रूप से विचारकरते हैं। आपमें अभिव्यक्ति की सहज क्षमता है जिससेआपके विरोधी भी परास्त हो जाते हैं। आपकी सतर्कताआपको जोखिम भरे कार्यों में संलग्न होने से बचा देतीहै।

आपका सामाजिक शिष्टाचार आपको लोकप्रियबनाता है। किसी भी सार्वजनिक सभा में आपकी उपस्थितिप्रशंसनीय होती है क्योंकि आप सभी व्यक्तियों के साथसहज ही तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। मैत्रीपूर्ण स्वभावतथा बौद्धिक सजगता के कारण आप एक सफल रिपोर्टरबन सकते हैं। यदि आप अध्यापन, वकालत, लेखन याजन–संपर्क संबंधी कोई व्यवसाय अपनाएं तो सम्प्रेषणआपके लिए सहज होगा। आपको संघर्ष प्रिय है अतःराजनीति भी ऐसा क्षेत्र हो सकता है जिस में आप पूर्णतयासफल होंगे।

चुनौतीपूर्ण स्थितियों का सामना करने के लिएआप अपनी शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों तथा भौतिकएवं आध्यात्मिक साधनों का उपयोग करते हैं। आपकोपराजित या शोषित नहीं किया जा सकता क्योंकि आपवाद–विवाद में विजयी रहते हैं।

बुद्धिमान होने के कारण आप अध्यापन, वकालतया लेखन का व्यवसाय आपना सकते हैं।

सम्प्रेषण की अच्छी क्षमता के कारण आपके बहुतसे प्रशंसक होंगे, विशेषकर युवा वर्ग के। अन्य व्यक्तियोंकी धारणा के लिए आप उनका आदर करते हैं। आपमेंयौनेच्छा की अधिकता होगी।

धनु में बुध दर्शाता है कि आप सत्यवादी तथानीरस प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। आप परिणाम का विचारकिए बिना बात कह देते हैं। आप ईमानदार, उदार,मृदुभाषी और स्पष्टवादी हैं तथा दूसरों को धोखा देनापसन्द नहीं करते। आपको सत्य की अनुभूति होती है,परन्तु विभिन्न रुचियों की बहुलता के कारण आपकीमानसिक शक्ति बिखर–सी जाती हैं। आपकी जन्मजात प्रतिभाको विकास की नहीं अपितु केवल उचित निर्देशन कीआवश्यकता है। आपको बौद्धिक प्रतिष्ठा पाप्त होगी। दर्शन,धर्म तथा कानून के माध्यम से आपका मानसिक विकाससंभव है। आप धर्म, गूढ़–रहस्यों तथा दार्शनिक विषयोंके विद्वान हो सकते हैं। धार्मिक तथा नैतिक कार्यों परआप धन व्यय करेंगे।

आप दीर्घ जीवन का आनन्द लेंगे। आपकी आर्थिकस्थिति सुदृढ़ होगी पर

कुछ बड़ी हानियों की भी संभावनाहै। आपका जीवन–साथी प्रतिष्ठित परिवार से सम्बद्ध होगा।उसके असन्तोषी तथा उग्र स्वभाव के कारण आपकाघरेलू जीवन कुछ अशांत हो सकता है। आपके तथाजीवन–साथी के मध्य भारी मतभेद हो सकते हैं तथाअलगाव की भी आशंका है। भाई–बहिनों से भी आपकोअसन्तोष रहेगा। आपकी किसी संतान के ऊंचाई से गिरनेकी आशंका रहेगी।

आप आशावादी हैं और सफलता प्राप्ति के लिएआपको अपनी योग्यता पर विश्वास है। आपको प्रत्येक क्षेत्रका ज्ञान होगा। थोड़े प्रयत्न से ही आप अधिक उपलब्धिप्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षा का व्यवसाय आपके लिए अधिक उपयुक्तरहेगा। आप शीघ्र ही ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं और उसेसुरक्षित रखने में सक्षम हैं। आप सत्यनिष्ठ हैं और आपकाव्यवहार उत्तम है। किसी भी स्तर के समाज में आपमेलजोल स्थापित कर सकते हैं अतः आपको सत्ता प्राप्तव्यक्तियों से लाभ प्राप्त हो सकता है। महत्त्वपूर्णराजनीतिज्ञों से आपके संबंध होंगे तथा समारोहों में आपप्रायः विशेष अतिथि हो सकते हैं।

मेष में गुरु यह दर्शाता है कि आप अत्यंतमहत्त्वाकांक्षी व्यक्ति हैं और अपने व्यवसाय में शिखर तकपहुंचने का लक्ष्य रखेंगे। आप स्वावलम्बी तथा अतिलोकप्रिय व्यक्ति होंगे।

आपकी प्रतिभा ऐसे कार्यों के लिए विशेष उपयुक्तहोगी जिनमें गोपनीयता आवश्यक हो। आपमें संगठन–क्षमताभी होगी और आप राजनीति में ख्याति पा सकते हैं।

आप वाचाल हो सकते हैं तथा झूठी प्रतिष्ठा केलिए वायदे भी कर सकते हैं जिन्हें पूरा नहीं कर पाते।स्वभाव से आप तार्किक हैं तथा अपनी बात को सिद्धकरने में पूर्ण सक्षम सिद्ध होते हैं।

आपकी प्रगति में अनेक बाधाएं आ सकती हैं फिरभी आपके अत्यन्त धनवान होने तथा व्यवसाय में उच्चस्थान प्राप्त करने की संभावना है।

आप धर्मार्थ कार्यों पर उदारतापूर्वक खर्च करनेवाले व्यक्ति हैं। आपको मुकदमे में कुछ धन हानि होने कीआशंका है। आपके अनेक शत्रु हो सकते हैं।

आपके मामा एक प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे। बच्चों सेआपके संबंध अधिक उत्तम नहीं होंगे।

वृश्चिक में शुक्र की स्थिति आपको भावनात्मकव्यक्तित्व प्रदान करती है, परन्तु आप अन्य व्यक्तियों कीभावनाओं को समझ नहीं पाते हैं। आप प्रत्येक कार्य मेंतीव्र उत्साह दिखाते हैं, किन्तु आपके प्रस्ताव अस्वीकारकर दिए जाने पर आपका प्रेम भाव घृणा में परिवर्तित होजाता है। व्यवहारतः रहस्यमय होने पर भी आप अपनागौरव बनाए रखते हैं।

वृश्चिक में शुक्र की स्थिति यह दर्शाती है किआपका प्रेम वासनामय हो सकता है तथा घृणा और बदलेकी प्रवृत्ति जन्म ले सकती है। अपनी शक्ति को रचनात्मककार्यों में लगाना आपके लिए लाभप्रद हो सकता है। आपदृढ़निश्चयी हैं तथा अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करने मेंविश्वास रखते हैं।

भोग–विलास प्रिय होने के कारण सामाजिक दृष्टिसे आपका जीवन निम्नस्तर का हो सकता है तथा आपकेअपयश का कारण बन सकता है।

आप अतिव्ययी हैं तथा अपना सुख–दुख अपनेजीवन–साथी के साथ बांटकर जीना चाहते हैं। अपनी प्रखरबुद्धि के कारण आप रहस्यों की गहराई तक पहुंच सकतेहैं। आपकी रुचि गूढ़ विषयों में हो सकती है।

प्रेम अथवा विवाह में कुछ बाधा अथवा निराशा होसकती है। आपके गुप्त शत्रु आपके लिए चिंता का विषयहो सकते हैं।

आपका जीवन–साथी परिचित परिवार का होगातथा वह अनुभवी, एवं दृढ़निश्चयी भी हो सकता है।

कुछ उतार–चढ़ाव के बावजूद साझेदारी आपकेलिए लाभदायक हो सकती है। पर्याप्त संकटपूर्ण जीवनव्यतीत करने के उपरान्त सुख–समृद्धि प्राप्त होने कीसंभावना है।

मदिरापान में आपकी रुचि हो सकती है। आपकास्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है तथा बवासीर एवं प्रजननअंगों के रोगों की भी आशंका है।

इस युति के कारण आप की किसी से घनिष्ठसंबंध बनाने की इच्छा आसानी से पूरी हो सकती है।इच्छित वस्तु प्राप्त करने के लिए आप किसी भी प्रकारका समझौता कर सकते हैं। आपको अच्छा जीवन पसन्दहै तथा समान रूचि वाले व्यक्तियों की ओर ही आपकाझुकाव होता है। यद्यपि आप अधिक चतुर व्यक्ति के रूपमें विख्यात होना पसन्द नहीं करते तथापि आप किसी भीकार्य के गुण–दोषों पर पूर्ण विचार कर लेते हैं। आपजान बूझकर उनके गुणों का उपयोग करते हैं। आपस्वयं को परिष्कृत व्यक्ति दिखाना चाहते हैं परन्तुचुनौती दिए जाने पर आक्रामक हो उठते हैं। अन्यव्यक्तियों द्वारा अपना शोषण होने के लिए स्वयं जिम्मेदारहोते हुए भी आप क्रोधित हो जाते हैं। आपको अपनीस्वार्थी भावना पर नियंत्रण रखना चाहिए।

मेष में शनि के प्रभाव से आप में भविष्य कीविशाल योजनाएं बनाने तथा उनको क्रियात्मक रूप देने कीविलक्षण योग्यता होगी। आप विचार और व्यवहार दोनो मेंअग्रणी रहेंगे। स्वभाव से आप उग्र होंगे और क्रोध में सीमाका उल्लंधन भी कर सकते हैं।

आप कर्तव्यनिष्ठ तथा उद्यमी हैं तथा प्रत्येक कार्यको अपनी पूरी क्षमता से करते हैं। आप नैतिकता तथाउचित आचरण में विश्वास करते हैं। आप किसी भी रहस्यको गुप्त रख सकते हैं। आपके जीवन का पूर्वार्द्ध बाधाओंएवं विपत्तियों से ग्रस्त हो सकता है क्योंकि शनि आपकोकोई भी साहसपूर्ण पग उठाने से रोकता है तथा आपकोउत्तम आजीविका, सामान्य आर्थिक लाभ, आकांक्षाओं कीपूर्ति आदि से वंचित कर सकता है।

आप स्थायी स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित रहसकते हैं परन्तु आप शारीरिक कष्टों को अपने पथ मेंबाधक नहीं होने देंगे।

आपको वैवाहिक सुख कदाचित ही प्राप्त होगा।अपने जीवन–साथी के कारण आपमें असुरक्षा की भावनाउत्पन्न होगी। आप अपने जीवन–साथी की अस्वस्थता सेभी दुखी हो सकते हैं। भाई–बहिनों अथवा अन्य संबंधियोंद्वारा आपके लिए कठिनाइयां उत्पन्न की जा सकती हैं।आप भारी व्यय से चिन्तित रहेंगे तथा आर्थिक स्थितिअसन्तोषजनक रहेगी।

आपको मातृसुख प्राप्त नहीं होगा तथा मातृपक्ष केसंबंधियों से भी आपके संबंध सौहार्दपूर्ण नहीं होंगे।

दुःस्थान में शनि आपके दीर्घ जीवन के अनुकूलनहीं है। बाल्यावस्था में भी अनिश्चयपूर्ण स्थितियां उत्पन्नहुई होंगी। षष्ठ भाव में शनि स्वास्थ्य के लिए अत्यन्तअशुभ है तथा ऐसे रोगों की ओर इंगित करता है जोपरिस्थितिजन्य तथा असाध्य होंगे। आपको यक्ष्मा,बवासीर, निरन्तर जुकाम तथा पित्ताशय एवं नेत्रों सेसंबंधित रोग हो सकते हैं।

आप मूलतः भय से आकुल रहते हैं, इसलिएआपको काल्पनिक खतरों का भय रहता है। इस भावना सेबचने के लिए आप सदैव विजयी होना चाहते हैं औरइसके परिणामस्वरूप दूसरों के साथ आपके संबंध अधिकउलझनपूर्ण हो जाते हैं। यदि आप इस दृष्टिकोण को नहींबदलते तो अपने से उच्च अधिकारियों के साथ आपकोकठिनाई हो सकती है।

अच्छी हैसियत और उससे प्राप्त होने वाली सुरक्षा,यही आपके चरम लक्ष्य हैं किन्तु आपको यह समझ लेनाहोगा कि अनुचित साधनों से आप ये सुवधिाएं प्राप्त नहींकर सकते। इन्हें प्राप्त करने के लिए आपको अपने उच्चअधिकारियों और साथियों के साथ सहयोगपूर्वक कामकरना होगा। शक्ति–संपन्न और धनवान व्यक्तियों के प्रतिआपकी ईर्ष्या भावना आपको अधीर बना सकती है।

आपके भाई–बहिनों की आपके प्रति सहयोग कीभावना नहीं रहेगी। साथ ही आपको पितृ सुख न मिलनेकी भी आशंका है।

यद्यपि आपकी धर्म में बड़ी आस्था है, किन्तु आपरुढ़िवादी रीतियों को नापसन्द करते हैं। फलतः आपजातीय परंपरा के विपरीत असामान्य तरीके से विवाह करसकते हैं।

अपनी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को सुधारने में आपकोअधिक समय लगेगा। सामान्यतः आप अपने जन्म स्थान सेदूर रहना पसंद करेंगे। आप पर माता–पिता की अपेक्षादादा–दादी का प्रभाव अधिक होगा। आप आसानी से किसीको मित्र नहीं बनाते किन्तु घनिष्टता होने पर संबंधों कोबढ़ा लेते हैं। मित्रों से कम लाभ होने की आशा है।

आपकी सम्मोहन शक्ति तथा आकर्षण से अन्यव्यक्ति आपकी ओर आकर्षित होते हैं। आपका व्यक्तित्वअत्यंत प्रभावशाली है। यद्यपि आप लेन–देन में स्वतंत्र एवंईमानदार हैं परन्तु कभी–कभी आप ऐसा व्यवहार करते हैंजिससे अन्य व्यक्ति आपको हीन भावना से ग्रस्त समझनेलगते हैं।

मित्रता में आप सामाजिक आधार को महत्त्व नहींदेते हैं। आप अपने अर्न्तबोध से यह जान लेते हैं किसमाज की प्रगति व्यक्तियों पर आधारित है समूह परनहीं। इसीलिए आप व्यक्तियों के अधिकार के के प्रतिसजग हैं।

आप वास्तव में भविष्यवादी हैं तथा उस सत्य कोस्वीकार नहीं करते जो भौतिक संसार से संबंधित है। आपएक साथ किसी भी परिस्थिति के अनुरुप अपने को ढालनेमें सक्षम हैं और आपमें जीवन जीवन के विभिन्न पहलुओंका अनुभव करने की योग्यता है।

आपका जन्म बीसवीं शताब्दी के उस कोलाहल मेंहुआ है जबकि मानवता पतन से पूर्व उल्लासोन्माद मेंमग्न थी। आप नवीन मानवीय बोध का प्रतिनिधित्व करतेहैं जिससे पूर्व पीढ़ियां अनभिज्ञ थीं। गूढ़–विद्या में आपकीरुचि होगी।

आप जो भी निश्चय करें उसमें सफलता प्राप्तकर सकते हैं। आपमें अपनी शारीरिक, भौतिक तथाआध्यात्मिक सम्पदा को वास्तविक सम्पत्ति में परिवर्तितकरने की योग्यता है। आप अपने अवगुणों का त्याग करनेके लिए प्रयत्नशील रहते हैं और आप उन महान विभूतियोंमें से एक हैं जो अपने जीवन में ही अपने मन परविजय पा लेने में सफल होते हैं।

जन्मकुण्डली में योग

भारतीय ज्योतिष के अनुसार आपकी जन्मकुण्डली में जो योग बनते हैं वे नीचे दिए गए हैं। उन योगों के निर्माता ग्रह भी जिन्हें योग कारक कहते हैं, नीचे दिए गए हैं। ये योग अपने–अपने योग कारक ग्रहों की महादशा तथा अन्तर्दशा के समय फल देते हैं। फल देने में योग की प्रबलता का निर्धारण इस आधार पर किया जाता है कि योग कारकों की संख्या कितनी है और वे कितने प्रबल हैं। इसका विवरण भी नीचे दिया गया है। कभी–कभी परस्पर विरोधी योग या एक दूसरे के विपरीत फल देने वाले योग भी जन्मकुण्डली में घटित होते हैं। सामान्यतः इसका अर्थ यह है कि एक योग के शुभ प्रभाव को दूसरे योग का अशुभ प्रभाव निष्फल या शून्य बना देता है और इसलिए मिले–जुले या सामान्य फल ही प्राप्त होते हैं।

ग्रहः	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
बलः	२१	३५	३३	५४	४६	५६	१९	६२	६२

१ पाश योग

पाशे बंधनभाजः कार्ये दक्षाः प्रपंचकराश्च।
बहुभाषिणो विशीला बहुभृत्याः सम्प्रतानाश्च।।

पाश योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आप कार्य में चतुर होंगे। आपके अनेक नौकर चाकर होंगे किंतु आप कभी कभी छल कपट और अनैतिक व्यवहार करेंगे। आपकी स्वतंत्रता सीमित हो सकती है।

योग कारकः सू चं मं बु गु शु श

२ गजकेसरी योग

गजकेसरी संजातस्तेजस्वी धनवानन भवेतत।
मेधावी गुणसम्पन्नो राजप्रियकरो नरः।।

गजकेसरी योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी और सत्ताधिकारियों का प्रिय आचरण करने वाले होंगे।

योग कारकः चं गु

३ पारिजात योग

मध्यान्तसौख्यः क्षितिपालवन्द्यो युद्धप्रियो वारणवाजियुक्तः।
स्वकर्मधर्माभिरतो दयालुर्योगो नृपः स्याद्यदि पारिजातः।।

पारिजात योग में जन्म लेने के फलस्वरूप मध्य और अन्तिम अवस्था में आपका जीवन सुखी होगा। आपको राज्य अथवा सत्तावान व्यक्तियों से सम्मान प्राप्त होगा तथा आप अनेक वाहनों से युक्त, युद्धप्रिय, दयालु होंगे और आप धर्म कर्म में संलग्न रहेंगे।

योग कारकः मं श

४ दरिद्र योग

धनाधिपो यदा षष्ठे मृत्यभेऽप्यथवा व्यये।
सक्रूरं धनभं चैव निर्धनो खलु मानवः।।

दरिद्र योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आपको संपत्ति की हानि के कारण धनाभाव सहन करना पड़ सकता है।

योग कारकः सू बु गु

५ त्रिंशाब्दर्षात्पदंसुखयोग

लग्नेशस्यांशनाथे केन्द्र कोणेच्चसंयुते।
लाभे वा बलसंयुक्ते त्रिशब्दर्षात्परं सुखमम।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से संकेत मिलता है कि जीवन के ३०वें वर्ष के बाद आपकी भाग्य वृद्धि होगी और सुख प्राप्त होगा।

योग कारकः मं

६ राज योग

यत्र कुत्रापि संयुक्तौ तौ वापि समसप्तमौ।
राजवंशोददभवो बालो राजा भवति निश्चितमम।।

राज योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आपका जन्म संपन्न परिवार में हुआ होगा तथा आप स्वयं भी धन संपत्ति अधिकार से युक्त होंगे।

योग कारकः चं गु

७ राजवृत्ति योग

अर्थाप्तिं कथयेद्विलग्नशिनोर्मध्ये बली यस्ततः
कर्मेशस्थनवांशराशिपवशाद्वृत्तिं जगुस्तद्विदः।
भैषज्योर्णतृणाम्बुधान्यकनकव्यापारमुक्तादिकै–

रन्योन्यागमदूतवृत्तिभिरिनस्यांशे तु जीवत्यसौ।।

आप राज्य के प्रतिष्ठान में कार्य के द्वारा, स्वर्ण माणिक्यादि से संबंधित कार्य द्वारा, ऊन उद्योग, खनन उद्योग, टकसाल आदि से संबंधित कार्यों से विशेष जीविका अर्जित कर सकते हैं।

योग कारकः सू

८ निःस्व योग

सुवचनशून्यो विफलकुटुम्बः कुजनसमाजः कुदशनचक्षुः।
मतिसुतविद्याविभवविहीनो रिपुहृतवित्तःप्रभवति निःस्वे।।

इस योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आपको अपने कुटुम्ब में व्यक्तियों का अभाव खटकता रहेगा और आप अवांछनीय व्यक्तियों की संगति में पड़ सकते हैं जिससे धन का नाश हो सकता है।

योग कारकः सू चं बु गु श

९ मृति योग

अरिपरिभूतः सहजविहीनो मनसि विलज्जोहतबलवित्तः।
अनुचितकर्मश्रमपरिखिन्नो विकृतिगुणः स्यादिति मृतियोगे।।

मृति योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आपमें परिश्रम की कमी होगी जिसके कारण शत्रु पक्ष बलवान रहेगा और आपके धन की हानि भी हो सकती है। भाई बहिनों के सुख में भी कमी हो सकती है तथा अव्यवहारिक कार्यों से आपको पश्चाताप हो सकता है।

योग कारकः चं श

१० कुहू योग

मातृवाहनसुहृत्सुखभूषाबन्धुभिर्विरहितः स्थितिशून्यः।
स्थानमाश्रितमनेन हतं स्यातत कुस्त्रियामभिरतः कुहुयोगे।।

कुहू योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आपके पास सुख के साधनों की कमी रहेगी एवं निवास स्थान में लगातार परिवर्तन होते रहेंगे और वृद्धावस्था में आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है।

योग कारकः चं मं श

११ पामर योग

दुःखजीव्यनृतवागविवेकी वंचको मृतसुतोऽप्यनपत्यः।
नास्तिकोऽल्पकुजनं भजतेऽसौ घस्मरो भवति पामरयोगे।।

इस योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आप सामाजिक मान्यताओं के विपरीत आचरण करेंगे, पिता के प्रति कर्तव्यों की उपेक्षा करेंगे और आपको संतान सुख का अभाव रह सकता है।

योग कारकः चं गु श

१२ पापकत्री योग

निःस्वोऽशु चिर्विसुखदारसुतोऽगंहीनः।
स्यात्पापकर्तरिभवोऽचिरमायुरेति।।

पापकत्री योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आपको जीवन में संघर्ष करना पड़ेगा, आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा और आपकी आयु को भी खतरा रहेगा।

योग कारकः सू चं बु

१३ द्रव्यहीन योग

कोशाधीशः स्वराशौसुरगुरूसहितः सर्वसम्पत्प्रदः स्यातत।
केन्द्रे वाथ त्रिके चेदभवति हि मनुजः क्लेशभाग्द्रव्यहीनः।।

द्रव्यहीन योग में जन्म लेने के फलवरुप आपको जीवन में संघर्ष करना पड़ सकता है और आर्थिक कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ सकता है।

योग कारकः गु

१४ मूकत्व योग

वाक्यस्थानेशो गुरूर्वा व्ययरिपुविलयस्थानगो वाग्विहीन–
श्चैवं पित्रादिकानां पतय इह युता मूकता स्याच्च ताभ्याम।

मूकत्व योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आप मनोभावों की अभिव्यक्ति की असमर्थता से ग्रस्त रहेंगे।

योग कारकः गु

१५ क्लीब योग

स्यादार्तिः पंचशाखे तदनुदशभगे सूर्यसूनौ सिताढढये
क्लीबः स्यात्सूर्यसूनौ व्ययीरिपुगृहगे शुक्रतः क्लीबरूपः।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग में जन्म लेने के

फलस्वरूप आपमें कामवासना के प्रति उदासीनता आ सकती है।
योग कारकः शु श

१६ अखण्ड साम्राज्य योग

लाभेशधर्मेशधनेश्वराणामेकोऽपि चन्द्रग्रहकेन्द्रवर्ती।
स्वपुत्रलाभाधिपतिर्गुरूश्चेद अखण्डसाम्राज्यपतित्वमेति
वर्षे षोडश सम्प्राप्ते राजयोगं विनिर्दिशेतत।।

अखण्ड साम्राज्य योग में जन्म लेने के कारण आप धन, संपत्ति, ऐश्वर्य से युत होंगे और १६ वर्ष की अवस्था के बाद आपका प्रबल भाग्योदय होगा।
योग कारकः चं गु

१७ षष्ठेश सुखेशदैन्य योग

मूर्खः स्थादपवादको दुरितकृन्नित्यं सपत्नार्दितः।
क्रूरोक्तिः किलदैन्यजश्चलमतिर्विच्छिन्नकार्योद्यमः।।

इस योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आप पारिवारिक कलह एवं लम्बी बीमारी के कारण दुखी रह सकते हैं। चोरी तथा वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
योग कारकः मं श

१८ सार्वभौम राज योग

वदिधाति सार्वभौमं लग्नांशपतिः स्वतुंगः केन्द्रे।
नृपतिं लग्नाधिर्जन्मधिपतिर्धनसमृद्धमम ।।

आप प्रतिभा संपन्न, प्रतिष्ठित एवं उद्यमी व्यक्ति होंगे। आप किसी प्रतिष्ठान अथवा सत्ता में उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप अधिकार संपन्न होंगे। आपके अधीनस्थ कई व्यक्ति कार्य करेंगे ।
योग कारकः चं मं शु

१९ देहस्थौल्य योग

लग्ने जलर्क्षे शुभखेचरेन्द्रैर्युक्ते नुतस्थौल्यमुदाहरंति।
लग्नाधिपस्तोयखवगो बलाढढयः सौम्यान्वितश्चेत्तनुपुष्टिमोहुः।।

देहस्थौल्य योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आपका शरीर पुष्ट और स्वस्थ रहेगा। आपका शरीर स्थूल हो सकता है।
योग कारकः शु

२० शरीरसौख्य योग

लग्नाधिपोऽथ जीवो वा शुक्रो वा यदि केन्द्रगः।
स जातो धनवांल्लोके दीर्घायुर्राजवल्लभः।।

शरीर सौख्य योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आप धनी तथा दीर्घायु होंगे और राज्य का अनुग्रह प्राप्त करेंगे।
योग कारकः मं शु

२१ बुधादित्य योग

सेवाकृदस्थिरधनो रविज्ञयोः प्रियवचा यशोर्थः स्यातत।
आर्यः क्षितिपार्दयितः संता च बलरूपवित्तविद्यावानन।।

आप अत्यंत चतुर, सभी कार्यों में कुशल, कीर्तिवान, प्रतिष्ठित और सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युत होंगे।
योग कारकः सू बु

२२ दुर्मुख योग

पापैर्युते मुखस्थाने तन्नाथे पापसंयुते।
नीचराशिगते वापि दुर्मुखः पापवीक्षिते।।

दुर्मुख योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आपका मुख अनाकर्षक हो सकता है अथवा उसमें कोई विकृति हो सकती है।
योग कारकः सू चं बु गु श

२३ श्राद्धान्नभुक्त योग

भुक्तिस्थानाधिपे मन्दे तदीशे वाऽर्किसंयुते।
नीचेऽर्कसूनुना दृष्टे श्राद्धभुकक सततं नरः।।

श्राद्धान्नभुक्त योग में जन्म लेने के फलस्वरुप आप प्रायः श्राद्ध के निमित्त बनाया हुआ भोजन ग्रहण करेंगे।
योग कारकः गु श

२४ कपट योग

हृदये पापसंयुक्ते पापदृष्टे तदीश्वरे।
पापांतरे वा हृदये हृत्कापटटयं विनिर्दिशेत।।

आप अपनी दुर्बलता छिपाने के लिए असत्य का सहारा लेंगे और कार्य सिद्धि के लिए व्यावहारिकता का त्याग करेंगे।
योग कारकः चं मं श

२५ एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येक पुत्रं वदेतत।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति के फलस्वरुप आपकी एक संतान होने की संभावना है।
योग कारकः मं गु

२६ भगचुम्बन योग

जातः समेति भगचुम्बनमस्तनाथे
शुक्रेण वीक्षितयुते भृगुमन्दिरे वा।
एवं कुटुम्बभवनाधिपतौ तथा स्यादद
दारक्षेगे दशमपे ससिते तथैव।।

यह योग आपको अत्यधिक कामुक प्रकृति का बनाएगा। फलतः आप अनेक प्रकार के विचित्र आचरण करेंगे।
योग कारकः शु

२७ दन्त विकार योग

सप्तमे क्रूरसंदृष्टाः क्रूरा दन्तविकारदाः।
पापैर्दृष्टे गौऽजचापलग्ने विकृतदन्तवानन।।

इस योग के प्रभाव से आपके दांत विकार ग्रस्त रहेंगे। अतः यह योग स्वास्थ के लिए शुभ नहीं है।
योग कारकः चं मं बु शु

२८ अर्श योग :

भूमीपुत्रे शशिरवियुते दर्शपूर्णेष्टकाले
मन्देऽन्त्यस्थे कुजतनुभुजोर्योगतोऽस्तदृशा वा।
भौमे चालौ गुरुसितदशा वर्जितेऽतीव लग्ने
मूर्तौ मन्दे कुजयुजि मदे सम्यगर्शोविकारः।।
क्रूरे विनाशनाथे मदगे शुभदष्टिवर्जितेऽर्शो रुकक
अन्हहयस्तगृहे मन्दे चालौ पुण्ये सभूमिसुते।।

इस योग के प्रभाव से आप अर्श अथवा बवासीर रोग से ग्रस्त हो सकते हैं। अतः यह योग स्वास्थ के लिए शुभ नहीं है।
योग कारकः मं गु शु

२९ व्रण योग

भूपुत्रे गुरुसितदृष्टिवर्जितेऽलौ
जायन्ते व्रणपिटकास्तनौ विशेषातत।
भुव्यस्मिन्नथ च तदंशके सपुच्छे
मन्दे चास्तयुजि तथा द्वयोर्व्ययेऽरौ।।

इस योग के प्रभाव के कारण आपको घाव और फोड़े हो सकते हैं। अतः यह योग आपके स्वास्थ्य के लिए शुभ नहीं है।
योग कारकः मं

३० शरीर काश्र्य योग

चन्द्रं विरुपदृष्टय्या यदि पश्येच्छनैश्चरः।
निष्प्राणश्च तदा जन्तुः सदा जीवनन भवेदयमम।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के प्रभाव के कारण आपका शरीर दुर्बल होगा।
योग कारकः चं श

३१ त्रिंशद्वर्षात्परं सौख्य योग

लग्नेशस्थांशनाथे तु केन्द्रकोणोच्चसंयुते।
लाभेशे वा तथा युक्ते त्रिंशद्वर्षात्परं सुखमम।।

इस योग के प्रभाव के कारण आपको ३० वर्ष की आयु के बाद जीवन के अनेक सुख प्राप्त होंगे और सफलता प्राप्त होगी।
योग कारकः मं

३२ नेत्र रोग योग

नेत्रेश्वरस्यांशपतौ सपापे पाग्रहक्षेत्रगते तथैव।
नेत्राधिपे वासरनायके तु घरासुते वा गुलिकार्कदृष्टे।।

यह योग आपके नेत्रों को प्रभावित करेगा।फलतः इस योग में जन्म लेने के फलस्वरुप आप नेत्र रोग से ग्रस्त होंगे।
योग कारकः मं गु

३३ कुटुंब संरक्षण योग

कुटुम्बराशेरधिपे ससौम्ये केंद्रस्थिते स्वोच्चसुहृद्दगृहे वा।
सौम्यर्क्षयुक्ते यदि जातपुण्यः कुटुम्बसंरक्षणवाग्विलासः।।

इस योग में जन्म लेने के फलस्वरुप आपकी वाणी आकर्षक होगी और आप अपने संबंधियों और अन्य व्यक्तियों की सहायता में तत्पर रहेंगे।
योग कारकः गु

३४ सद्यो धन लाभ योग

सद्यो धनी धनेशेन कर्मनाथो युतो यदि।
कर्मेशस्थांशपतिना लाभनाथस्तथा विदुः।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के फलस्वरुप आपको आकस्मिक धन की प्राप्ति होगी।
योग कारकः सू बु

३५ ऋणदाता योग

वित्तलाभपसंयुक्तस्त्रयंशकेशनवांशपः।
वैशेषिकः केंद्रकोणे ऋणदाता भवेन्नरः।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के फलस्वरुप आप मुद्रा के लेनदेन से धन अर्जित करेंगे।
योग कारकः मं बु गु

३६ कर्ण रोग योग

पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदंति कर्णोद्दभवरोगमत्र।
क्रूरादिष्टटयंशयुते तदीशे कर्णस्य रोगं रोग कथयंति तज्ज्ञाः।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के प्रभावस्वरुप आपको कान का रोग हो सकता है।
योग कारकः श

३७ क्षेत्रादिनाश योग

क्षेत्रेश्चरे नीचगते विमूढे पापांतरे पापनिरीक्षिते वा।
पापग्रहक्षेत्रगतेरिगेहे क्षेत्रादिनाशं कथयंति तज्ज्ञाः।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के फलस्वरुप आपकी सम्पत्ति का नाश होने का भय है।
योग कारकः चं श

३८ क्षेत्रादिनाश योग

क्रूरादिषष्टटयंशगते तदीशे क्षेत्रे सपापे यदि नीचभे वा।
दुःस्थेरिगेहे त्वतिभीषणांशे क्षेत्रादिनाशं कथयंति तज्ज्ञाः।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के फलस्वरुप आपकी सम्पत्ति का नाश होने का भय है।
योग कारकः श

३९ राजाज्ञात्क्षेत्र नाश योग

आज्ञाक्षयाददभूमिविनशमेति राज्येशतत्कारकभूमिनाथे।
क्रूरांशके वा त्ववरोहभागे नाशस्थिते मृत्युयमादिभागे।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के फलस्वरुप आपको राजाज्ञा के फलस्वरुप सम्पत्ति की हानि हो सकती है।
योग कारकः सू मं

४0 सुतक्षय योग

क्रूरांशे पुत्रभावेशे नीचमूढसमन्विते।
पापैर्दृष्टेऽथ वा दुःस्थे पुत्रनाशं वदेत्तदा।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित यह योग आपके पुत्र की आयु पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है अथवा आपको पुत्रसुख से वंचित कर सकता है।
योग कारकः चं गु

४१ पुत्रार्ति योग

व्ययेशसंयुतांशेशत्रत्रयंशनाथसमन्विते।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के कारण आपके पुत्र को भारी कष्ट उठाना पड सकता है।
योग कारकः बु गु शु

४२ पराभव योग

रन्ध्रेशे पापसंयुक्ते पापदृष्टे तदन्तरे।
पापक्षेत्रेथ वा रन्ध्रे जातः परिभवान्वितः।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के फलस्वरुप आप प्रायः अपने प्रयत्नों में विफल होंगे।
योग कारकः बु

४३ पितृदुःख योग

पितृस्थानेश्वरांशेशसंयुक्तनवभागपः।।
क्रूरनीजारिभागस्थपितृदुःखं विनिर्दिशेतत।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के कारण आपके पिता के लिए कठिनाई हो सकती है।
योग कारकः सू चं श

४४ स्त्रीहेतोर्द्धननाश योग

व्ययेशे दारनाथेन बलहीनेन तेन तु।
दृष्टे युते वा क्रूरांशे स्त्रीहेतोर्द्धननाशनमम।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग में जन्म लेने के फलस्वरुप स्त्री के कारण आपके धन का नाश होने की संभावना है।
योग कारकः शु

४५ धनसम्पन्न राज योग

विद्धाति सार्वभौमं लग्नांशपतिः स्वतुंगगः केन्द्रे।
नृपतिं लग्नाधिपतिर्जन्माधिपतिर्धनसमृद्धमम।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के कारण आप विपुल धन सम्पन्न होंगे और विस्तृत क्षेत्र पर आपका प्रभाव होगा।
योग कारकः चं मं शु

४६ दीर्घायु योग

कर्मेश्वरेणापि विचिन्यमायुदीर्घ सुहत्स्वोच्च युतेन तेन।
केन्द्र स्थितै कर्म विलग्न रन्ध्र नाथैस्थै वायुरुदाहरन्ति।।

आपकी कुंडली में ग्रहों का यह योग विशेष रुप से आपकी आयु को बल प्रदान करता है। अतः आपकी आयु दीर्घ होने का संकेत मिलता है।
योग कारकः सू

४७ अयत्नगृहप्राप्ति योग

लग्नेश्वरे लग्नगते सुखांगनाथेन युक्ते यदि गेहलाभः।
अयत्नतः स्याच्छुभदृष्टियोगात्स्वोच्चे स्वगृहे बलाढढये।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग के कारण आपको बिना प्रयत्न के ग्रह प्राप्त होगा।
योग कारकः गु श

४८ शुक्र सुनफा योग

स्त्रीक्षेत्रगृहपतिश्चतुष्पदाढढयः सुविक्रमो भवति।
नृपसत्कृतः सुवेषो दक्षःशुक्रेण सुनफायामम।।

शुक्र सुनफा योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आप भूसंपति और भवन आदि से युत और राज्य द्वारा सम्मानित होंगे और पशुपालन का व्यवसाय कर सकते हैं।
योग कारकः चं शु

४९ पर्वत योग

भाग्यवान पर्वतोत्पन्नः वाग्मी दाता च शास्त्रवितत।
हास्यप्रियो यशस्वी च तेजस्वी पुननायकः।।

पर्वत योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आप धनवान, दानशील, शास्त्रज्ञ, हास्यप्रिय, ख्यातिवान, तेजस्वी और समाज में प्रतिष्ठित होंगे।
योग कारकः शु

५० शुक्रवासि योग

बहुसंचयी विनतदृक वोशौ पुरूषो भवेदद्गुरोर्जातः।
भीरू कामविलीनो लघुचेष्टो भृगुसुते पराधीनः।।

इस योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आप अधिक उपक्रमशील नहीं होंगे और विषय भोग में अधिक संलग्न रहेंगे।
योग कारकः सू शु

५१ पितृसौख्य योग

सौम्यतांरस्थे तन्नाथे गुरुशुक्रयुतेक्षिते।
तेषामेकेन संयुक्ते पितृसौख्यं विनिर्दिशेतत।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग में जन्म लेने के फलस्वरुप आपके पिता दीर्घायु होंगे और उनसे आपको लाभ प्राप्त होगा।

योग कारकः चं गु

५२ जंघा विकृति योग

मन्दः कुजस्त्वगुयुतो रिपुभावगोऽर्को।
जंघा विकल्पमथ षष्ठशनौ व्ययेऽथ।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग में जन्म लेने के फलस्वरूप आपके पैर अथवा जंघा में विकृति हो सकती है।

योग कारकः चं श

५३ देहवैकल्य योग

बलहीने तु रिष्फेशे क्रूरराश्यंशकेपि वा।
नीचांशे नीचराशौ वा देहे वैकल्यमादिशेतत।।

आपकी कुंडली में ग्रहों की स्थिति से निर्मित इस योग में जन्म लेने के फलस्वरुप आपके शरीर का कोई अंग क्षतिग्रस्त हो सकता है।

योग कारकः शु

महादशा – गुरू

अवधिः ११/३/२००९ – ११/३/२०२५

आप उच्च तथा शक्तिशाली बन सकते हैं। परिवार के किसी वयोवृद्ध सदस्य की ओर अधिक ध्यान देना होगा। आपको सम्पत्ति, उच्च पद तथा नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। भाग्य सहायक सिद्ध होगा आपकी ज्योतिष विद्या में रुचि विकसित हो सकती है। आप उच्च सत्तावान व्यक्ति होंगे। आप मानसिक रूप से सशक्त व्यक्ति हैं। आपकी शिक्षा अच्छी होगी। धन संग्रह संतोषजनक होगा। आपके लिए आत्मनियंत्रण हितकर होगा।

आपको सटा व्यापार तथा पूंजी निवेश से पर्याप्त लाभ होने की संभावना है। परीक्षा तथा साक्षात्कार में सफलता मिलेगी। साझेदारी लाभदायक सिद्ध हो सकती है। यदि संतान है तो उससे सुख मिलेगा। जीवन सुखमय होगा।

आप नीति, कानून तथा स्वच्छता को बहुत अधिक महत्त्व देते हैं। आप किसी नए स्थान में जा सकते हैं। आप उच्च जीवन दर्शन या गूढ़ विद्या में रुचि रख सकते हैं। आपको विदेशी मित्रों, जीवन–साथी, ससुराल पक्ष तथा माता से लाभ होने की संभावना है। सरकार में अथवा किसी धर्मार्थ संस्था में आपको सम्मानीय स्थान मिलने की संभावना है।

आपको विदेश यात्रा सहित अधिक यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। परिवार का कोई सदस्य जो आपका हितैषी है आप उस की बात पर कभी भी ध्यान नहीं देते हैं। आपको किसी बड़ी संस्था के एकान्त स्थान में कार्य करने के लिए बुलाया जा सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखिए।

अन्तर दशा – शुक्र

अवधिः २२/१/२०१७ – २२/९/२०१९

लोग आपकी बातों से मुग्ध होंगे। रत्नादि या विलास की अन्य वस्तुओं से आपको लाभ होने का योग है। आपमें सर्वत्र अपना प्रभाव डालने की प्रवृत्ति है। यदि आप संयम से रहें तो स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और नींद अच्छी आएगी।

पारिवारिक जीवन में भ्रांति रहने और यदि विवाहित हैं तो जीवन–साथी के अस्वस्थ रहने की आशंका है। साझेदारी के कामों में हानि या मुकदमेबाजी होगी। आप यह अनुभव करेंगे कि आप अपने सिवा किसी पर निर्भर नहीं कर सकते।

मित्रों से निराशा होगी। किसी प्रकार की रूकावट आ सकती है। आप परिवार के किसी सदस्य के बारे में विचित्र दुविधा में पड़ सकते हैं।

ग्रहों की इस विशिष्ट गोचर स्थिति से इस अवधि में प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। यदि आपके कोई भाई हैं तो भाइयों के साथ तथा सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध सामंजस्यपूर्ण रहेंगे। मित्रों की ओर से सहायता प्राप्त हो सकेगी तथा भाइयों से लाभ प्राप्त हो सकता है। लाभप्रद यात्राएं भी हो सकती हैं। आपका स्वास्थ्य संतोषजनक नहीं रहेगा तथा इसी कारण आप चिन्तित भी हो सकते हैं।

२६/१/२०१७ को शनि गोचर में प्रथम भाव से द्वितीय भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आपको अपनी लक्ष्य प्राप्ति के लिए आवश्यकता से अधिक श्रम करना पड़ेगा परन्तु परिणाम की प्राप्ति में भी पर्याप्त विलम्ब हो सकता है। किसी कार्य के लिए आप पर मिथ्या दोषारोपण किया जा सकता है। मानसिक चिन्ता तथा तनाव के कारण आप उदास रहेंगे परन्तु अपनी आर्थिक स्थिति को दृढ़ बनाने में आप अन्ततः सफल रहेंगे। माता से आपका प्रेमभाव रहेगा साथ ही भाइयों तथा मित्रों से सुख प्राप्त होने का योग भी है। आप विदेश यात्रा कर सकते हैं और वहीं स्थायी निवास का भी निश्चय कर सकते हैं। आप नेत्र रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

१७/८/२०१७ को राहु गोचर में दशम भाव से नवम भाव में भ्रमण कर रहा है। आपको शिक्षा के क्षेत्र में साधारण सफलता प्राप्त होगी। आपकी बौद्धिक प्रतिभा अब काफी सक्रिय होगी। उच्च अध्ययन हेतु आप यात्रा करेंगे। विदेशी कारोबार से तथा यात्राओं से आप कुछ लाभ प्राप्त कर सकेंगे। प्रकाशन, सम्प्रेषण और वितरण के क्षेत्र में आपको अनेक अवसर प्राप्त होंगे। अपने प्रयासों से आपको आंशिक सफलता ही मिलेगी। आपके पिता का व्यवहार आपके अनुकूल नहीं होगा किन्तु अपने भाइयों और बहिनों के साथ सन्तोषजनक संबंध रहेंगे।

१२/९/२०१७ को गुरु गोचर में एकादश भाव से द्वादश भाव में भ्रमण कर रहा है। फलस्वरूप अनावश्यक धनव्यय के कारण आपके अत्यधिक चिंतित एवं तनावग्रस्त रहने की संभावना है। किसी प्रकार के मुकदमे में आप संलिप्त हो सकते हैं। आप अपने प्रियजनों से पृथक हो सकते हैं। इस अवधि में आपका स्वास्थ्य गिर सकता है। गूढ़ विद्याओं में आपकी रुचि जाग्रत हो सकती है। किसी आध्यात्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति से आपके किसी रूप में लाभान्वित होने का योग है। आप प्रायः विदेशियों के संपर्क में आएंगे। आप अध्ययन अथवा व्यवसाय हेतु विदेश जा सकते हैं परंतु आपकी यात्रा लाभप्रद नहीं होगी।

११/१०/२०१८ को गुरु गोचर में द्वादश भाव से प्रथम भाव में भ्रमण कर रहा है। फलस्वरूप आप अपने खोए आत्मविश्वास को पुनः प्राप्त कर सकेंगे और आपके कठिन श्रम का कुछ सुफल भी आपको प्राप्त होगा। आप नए सम्पर्क स्थापित करेंगे। ये सम्पर्क तथा आपसे बड़े व्यक्ति आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगे। यदि आप कार्यरत नहीं हैं तो अब आप किसी व्यवसाय में संलग्न हो सकते हैं, परंतु थोड़ा संघर्ष करना पड़ेगा। आपकी यात्राएं आपके लिए सामान्यतः लाभदायक होंगी। आपको तीर्थयात्रा करने का योग है। यदि अविवाहित हैं तो अब आप विवाह का निर्णय कर सकते हैं। परिवार में शिशु–जन्म का योग है।

७/३/२०१९ को राहु गोचर में नवम भाव से अष्टम भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आप गूढ़ विषयों में रुचि ले सकते हैं। किसी दिवंगत व्यक्ति की वसीयत से आपको आर्थिक लाभ हो सकेगा। आपकी शिक्षा प्राप्ति में बाधा आ सकती है। उदर विकारों या भावनात्मक समस्याओं से आप त्रस्त रहेंगे।

२९/३/२०१९ को गुरु गोचर में प्रथम भाव से द्वितीय भाव में भ्रमण कर रहा है। अब आपको अपने प्रयासों का सुफल प्राप्त होगा। यदि कार्यरत हैं तो अपने व्यवसाय से आपको लाभ होगा तथा आपकी आय में वृद्धि होने का प्रबल योग है। आपके शैक्षिक प्रयासों का सामान्य फल प्राप्त होगा। आपके परिवार में शिशु–जन्म होने का योग है। परिवार में आपके लिए आनन्दप्रद समारोह होने की संभावना है।

अन्तर दशा – सूर्य

अवधिः २२/९/२०१९ – ११/७/२०२०

शीघ्र ही आपको धन प्राप्ति की संभावना है। तार्किक गुणों के लिए लोग आपकी सराहना करेंगे। किसी वाद–विवाद में आपको निर्णायक बनाया जा सकता है। यह समय आपके जीवन का सुनहरा समय हो सकता है।

बहुप्रतीक्षित इच्छा की सम्पूर्ति का योग है। किसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि की प्राप्ति की प्रबल संभावना है। जीवन के सभी क्षेत्रों में सार्वजनिक सहायता तथा सहानुभूति प्राप्त होगी। व्यवसाय की दृष्टि से यह समय पूर्णतया अनुकूल है।

इस अवधि में आपके पारिवारिक जीवन में प्रसन्नता के अनेक अवसर आते रहेंगे। परिवार में नये सदस्य का आगमन हो सकता है। अपने सहयोगियों के साथ आपका मतभेद हो सकता है। आपकी आय में वृद्धि हो सकेगी। आपके विदेश में बस जाने की प्रबल संभावना है। स्वास्थ्य संबंधी छोटी–छोटी समस्याएं जैसे दृष्टि कमजोर होना, आपको परेशान कर सकती हैं।

२४/१/२०२० को शनि गोचर में द्वितीय भाव से तृतीय भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त, आपके व्यापार की संभावनाएं उत्तम होंगी और थोड़े से प्रयासों से ही सफलता मिलेगी। आपकी आय में सुनिश्चित रूप से वृद्धि होगी और थोड़ी दूरी की यात्राएं लाभप्रद होंगी। यदि नौकरी खोज रहे हैं तो आपको उपयुक्त काम मिल सकेगा। आप अपने विरोधियों पर विजय पाने में सक्षम होंगे। आपके भाई और पड़ौसी भी आपको लाभप्रद सिद्ध होंगे। धार्मिक उत्सवों से आपको सन्तोष होगा।

३०/३/२०२० को गुरु गोचर में द्वितीय भाव से तृतीय भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त, आपके व्यावसायिक जीवन में अनुकूलता आएगी। यदि कार्यरत नहीं हैं तो आपके प्रयास, उद्देश्य सिद्धि में सफल होंगे। आप किसी मुकदमे में फंस सकते हैं। आपके भाई तथा बड़े संबंधी आपके लिए अनुकूल तथा सहायक सिद्ध होंगे। यदा–कदा आपके लिए चिन्ताएं उत्पन्न हो सकती हैं। यदि आप अविवाहित हैं तो अब आपका विवाह होने का प्रबल योग है। अन्ततः आपकी सभी इच्छाएं संपूर्ण हो जाएंगी, परन्तु स्वास्थ्य दुर्बल रहने की आशंका है।

अन्तर दशा – चन्द्रमा

अवधिः ११/७/२०२० – १०/११/२०२१

अप्रत्याशित साधनों से धन प्राप्ति हो सकती है। परिवार में किसी अनिष्ट की आशंका है। प्रारम्भ में जो व्यय, अपव्यय प्रतीत होगा, अन्त में वही व्यय लाभप्रद सिद्ध हो सकता है।

सटा व्यापार से लाभ की संभावना है। आपकी बुद्धिमत्ता की व्यापक प्रशंसा होगी। जीवन में पूंजी–निवेश द्वारा अधिक लाभ की संभावना है। यदि आपके जीवन–साथी का नाम आपके कार्य के साथ सम्बद्ध हो तो आपको पुस्तकों, पुस्तक प्रकाशन एवं सामुद्रिक व्यापार में लाभ प्राप्ति की संभावना है।

ग्रहों के इस भ्रमण काल में आप नये उद्यम प्रारंभ कर सकते हैं। आप अपने अन्य प्रयत्नों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप को भू–सम्पदा प्राप्त हो सकेगी। संबंधियों के साथ आपका मतभेद हो सकता है। यात्राओं के कारण आपके व्यय में वृद्धि हो सकती है। इस समय आपकी सार्वजनिक आलोचना होने की प्रबल आशंका है।

२३/९/२०२० राहु गोचर में अष्टम भाव से सप्तम भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त दूसरों के साथ किए गए कारोबार में आपको लाभ का योग है। इस अवधि में आप स्वावलम्बी बनेंगे और अपने ही गुणों से सफलता प्राप्त करेंगे। अपने मित्रों के बीच आप काफी लोकप्रिय होंगे। यदि अविवाहित हैं तो आप विवाह करने का निर्णय ले सकते हैं। आपके पारिवारिक जीवन में अप्रसन्नता और उलझनपूर्ण स्थिति हो सकती है।

५/४/२०२१ को गुरु गोचर में तृतीय भाव से चतुर्थ भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त, आपको असीम लोकप्रियता तथा अकस्मात भारी लाभ प्राप्त होने का योग है। आपके सारे प्रयास अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होंगे। आपकी ज्ञान पिपासा भी तुष्ट हो सकेगी। व्यवसाय अथवा आवास के परिवर्तन से आप लाभान्वित होंगे। अब आपको वाहन

प्राप्ति का योग है। आपकी माता की अस्वस्थता से आपके लिए चिन्ताएं उत्पन्न हो सकती हैं।

अन्तर दशा – मंगल

अवधिः १०/११/२०२१ – १७/१०/२०२२

परिवर्तन के कारण अपनी योजनाओं को मत बदलिए। आपको माता के स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखनी चाहिए।

कुछ समय के लिए शत्रु आपकी कठिनाई बढ़ाएंगे। परिवार में हुई किसी दुर्घटना के कारण दिनचर्या में व्यवधान पड़ेगा। आप कठिन स्थितियों का सामना सफलतापूर्वक कर सकेंगे।

आप अपनी अति उत्साही प्रवृत्ति तथा उग्र स्वभाव से अन्य व्यक्तियों को दुख पहुंचा सकते हैं। यद्यपि आप सफलता की इच्छा रखते हैं परन्तु आपका उतावलापन आपकी उपलब्धियों में बाधक बन जाता है।

ग्रहों के इस भ्रमण काल में आपके आवास अथवा नौकरी में परिवर्तन होने का संकेत मिलता है। आपके कठिन श्रम तथा अतिरिक्त प्रयत्नों का आपको अब लाभ मिल सकेगा। अनपेक्षित आर्थिक लाभ भी हो सकते हैं। इस अवधि में आपको यश व प्रसिद्धि दोनों प्राप्त हो सकेंगी।

१२/४/२०२२ को राहु गोचर में सप्तम भाव से षष्ठ भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आपको सांसारिक लाभ हो सकते हैं। अपने सहयोगियों के साथ आपके संबंध असामंजस्यपूर्ण रहेंगे। इन कठिनाइयों में से कुछ पर आप विजय पा सकेंगे। आप अतिव्ययी होकर अपनी बचत को नष्ट कर सकते हैं। अपने पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे। अपने प्रियजनों से वियोग होने की आशंका है। दूसरों की सेवा करने की उत्कंठा आपमें हो सकती है।

१३/४/२०२२ को गुरु गोचर में चतुर्थ भाव से पंचम भाव में भ्रमण कर रहा है। परिणामतः आप नए उपक्रमों को हाथ में लेने योग्य आत्मविश्वास का अनुभव करेंगे। आपके शैक्षिक प्रयासों के संतोषजनक परिणाम प्राप्त होंगे। यदि आप व्यापारी हैं तो आपके व्यापार में विस्तार होगा तथा आप नए सम्पर्क स्थापित करेंगे जो लाभप्रद सिद्ध होंगे। आपकी आय में वृद्धि होने का योग है। यदि अविवाहित हैं तो अब आप विवाह का निश्चय कर सकते हैं। आपके परिवार में शिशु–जन्म की संभावना है।

३/५/२०२२ को शनि गोचर में तृतीय भाव से चतुर्थ भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आप सामान्यतः दुखी और चिन्तित रहेंगे। आपकी पारिवारिक शांति भंग होने की संभावना है। आपका व्यवसाय अथवा आवास परिवर्तित हो सकता है। आप दुर्बल स्वास्थ्य तथा मानसिक चिन्ताओं से पीड़ित रहेंगे। संभवतःआपको पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करना पड़ेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी अधिक अनुकूल नहीं रहेगा।

अन्तर दशा – राहु

अवधिः १७/१०/२०२२ – ११/३/२०२५

आप अपनी जीवन शैली को बदलेंगे। आप एक सन्यासी के सम्पर्क में आएंगे जिससे आपको असाधारण उपलब्धि होगी। दूर के स्थानों पर रह रहे मित्र आपको आने का निमंत्रण भेजेंगे। आध्यात्मिक गतिविधियों में आप शान्ति अनुभव करेंगे।

ग्रहों के इस प्रभाव से आपको व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी तथा आप आनन्द अनुभव करेंगे। आपकी पदोन्नति होगी और यदि व्यापार करते हैं तो उसमें विस्तार होगा तथा आपको स्थायी लाभ प्राप्त होगा। सटा व्यापार आपके लिए लाभदायक हो सकता है। अब आपके निवास स्थान बदलने की संभावना है। आपकी गुप्त लेन–देन में रुचि हो सकती है। आपके शत्रु आधिक होंगे तथा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा।

२१/४/२०२३ को गुरु गोचर में पंचम भाव से षष्ठ भाव में भ्रमण कर रहा है। जिसके परिणामस्वरूप, कार्य करने की स्थितियां आपके अनुकूल नहीं रहेंगी और आपकी प्रतिष्ठा में भी कमी आ सकती है। परिचितों के साथ कुछ मनोमालिन्य होने के कारण आपको मानसिक तनाव हो सकता है। आप इस समय किसी मुकदमें में उलझ सकते हैं। आप आवास परिवर्तन कर सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। अन्ततः आपके कठिन परिश्रम का फल आपको अवश्य प्राप्त होगा।

३०/१०/२०२३ को राहु गोचर में षष्ठ भाव से पंचम भाव में भ्रमण कर रहा है। यदि आप रोजगार खोज रहे हैं तो आपको सरकारी कार्यालय में काम मिल सकता है। आप सामाजिक आमोद–प्रमोद और खेलकूद में भाग ले सकते हैं। नशीले पदार्थों का सेवन करने से आप अपने पिता के लिए चिन्ता का कारण बन सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याओं का सामना आपको करना पड़ सकता है। अपना मानसिक संतुलन बनाये रखने के लिये आपको अधिक शक्ति लगानी पड़ेगी। सामान्यतः आप लोकोपकारी,उदार और सुखी रहेंगे।

१/५/२०२४ को गुरु गोचर में षष्ठ भाव से सप्तम भाव में भ्रमण कर रहा है। फलस्वरूप अब आपकी आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकेगी। यदि व्यापारी हैं तो निश्चय ही आपके व्यापार में विस्तार होगा और आप नए संपर्क और साझेदार बनाएंगे जो लाभप्रद सिद्ध होंगे। यदि अविवाहित हैं तो अब आपके विवाह का योग है। आप अनेक यात्राएं कर सकते हैं जिनसे आपको कोई लाभ भी प्राप्त हो सकता है। भाइयों से आपके संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे।

महादशा – शनि

अवधिः ११/३/२०२५ – ११/३/२०४४

समाज में आपकी साधारण स्थिति होगी। नौकरी और रोजगार अथवा सेना के मित्रों के माध्यम से सम्मान प्राप्त होगा। अधिकारियों से आपके संबंध अच्छे होंगे। आपको धन, सम्पत्ति तथा वाहन प्राप्त हो सकते हैं। आपके विरोधी आपको हानि नहीं पहुंचा सकते हैं।

सहोदरों की ओर ध्यान देना पड़ सकता है। लम्बी यात्राएं लाभप्रद नहीं होंगी, किन्तु छोटी यात्राओं और कृषि से लाभ हो सकता है। अप्रत्याशित खर्चों के कारण आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर पड़ सकती है। रोग के कारण श्रवणशक्ति के प्रभावित होने की संभावना है। किसी बाधा के कारण जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण बदल सकता है।

आपको उत्तराधिकार से सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप अचल सम्पत्ति और वाहन आदि भी प्राप्त करेंगे। व्यवसाय और स्वास्थ्य प्रभावित होंगे। तेल, तिलहनों तथा खनिज पदार्थों का व्यापार लाभकर सिद्ध होगा। यदि आपके माता–पिता हैं तो उनके अस्वस्थ रहने से आपका व्यक्तिगत और दाम्पत्य जीवन प्रभावित हो सकता है। यदि आपकी संतान है तो उन्हें दादा से उपहार प्राप्त होगा।

उत्तराधिकारिक सम्पत्ति के संबंध में मुकदमेबाजी की संभावना है। आपको असुविधाजनक लम्बी यात्राएं करनी पड़ेंगी। सरकार के रोष तथा चोरी और अग्नि से हानि की संभावना है। यदि विवाहित हैं तो पुत्रियों की अपेक्षा पुत्र अधिक होंगे। सटा–व्यापार तथा जुए से हानि हो सकती है। आप पर झूठा आरोप लगाया जा सकता है। विरोधियों से खतरा हो सकता है। अनपेक्षित उपलब्धि का योग है।

आप कुछ नई योजनाएं आरम्भ कर सकते हैं। आप अपव्ययी होंगे। व्यापार में विरोधियों के कारण आपको हानि उठानी पड़ सकती है। नौकरी में कठिनाइयां आ सकती हैं। आप ऋणग्रस्त हो सकते हैं। ऋण चुकता करना कठिन होगा।

अन्तर दशा – शनि

अवधिः ११/३/२०२५ – १४/३/२०२८

आप समृद्ध होंगे। प्रत्याशित स्रोतों से लाभ होगा। व्यवसाय में विशेषकर सशस्त्र सेना में सम्मान मिलने का प्रबल योग है। आपकी स्थिति में साधारण उन्नति का योग है। आप समाज कल्याण के कार्यों में गहन रुचि लेंगे। अपने से छोटों और सहयोगियों के साथ संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे और विरोधी आपके हितों को हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। परिवार का कोई वयोवृद्ध सदस्य आपके लिए बाधा खड़ी कर सकता है।

सगे भाइयों अथवा रिश्ते के भाई–बहिनों की ओर ध्यान देना पड़ सकता है। बौद्धिक प्रयासों में मानसिक क्षोभ हो सकता है। छोटी यात्राएं या खेती के काम लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। बहुत बढ़े हुए खर्चों और कमजोर आर्थिक स्थिति से आप संकट में पड़ सकते हैं। आप स्वयं को पराजित अनुभव करेंगे।

उत्तराधिकार से आपको लाभ हो सकता है। संपत्ति या वाहन प्राप्ति का योग है। यदि विवाहित हैं तो माता–पिता या अन्य बड़े व्यक्तियों की बीमारी के कारण आपके वैवाहिक जीवन में तनाव आ सकता है। तेल–तिलहन और खनिज पदार्थों का व्यापार लाभप्रद सिद्ध हो सकता है।

इस ग्रह के विशिष्ट प्रभाव के कारण पर्याप्त संघर्ष के उपरान्त ही आपके व्यावसायिक जीवन में उन्नति हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप मानसिक अशांति उत्पन्न हो सकती है। आप अपने रोजगार के स्थान अथवा निवास स्थान को बदल सकते हैं। आपके सम्पर्क अब लाभप्रद सिद्ध होंगे। आपका घरेलू जीवन भी सुखद नहीं होगा। आपका स्वास्थ्य कमजोर हो सकता है। आपके परिवार में विवाह होने का शुभ योग है।

२९/३/२०२५ को शनि गोचर में चतुर्थ भाव से पंचम भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त, आपको कठिन श्रम करना पड़ेगा परन्तु उसके अनुरूप लाभ संभवतः प्राप्त नहीं होगा। सटा–व्यापार आपके लिए लाभप्रद हो सकता है। यदि विवाहित हैं तो जीवन–साथी का स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न कर सकता है तथा अपनी सन्तान की ओर भी संभवतःआपको विशेष ध्यान देना पड़ेगा। इस काल में पारिवारिक शांति को क्षति पहुंचने तथा आपके तनावग्रस्त रहने का योग है। रूका हुआ धन आपको इस समय प्राप्त हो जाने का योग है पर साथ ही आपके व्यय में भी वृद्धि होगी।

१४/५/२०२५ को गुरु गोचर में सप्तम भाव से अष्टम भाव में भ्रमण कर रहा है। इसके प्रभाव से साझेदारी के कार्य आपके लिए अत्यधिक हानिकर सिद्ध हो सकते हैं और कठिन प्रयास करने पर भी आप बिगड़ती हुई परिस्थितियों को अनुकूल नहीं कर पाएंगे। आपके किसी मुकदमे में संलिप्त होने की संभावना है। गूढ़ विद्याओं में आपकी रुचि जाग्रत हो सकती है। आपका तथा आपकी माता का स्वास्थ्य गंभीर रूप धारण कर सकता है। आपके लम्बी तथा कष्टसाध्य यात्राएं करने का योग है किन्तु इनसे विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। इस अवधि में आप दुर्घटनाग्रस्त हो सकते हैं।

१८/५/२०२५ को राहु गोचर में पंचम भाव से चतुर्थ भाव में भ्रमण कर रहा है। इस भ्रमण काल में आपको अपने पारिवारिक जीवन में बहुधा विरोध और कठिन स्थितियों का सामना करना पड़ेगा किन्तु आपकी माता के मन में आपके हितों की भावना रहेगी। आप मितव्ययी होंगे और बचत करने की कोशिश करेंगे। अब आप अपना निवास स्थान बदल सकते हैं और विदेश यात्रा भी कर सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य गिर सकता है।

१८/१०/२०२५ को गुरु गोचर में अष्टम भाव से नवम भाव में भ्रमण कर रहा है। इस के प्रभाव स्वरूप सब प्रकार की सफलताएं प्राप्त होने का योग है। यदि कार्यरत हैं तो आपकी पदोन्नति हो सकती है। इस समय आपमें नए उद्यमों तथा योजनाओं को प्रारंभ करने की प्रबल प्रवृत्ति जाग्रत होगी। आपके पिता के कार्यव्यापार में भी सुधार होगा। आपके भूसंपत्ति या वाहन प्राप्त करने का योग है। यदि अविवाहित हैं तो अब आप विवाह का निश्चय कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य अत्यधिक उत्तम रहेगा।

३०/१०/२०२६ को गुरु गोचर में नवम भाव से दशम भाव में भ्रमण कर रहा है। परिणामतः आपको अपने कठिन श्रम या विशेष प्रयासों का इस समय आंशिक लाभ ही प्राप्त होगा। कार्य करने की स्थितियों में थोड़ा सुधार होने की आशा है। आप नए एवं लाभप्रद संपर्क स्थापित कर सकते हैं तथा आपकी आय का एक अतिरिक्त तथा लाभदायक स्रोत भी स्थापित होगा। आपका गृहस्थ जीवन संतोषप्रद रहेगा। आपके आवास अथवा कार्य–स्थल के परिवर्तन का योग है। इस समय आप वाहन प्राप्त कर सकते हैं।

५/१२/२०२६ को राहु गोचर में चतुर्थ भाव से तृतीय भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आपकी रुचि अध्यात्म और शिक्षा संबंधी विषयों में होगी। लेखन, प्रकाशन कार्य में प्रवृत्त होकर अब आप सुनिश्चित लक्ष्य बनाएंगे। जोखिम उठाकर सफलता प्राप्त करने के लिये अब आपमें साहस और पहल करने की भावना होगी। आपके परिचित, मित्र और भाई आपके लिए सहायक सिद्ध होंगे। आपकी यात्राएं, जो विदेश यात्राएं भी हो सकती है, पूर्णतः सफल होंगी। पैर में थोड़ी चोट लगने की आशंका है।

९/६/२०२७ को शनि गोचर में पंचम भाव से षष्ट भाव में भ्रमण कर रहा है। तत्पश्चात आपके कार्य करने की स्थितियों में शनैःशनैः सुधार होता जाएगा। यदि सेवारत हैं तो आपकी पदोन्नति होगी जो संभवतः आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं होगी। आप नए उद्यम हाथ में ले सकेंगे तथा आपका स्वास्थ्य सन्तोषजनक रहेगा। कुछ कठिनाइयों के पश्चात ही आप अपने शत्रुओं को पराजित कर सकेंगे। आपकी यात्राएं लम्बी तथा कष्टसाध्य होने पर भी अन्ततः फलदायी सिद्ध होंगी।

२६/११/२०२७ को गुरु गोचर में दशम भाव से एकादश भाव में भ्रमण कर रहा है। परिणामतः आपकी आकांक्षाएं अब पूर्ण हो जाएंगी। आपके आसपास के वातावरण में भी अनुकूलता आएगी। आपके मित्र, सहयोगी तथा भाई आपके प्रति सभावपूर्ण रहेंगे और लाभप्रद भी सिद्ध हो सकते हैं। आपको यात्राओं से लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको भूमि तथा वाहन की प्राप्ति का भी योग है। यदि अविवाहित हैं तो अब आप विवाह करने का निर्णय ले सकते हैं। परिवार में शिशु जन्म हो सकता है।

अन्तर दशा – बुध

अवधिः १४/३/२०२८ – २२/११/२०३०

चोरी अथवा छल–कपट से सावधान रहिए। रोग एवं कर्मचारियों के कारण क्षति की आशंका है। नेत्रों अथवा शरीर के निचले अंगों के रोग होने की आशंका है। पारिवारिक व्यय में अत्यधिक वृद्धि की संभावना है। आर्थिक दृष्टि से लाभ होने पर भी कठिन परिस्थितियों के कारण मानसिक अशांति रहेगी।

साझीदार से वाद–विवाद एवं परेशानी हो सकती है। आपको आर्थिक क्षति हो सकती है तथा आप पर ऋण का भार बढ़ सकता है। खांसी, दमा तथा फलू जैसे रोगों से परेशानी हो सकती है। झूठ बोलने की कोशिश मत कीजिए क्योंकि आप पकड़े जा सकते हैं।

आपको मित्रों के कारण चिन्ता तथा परेशानी हो सकती है। सहयोगियों की असावधानी या गलत परामर्श के कारण आपको क्षति उठानी पड़ सकती है। चिन्ता एवं क्षुब्धता बनी रह सकती है। परिवार में मामूली सी दुर्घटनाा हो सकती है।

भाइयों, मित्रों तथा सहयोगियों से लाभ होने का संकेत है। इस समय में आपको भू–सम्पत्ति अथवा वाहन की प्राप्ति हो सकती है। आपके काम धन्धे से स्थिति में सुधार होने अथवा आपको उच्च पद प्राप्त होने की संभावना है। यदि आप व्यापार में संलग्न हैं तो सम्भवतः आप उसका विस्तार करेंगे। आप लाभप्रद यात्राएं करेंगे। यदि आप विवाहित हैं तो आपको जीवन–साथी और संतान से सुख मिलेगा।

२३/६/२०२८ को राहु गोचर में तृतीय भाव से द्वितीय भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आपको पर्याप्त धन–सम्पत्ति प्राप्ति का योग है। वसीयत, बीमे की रकम और उपहारों से आपको लाभ होने की संभावना है। आपकी शिक्षा–दीक्षा में बाधा आ सकती है और आपका व्यवहार अपारम्परिक और अनियंत्रित हो सकता है। आप अतिव्ययी होंगे। धन के मामले में आपको सावधानी रखनी चाहिये। चोरी होने की आशंका है। आपके कुछ महत्त्वपूर्ण कागजात खो भी सकते हैं। आप विवादों में फंस सकते हैं और अनुपयुक्त व्यक्तियों की संगति कर सकते हैं। आपके और आपके परिवार के बीच मतभेद पैदा हो सकते हैं। आपकी आंखों के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं आने और आपके दुर्घटनाग्रस्त होने का भी इस समय खतरा है।

२७/१२/२०२८ को गुरु गोचर में एकादश भाव से द्वादश भाव में भ्रमण कर रहा है। फलस्वरूप अनावश्यक धनव्यय के कारण आपके अत्यधिक चिंतित एवं तनावग्रस्त रहने की संभावना है। किसी प्रकार के मुकदमे में आप संलिप्त हो सकते हैं। आप अपने प्रियजनों से पृथक हो सकते हैं। इस अवधि में आपका स्वास्थ्य गिर सकता

है। गूढ़ विद्याओं में आपकी रुचि जाग्रत हो सकती है। किसी आध्यात्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति से आपके किसी रूप में लाभान्वित होने का योग है। आप प्रायः विदेशियों के संपर्क में आएंगे। आप अध्ययन अथवा व्यवसाय हेतु विदेश जा सकते हैं परंतु आपकी यात्रा लाभप्रद नहीं होगी।

१०/१/२०३० को राहु गोचर में द्वितीय भाव से प्रथम भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आप अत्यन्त भौतिकवादी व्यक्ति बन जाएंगे और सफलता, सांसारिक प्रतिष्ठा और भौतिक सुखों की इच्छा करेंगे। अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये आप अनुचित साधन भी अपना सकेंगे। विवादों के कारण हानि हो सकती है। आपको प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा किन्तु अन्ततः आप अपने विरोधियों पर विजयी होंगे। अपने व्यवहार में आप उदार हैं और विपरीत लिंग के व्यक्तियों की ओर आप सरलता से आकृष्ट हो सकते हैं जिससे आपकी बदनामी हो सकती है। अपनी अस्वस्थता के कारण आप चिन्तित रहेंगे।

२४/१/२०३० को गुरु गोचर में द्वादश भाव से प्रथम भाव में भ्रमण कर रहा है। फलस्वरूप आप अपने खोए आत्मविश्वास को पुनः प्राप्त कर सकेंगे और आपके कठिन श्रम का कुछ सुफल भी आपको प्राप्त होगा। आप नए सम्पर्क स्थापित करेंगे। ये सम्पर्क तथा आपसे बड़े व्यक्ति आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगे। यदि आप कार्यरत नहीं हैं तो अब आप किसी व्यवसाय में संलग्न हो सकते हैं, परंतु थोड़ा संघर्ष करना पड़ेगा। आपकी यात्राएं आपके लिए सामान्यतः लाभदायक होंगी। आपको तीर्थयात्रा करने का योग है। यदि अविवाहित हैं तो अब आप विवाह का निर्णय कर सकते हैं। परिवार में शिशु–जन्म का योग है।

१७/४/२०३० को शनि गोचर में षष्ट भाव से सप्तम भाव में भ्रमण कर रहा है। इस काल में आपके साझीदार तथा सहयोगी आपके अनुकूल नहीं रहेंगे। अपनी योजनाओं की सफलता हेतु संभवतः आपको कठिन श्रम करना पड़ेगा। आप अनेक बार विदेशियों के सम्पर्क में आएंगे तथा कष्टसाध्य यात्राएं भी करेंगे। यदि विवाहित हैं तो आपके जीवन–साथी का स्वास्थ्य इस अवधि में ठीक नहीं रहेगा। अपने माता–पिता की रूग्णता के कारण आपको संभवतः भारी धन व्यय करना पड़ेगा। आपका उग्र स्वभाव आपके गृहस्थ सुख में बाधक बन सकता है। आपके दुर्घटनाग्रस्त होने की आशंका है।

अन्तर दशा – केतु

अवधिः २२/११/२०३० – १/१/२०३२

भाइयों और पड़ोसियों के व्यवहार से चिन्ता तथा अशान्ति हो सकती है। यात्राएं लाभप्रद नहीं होंगी। आप किसी की जमानत देने से सावधान रहें क्योंकि इससे भावी कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती हैं। गुप्त उद्देश्यों से की गई यात्राएं विफल हो सकती हैं। आपकी भौंहों पर मामूली चोट की संभावना है।

इस गोचर भ्रमणकाल में आपको मानसिक चिंताएं और अकथनीय भय हो सकते हैं। आपके व्यवसाय में कोई बाधा आ सकती है अथवा व्यवसाय में भारी हानि उठानी पड़ सकती है। आपको लंबी और अरुचिकर यात्राएं करनी पड़ सकती है। किसी दुर्घटना का भी मामूली खतरा है। रति रोग से सावधान रहें।

१९/२/२०३१ को गुरु गोचर में प्रथम भाव से द्वितीय भाव में भ्रमण कर रहा है। इस समय आप नए उद्यम प्रारम्भ कर सकते हैं तथा अपने व्यापार का विस्तार कर सकते हैं। यदि आप सेवारत हैं तो आपकी पदोन्नति का योग है। इस समय आपकी आय में पर्याप्त वृद्धि होगी। परिवार में वृद्धि होने की भी संभावना है। आप अब साझेदारी में कार्य कर सकते हैं। आपको अकस्मात लाभ प्राप्ति का भी योग है। पारिवारिक समारोहों में आपके भाग लेने की सम्भावना है।

३०/७/२०३१ को राहु गोचर में प्रथम भाव से द्वादश भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरांत गुप्त साधनों से आपको कुछ उपलब्धि हो सकती है किन्तु आप किसी प्रकार की मुकदमेबाजी में पड़ जाएंगे। आपकी रुचि आध्यात्मवाद की ओर हो सकती है। आपकी प्रवृत्ति त्याग और लोकोपकार की ओर हो सकती है। अपने प्रियजनों से अब वियोग भी हो सकता है। उदर विकारों, हृदय रोगों और कमजोर दृष्टि के कारण आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

अन्तर दशा – शुक्र

अवधिः १/१/२०३२ – २/३/२०३५

अविवेकपूर्ण सटेबाजी से अचानक ही भाग्य में गिरावट आ सकती है। मुकदमेबाजी से हानि और ऋणों से परेशानी भी संभव है। स्वास्थ्य संबंधी बाधाएं भी आ सकती है।

किसी आत्मीय जन से वियोग संभव है। मित्रों द्वारा षड़यंत्र और विश्वासघात, शत्रुओं द्वारा खुले आम बाधाएं डाले जाने, अदालती मुकदमों और ठेकों से संकट आने की संभावनाएं रहेंगी। आपके अनैतिक व्यवहार के कारण साझेदार के साथ संबंध तनावपूर्ण तथा परिणामस्वरूप बदनामी और आर्थिक हानि संभव है।

यह समय समस्यापूर्ण होगा। किसी पारिवारिक दुर्घटना के कारण काफी परेशानी होने की आशंका है। दाम्पत्य–जीवन में तनाव रहेगा। व्यापार–व्यवसाय में आर्थिक हानियां और अपने व्यवसाय, व्यापार या प्रेम प्रसंगो में प्रतिस्पर्धा या शत्रुता से परेशानियां होने की आशंका है। अपनी आक्रामक प्रवृत्ति से आप द्वितीयें को अपना शत्रु बना सकते हैं।

इस अवधि में आपका पारिवारिक जीवन सुख और आनन्द से परिपूर्ण होगा। आपकी आय में पर्याप्त वृद्धि होगी। आपके परिवार में वृद्धि होने का भी संकेत है। आपके जीवन–साथी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का कारण हो सकता है। आपको बहुधा यात्रा करनी पड़ सकती है।

५/३/२०३२ को गुरु गोचर में द्वितीय भाव से तृतीय भाव में भ्रमण कर रहा है। परिणामतःआपको अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। आपके कार्य करने की परिस्थितियां आपके मनोनुकूल नहीं होंगी। आपके भाई तथा आपसे बड़े व्यक्ति आपके सहायक सिद्व होंगे। यदि अविवाहित हैं तो अब आप विवाह का निश्चय कर सकते हैं। संभव है आपके जीवन–साथी का स्वास्थ्य उत्तम न रहे। आप किसी मानसिक समस्या से ग्रस्त हो सकते हैं। साहित्य तथा कला में आपकी रुचि जाग्रत हो सकती है।

३०/५/२०३२ को शनि गोचर में सप्तम भाव से अष्टम भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आपके कार्यस्थल का वातावरण अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। यदि आप व्यापार में संलग्न हैं तो इस समय हानि की प्रबल संभावना है। इस समय नए उपक्रमों को आरम्भ करने योग्य साहस भी आपमें नहीं होगा। सटा–व्यापार तथा जुए में आपकी भारी धन–हानि हो सकती है। उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति के कारण आप कानूनी विवाद में फंस सकते हैं। सन्तान तथा जीवन–साथी के कारण आपको चिन्ता हो सकती है। प्रियजनों से आपका वियोग हो सकता है। किसी दुर्घटना की प्रबल संभावना है।

१६/२/२०३३ को राहु गोचर में द्वादश भाव से एकादश भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आपको कुछ भौतिक समृद्धि प्राप्त होगी। इस भ्रमणकाल में आपके कुछ शत्रु बन जाएंगे किन्तु विजय मिल सकेगी। आपके लाभ के क्षेत्र में प्रगति मंद रहेगी। सटा–व्यापार और नए कार्यों से आपको बचना चाहिए क्योंकि इनसे हानि हो सकती है। आपकी सन्तान के कारण चिन्ता हो सकती है। आप अधिक यात्राएं करेंगे और फलतः प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

१७/३/२०३३ को गुरु गोचर में तृतीय भाव से चतुर्थ भाव में भ्रमण कर रहा है। परिणामतः आप आकस्मिक लाभ प्राप्त करेंगे और मित्रों, संबंधियों तथा सहयोगियों के मध्य लोकप्रिय होंगे। आप अपना कार्य–स्थल अथवा आवास परिवर्तित करने का निर्णय कर सकते हैं। आपको अपने प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी किन्तु आपकी प्रसन्नता आपके अवचेतन मन में निहित स्थितियों पर निर्भर करती है।

२७/३/२०३४ को गुरु गोचर में चतुर्थ भाव से पंचम भाव में भ्रमण कर रहा है। आपके नए उद्यम प्रारंभ करने का योग है। व्यावसायिक क्षेत्र में इस समय आपकी पदोन्नति हो सकती है। आप नवीन तथा लाभप्रद सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। आपके व्यापार में विस्तार होगा तथा आपकी आय में भी कुछ वृद्धि होगी। परिवार में शिशु–जन्म होने का योग है। आपके लिए लाभदायक यात्राएं भी संभावित हैं।

१२/७/२०३४ को गोचर में अष्टम भाव से नवम भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आपके कठिन श्रम तथा अतिरिक्त प्रयासों के फलस्वरूप सफलता एवं समृद्धि प्राप्त होने का योग है। इस अवधि में आपमें धार्मिक प्रवृत्ति जाग्रत होगी और आप तीर्थ–यात्राएं कर सकते हैं। अपने जीवन–साथी, भाइयों तथा अन्य संबंधियों से आपके संबंध विशेष सौहार्दपूर्ण नहीं रहेंगे। संभवतः अपने दुर्बल स्वास्थ्य के कारण आप पीड़ित और दुखी रहेंगे।

५/९/२०३४ को राहु गोचर में एकादश भाव से दशम भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त सम्मान, प्रतिष्ठा और उच्च पद प्राप्त करने के लिये आपको अत्यंत कड़ा परिश्रम करना पड़ेग। आपको काफी प्रयास और संघर्ष करना पड़ेगा किन्तु समस्याओं का समाधान किसी न किसी प्रकार हो जायेगा। आपके मित्र विश्वसनीय नहीं होंगे और शत्रुओं से निरन्तर परेशानी होती रहेगी। यदि आपके माता–पिता जीवित हैं तो उनके साथ असामंजस्य रहने की भी आशंका है। सांसारिक समृद्धि कम प्राप्त होगी। आपकी माता के स्वास्थ्य के कारण आपको चिन्ता हो सकती है।

अन्तर दशा – सूर्य

अवधिः २/३/२०३५ – १२/२/२०३६

आपको आकस्मिक लाभ की संभावना है। आपको आभूषणों या फर्नीचर की प्राप्ति हो सकती है। आप व्यक्तियों से कूटनीतिपूर्ण व्यवहार करते हैं तथा अपने तर्कसंगत दृष्टिकोण के लिए सराहे जाते हैं। अपने से छोटों के व्यवहार से आपको पूर्णतया संतोष प्राप्त हो सकता है।

बहुप्रतीक्षित इच्छा की सम्पूर्ति का योग है। आप अपनी परियोजनाओं तथा व्यावसायिक विस्तार की योजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा कर सकते हैं। विरोधियों पर विजय प्राप्त कर सकेंगे तथा प्रभावशाली व्यक्तियों से घनिष्ठ संबंध स्थापित होंगे। पदोन्नति की संभावना है।

यदा–कदा समस्याओं तथा मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त होने पर भी आप सामान्यतःसुखी रहेंगे। इस अवधि में आपमें गहन चिन्तन की प्रवृत्ति उत्पन्न होगी। आपको बिना अधिक प्रयास के व्यवसाय में उच्च पद प्राप्त होने का योग है। आपके व्यावसायिक उपक्रमों में आश्चर्यजनक उन्नति होगी। आपके संपर्क अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होंगे। यात्राएं दुष्कर परन्तु अन्ततः फलदायी होंगी। संतान से आपको सुख प्राप्त होगा।

६/४/२०३५ को गुरु गोचर में पंचम भाव से षष्ठ भाव में भ्रमण कर रहा है। परिणामतःआपकी नौकरी में स्थितियां संभवतःमनोनुकूल नहीं रहेंगी तथा आपकी प्रतिष्ठा को भी आघात पहुंच सकता है। आप किसी मुकदमें में फंस सकते हैं। संभवतः परिचितों से आपके संबंध सभावपूर्ण नहीं रहेंगे। आप अपना आवास परिवर्तन कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य संतोषजनक नहीं रहेगा। आपके पिता का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता उत्पन्न कर सकता है। अन्ततःआपको अपने कठोर परिश्रम का उत्तम फल प्राप्त होगा।

अन्तर दशा – चन्द्रमा

अवधिः १२/२/२०३६ – १३/९/२०३७

अप्रत्याशित साधनों से धन प्राप्ति की संभावना है। प्रारंभ में जो व्यय अपव्यय प्रतीत होंगे बाद में वही लाभदायी सिद्ध हो सकते हैं। अपने जन्मस्थान से दूर की यात्रा या विदेश यात्रा करने की संभावना है। धर्मार्थ कार्यों के लिए आप दान दे सकतेहैं। परिवार में दुर्घटना होने के प्रति सावधान रहने की आवश्यकता है।

आपको सटा–व्यापार से लाभ हो सकता है। अपनी बुद्धि तथा ज्ञान से आप अन्य व्यक्तियों को आकर्षित कर सकते हैं। प्रकाशन का कार्य आपके लिए लाभदायी सिद्ध हो सकता है। यात्राएं करने की संभावना है। आध्यात्मिक विषयों की ओर आपकी रुचि हो सकती है। आर्थिक क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होगी। अपने समुदाय में आपका आदर होगा। इस अवधि में कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा। आपकी आय में वृद्धि की संभावना है।

आपके गहन प्रयासों के पश्चात भी आपकी व्यावसायिक प्रगति में कुछ अवरोध आ सकता है। आपके शत्रु आपका अनिष्ट करने की चेष्टा करेंगे। यदि आप विवाहित हैं तो जीवन–साथी तथा सन्तान के साथ आपका मतभेद होने का योग है। आप अपनी आर्थिक स्थिति तथा भारी धनव्यय दोनों की ओर से चिन्तित रहेंगे। संभवतः आपको अपनी इच्छा के विपरीत किसी स्थान पर रहना पड़ेगा।

२४/३/२०३६ को राहु गोचर में दशम भाव से नवम भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आपकी बौद्धिक प्रतिभा अपने उत्कर्ष पर होगी और शिक्षा और धार्मिक कार्यों में आपको सफलता मिलेगी। अपनी यात्राओं और विदेशों के कारोबार से आप लाभ उठा सकेंगे। आपकी प्रखर अंतर्दृष्टि लाभदायक निर्णय लेने में आपकी सहायता करेगी। पिता, भाइयों और बहिनों के साथ संबंध सन्तोषजनक रहेंगे। अचानक ही अतिरिक्त उत्तरदायित्वों का भार आप पर आ सकता है।

१४/४/२०३६ को गुरु गोचर में षष्ठ भाव से सप्तम भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आपके व्यापार का विस्तार होने का योग है तथा नए सम्पर्क भी आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। इस समय आप साझेदारी के कार्य में प्रवृत्त हो सकते हैं। नौकरी में आप की पदोन्नति होने की संभावना है। आपकी सभी इच्छाएं पूर्ण हो जाएंगी। किसी विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ आपकी किसी प्रकार की साझेदारी होने का योग है। आपको अनेक यात्राएं करने की संभावना है जो आपके लिए लाभकारी सिद्ध होंगी।

२७/८/२०३६ को शनि गोचर में नवम भाव से दशम भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त, सफलता और समृद्धि की प्राप्ति के लिए आप अत्यधिक कड़ा परिश्रम करेंगे। तथापि आपको साझीदारी से वांछित परिणाम प्राप्त न होने की आशंका है। आप बार–बार यात्राएं कर सकते हैं। जीवन–साथी, संबंधियों और पड़ौसियों के साथ संबंध सामंजस्यपूर्ण नहीं रहेंगे। आपके जीवन–साथी का स्वास्थ्य संतोषजनक नहीं रहेगा। आपको सम्मानप्रद पद प्राप्त होगा और यदि आप राजनीति में हैं तो अपने विरोधियों पर आप विजयी होंगे। यदि आपकी माता जीवित हैं तो उनके स्वास्थ्य के कारण आपको चिन्ता रहेगी।

९/९/२०३६ को गुरु गोचर में सप्तम भाव से अष्टम भाव में भ्रमण कर रहा है। इसके प्रभाव से आपको छोटे से छोटे लाभ के लिए भी कठिन श्रम करना पड़ेगा। साझेदारी में आपको हानि होने का योग है। किसी मुकदमे में आपके संलिप्त होने की प्रबल संभावना है। आपकी गूढ़–विद्याओं में रुचि जाग्रत हो सकती है। आपका स्वास्थ्य असंतोषजनक रहेगा तथा आपकी माता का स्वास्थ्य अत्यंत गंभीर रूप धारण कर सकता है। आप दुष्कर यात्राएं कर सकते हैं। इस समय आपके दुर्धटनाग्रस्त होने की भी आशंका है।

अन्तर दशा – मंगल

अवधिः १३/९/२०३७ – २३/१०/२०३८

आप अशान्त रहेंगे। आप अपनी भूसम्पत्ति या अन्य परिसंपत्तियों का विक्रय कर सकते हैं। दाम्पत्य सुख में कमी आ सकती है। शिक्षा में अवरोध अथवा किसी से सम्बन्ध–विच्छेद की आशंका है। मतभेद के कारण सम्बन्धी आपकी उपेक्षा करेंगे। माता के स्वास्थ्य पर ध्यान देना पड़ेगा। अपने कार्यों के लिए पर्याप्त सहायता न मिलने से आप उलझन में पड़ सकते हैं। अल्पकालिक लाभ प्राप्त होंगे।

दिन प्रतिदिन के कार्यों में सावधानी बरतिए अन्यथा चिन्ता एवं क्षति हो सकती है। आपके साथ दुर्घटना हो सकती है तथा चोरी अथवा कर्मचारियों के कारण हानि हो सकती है। आप झगड़ालू होंगे तथा आपके अविवेक के कारण अनबन हो सकती है। आपको कठिन परिस्थितियों के प्रति संघर्ष करना पड़ेगा।

आपको निराशा एवं क्षुब्धता हो सकती है। बीमारी तथा दुर्घटना से सावधान रहिए। सम्बन्धियों के साथ तनावपूर्ण सम्बन्ध होने के कारण आप चिन्तित हो सकते हैं। अथवा आवास में परिवर्तन की संभावना है।

इस ग्रह के गोचर भ्रमणकाल में आपके प्रयत्न सफल होंगे। साझेदारी के कारण हानि हो सकती है। आपकी रुचि गूढ़ विद्या में विकसित हो सकती है तथा किसी पवित्र स्थान की यात्रा भी संभव है। यदि आप विवाहित हैं तो जीवन–साथी के स्वास्थ्य के कारण मानसिक तनाव उत्पन्न हो सकता है।

१६/९/२०३७ को गुरु गोचर में अष्टम भाव से नवम भाव में भ्रमण कर रहा है। अब आपके व्यापार में विस्तार होगा अथवा, यदि आप सेवारत हैं तो उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं। नवीन उद्यमों तथा योजनाओं में आपको आंशिक सफलता प्राप्त होगी। आप भू–संपत्ति अथवा वाहन प्राप्त कर सकते हैं। स्वास्थ्य अत्युत्तम रहेगा। परिवार में शिशुजन्म का योग है। आप लम्बी यात्राएं कर सकते हैं।

११/१०/२०३७ को राहु गोचर में नवम भाव से अष्टम भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त, आप गूढ़ विषयों में रुचि लेंगे। किसी दिवंगत व्यक्ति की वसीयतों से

आपको आर्थिक लाभ होगा। आपके काम करने की स्थितियां संतोषजनक नहीं रहेंगी और आप अपनी नौकरी परिवर्तित कर सकते हैं। आपको आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। उदर विकारों या भावनात्मक समस्याओं से आप त्रस्त रह सकते है।

७/१०/२०३८ को गुरु गोचर में नवम भाव से दशम भाव में भ्रमण कर रहा है। फलतः आपको कठिन श्रम करना पड़ेगा परंतु उसका समुचित प्रतिदान प्राप्त होने का योग नहीं है। आपकी कार्य परिस्थितियों में किंचित सुधार हो सकता है। संभव है आप अपना कार्यस्थल परिवर्तित कर दें। आप नवीन सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं जो लाभप्रद होंगे। आप एक से अधिक स्रोतों से धन अर्जित कर सकते हैं। आपको इस समय भू–संपत्ति अथवा वाहन की प्राप्ति हो सकती है। आपका गृहस्थ जीवन पर्याप्त सुविधाजनक रहेगा।

२२/१०/२०३८ को शनि गोचर में दशम भाव से एकादश भाव में भ्रमण कर रहा है। तदुपरान्त आपको सब ओर से सुख प्राप्त होने का योग है। आपकी इच्छाएं पूरी हो जाएंगी। आपके मित्र तथा सहयोगी आपके अनुकूल रहेंगे तथा आपके हितसाधन में भी सहयोग दे सकते हैं। आप अचल सम्पत्ति अथवा वाहन प्राप्त कर सकते हैं। आप लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं। सन्तान की ओर से आपको कोई शुभ सूचना प्राप्त होगी। आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ विकार हो सकते हैं जो गंभीर नहीं होंगे।

HOROSCOPES RECOMENDED FOR YOU

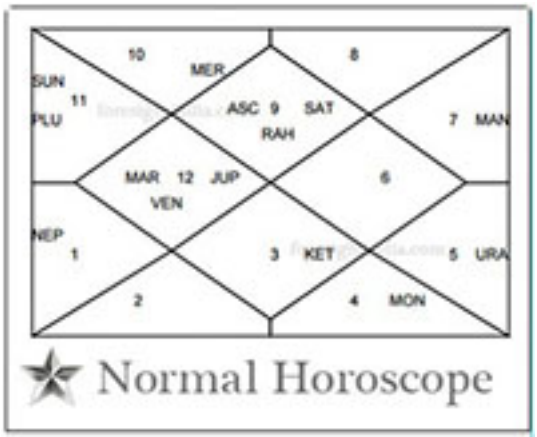

C1 Basic-Horoscope

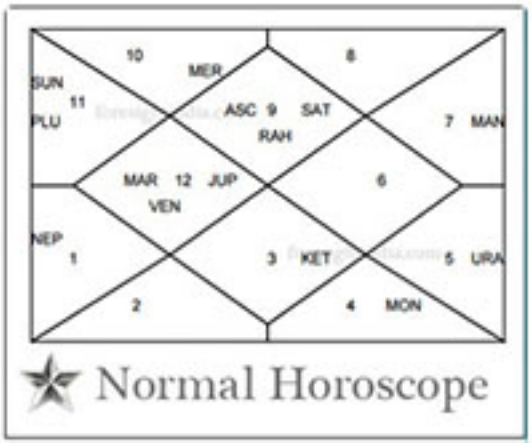

C2 Detailed-Horoscope

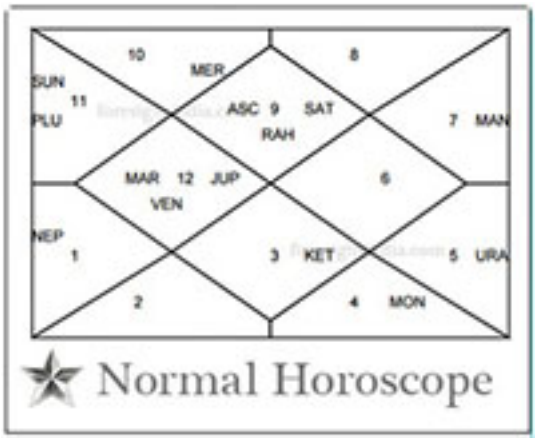

C3 Exhaustive-Horoscope

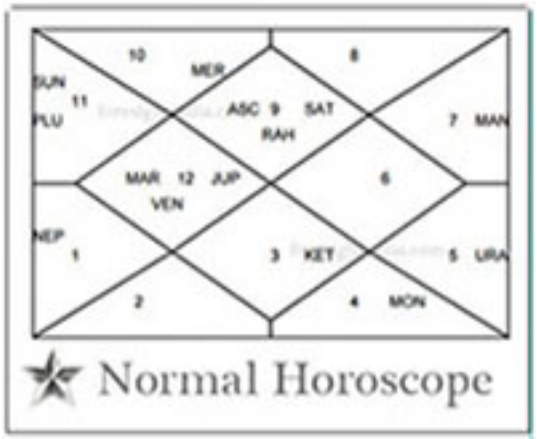

P1 Basic-Prediction

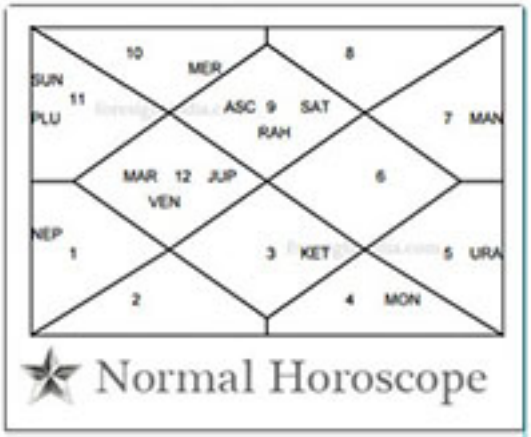

P2 Detailed-Prediction

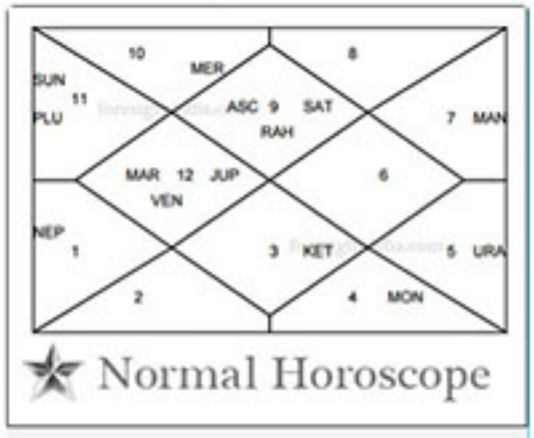

P3 Exhaustive-Prediction